डायरीके कुछ पन्ने

—दूसरी गोलमेज-परिषद्में गांधीजी के साथ-

लेखक

घनश्यामदास बिड़ला

१९५८

सत्साहित्य प्रकाशन

प्रकाशक
मार्तंड उपाध्याय,
मंत्री, सस्ता साहित्य मंडल
नई दिल्ली

पांचवी बार : १९५८
मूल्य
एक रुपया

मुद्रक
नशनल प्रिंटिंग वर्क्स,
दिल्ली

प्रकाशकीय

भारतीय वाणिज्य-व्यापार की प्रमुख प्रतिनिधि-संस्था के एक प्रतिनिधि के रूप में प्रस्तुत पुस्तक के लेखक द्वितीय गोलमेज परिषद् मे भाग लेने लंदन गये थे। उस यात्रा तथा परिषद् का बडा ही सजीव वर्णन उन्होंने इस पुस्तक मे किया है। वस्तुत वह एक ऐतिहासिक यात्रा थी। अत. उससे संबंधित विवरण न केवल रोचक सामग्री प्रदान करते है, अपितु भारतीय स्वातंत्र्य-सग्राम के इतिहास मे एक महत्वपूर्ण अध्याय जोडते है।

सामग्री की दृष्टि से उपादेय तथा शैली की दृष्टि से मनोरजक होने के कारण इस पुस्तक को असाधारण लोकप्रियता प्राप्त हुई है। उसके पाच संस्करण प्रकाशित हो चुके है। पुस्तक की सबसे बडी विशेषता यह है कि इसके तथ्य पुराने होते हुए भी आज भी इसे पढने मे ऐसा नही लगता कि कोई पुरानी चीज पढ़ रहे है।

हमें विश्वास है कि इस नवीन संस्करण का भी वैसा ही आदर होगा जैसा कि पहले के संस्करणों का हुआ है।

—मंत्री

भूमिका

फेडरेशन, जिसका पूरा नाम है Federation of Indian Chambers of Commerce and Industry, भारतीय वाणिज्य-व्यापारकी प्रमुख प्रतिनिधि-संस्था है। भारतीयका अर्थ यहा यह समझना चाहिए—जिसमे पैसा भारतवासियोंका लगता हो और जिसका संचालन भी भारतवासियोके ही हाथमे हो। फेडरेशन एक संघ या महासंघ है, जिससे देशके विभिन्न भागोकी विभिन्न भारतीय व्यापारी संस्थाएं संबद्ध है। डायरी-लेखक श्री घनश्यामदास बिड़ला इसी फेडरेशनके प्रतिनिधि-स्वरूप लंदनकी दूसरी गोलमेज-कान्फ्रेंसमें शरीक हुए थे।

पहली कान्फ्रेंसमें, फेडरेशन अपने १९३०के इस निश्चयके अनुसार कोई भाग न ले सका कि जिस कांफ्रेंसमें महात्मा गांधी नही जाते या जिसे उनका आशीर्वाद प्राप्त नही होता, उससे फेडरेशन बिल्कुल अलग रहेगा। जब गांधी-इर्विन समझौतेसे देशका राजनैतिक वातावरण बदला और महात्माजीके लंदन जानेकी पूरी आशा दीखने लगी तब फेडरेशन दूसरी कांफ्रेंसमे शरीक होनेको तैयार हुआ।

कान्फ्रेंसमे उसको तीन प्रतिनिधि भेजनेका हक हासिल हुआ। वह और भी सीट—डायरी-लेखकके शब्दमे 'कुर्सिया'—चाहता था, मगर लार्ड इर्विनके समझाने-बुझानेपर तीनसे ही संतुष्ट हो गया। अपने इन प्रतिनिधियों के नाम उसने बडे लाटके पास बाकायदा भेज दिये और १४ अप्रैल, १९३१ को उनकी ओरसे इन नामोकी मंजूरी भी आ गई।

मगर जब ४ अगस्तको कांफ्रेंसके मेंबरोंके नाम प्रकाशित हुए तब सबको यह देखकर आश्चर्य हुआ कि फेडरेशनको तीनकी जगह एक ही कुर्सी दी गई थी और सरकारने उसके लिए, फेडरेशनके भेजे हुए नामोमेंसे, सिर्फ सर पुरुषोत्तमदास ठाकुरदासका नाम चुन रखा था।

साफ जाहिर था कि शिमला-शिखरपर इस बीचमें, बड़े लाटतकको

वादा-खिलाफी करानेवाली कोई खास हवा चल गई थी। लदनमें तो यहं सुननेमे आया था कि भारत-मत्रीके दफ्तरके दबावमे पडकर ही भारत-सरकारने यह उलट-फेर किया था। जो हो, फेडरेशनने, ऐसी स्थितिमें कान्फ्रेसमे कोई भी भाग लेनेसे साफ इकार कर दिया। उसने अपने प्रस्तावमे कहा कि हमारी ओरसे जायगे तो तीनो प्रतिनिधि, नही तो एक भी नही। और यह भी ऐलान कर दिया कि फेडरेशनके प्रतिनिधियोकी अनुपस्थितिमें, कान्फ्रेंसमे कोई समझौता हुआ तो वह भारतीय व्यापारी-समाजको मान्य न होगा।

फेडरेशनकी जीत रही। अधिकारियोको अंतमे मजबूर होकर एकको तीन करना पडा और बाकी दो प्रतिनिधियोको भी कुर्सिया देनी पडी। १६ अगस्तको फेडरेशनके तत्कालीन अध्यक्ष सेठ जमाल मुहम्मद साहिबके पास बडे लाटके प्राइवेट सेक्रेटरीका पत्र पहुचा कि आप और श्रीघनश्यामदास बिडला दोनो कान्फ्रेसमे भाग लेनेके लिए निमत्रित किये जाते है। इस प्रकार डायरी-लेखकको लदनमे कुछ दिन गोलमेजके इर्द-गिर्द भी बिताने पडे। यह उनकी दूसरी यूरोप-यात्रा थी, जिसका खास उद्देश्य इंग्लैड होते हुए अमेरिका जाना था। यह यात्रा उन्हे अब कुछ महीनोके लिए स्थगित कर देनी पडी।

कान्फ्रेसमे सरकारने जो चाहा था, वही हुआ। वहां जो दु खदायी दृश्य देखनेमें आये, उनका वर्णन करते हुए लेखकने अपना यह कटु अनुभव प्रकट किया है कि बात बिगाडनेवाले "सब-के-सब सरकार द्वारा मनोनीत" थे। "यदि प्रजा द्वारा मनोनीत किये गये होते तो यह नौबत न आती।" विधान-निर्माणके लिए कास्टीट्युएण्ट असेबली (Constituent Assembly) जैसी संस्थापर अपनी राष्ट्रीय मागमें, इतना जोर क्यो दिया जाता है, यह लेखकका अनुभव सुननेपर सहज ही स्पष्ट हो जाता है।

डायरी-लेखकका जो भाषण कान्फ्रेसके खुले अधिवेशनमे हुआ वह स्पष्टवादितासे भरपूर था। उसमे उन्होने इस बातपर पूरा प्रकाश डाला कि प्रस्तावित आर्थिक प्रतिबध भारतवासियोके लिए असह्य क्यो थे। आमदनीका ८० फी सदीसे अधिक भाग फौजी खर्च, कर्जके सूद आदिके लिए इस प्रकार

अलग कर दिया गया था कि वह भारतके भावी अर्थ-सचिवकी पहुंचसे बिल्कुल बाहर था—उसमे मीन-मेख करनेका उन्हें कोई भी अधिकार न था। कहना चाहिए कि यह सारा हिस्सा खर्चकी इन मदोके लिए 'गिरवी' या 'बंधक' रख दिया गया था। उस भाषणमे इस बातपर काफी जोर था कि इंग्लैंड और हिंदुस्तानके बीच सबसे पहले इस खर्चकी रकमके बारेमें समझौता होकर हिंदुस्तानका बोझ हलका होना चाहिए—गिरवी या बंधकसे इस मुल्ककी आमदनीके मुनासिब हिस्सेको छुटकारा मिलना चाहिए। भाषणके अंतिम शब्द ये थे—"कोई भी सरकार किसी देशकी सम्मतिके बिना उसपर शासन नही कर सकती। अगर अमन-चैन कायम रखना है तो यह जरूरी है कि या तो आप हमारी मर्जीसे हमपर हुकूमत करें, या हमको अपने ऊपर आप हुकमत करने दे। इस हालतमे हम आपके दोस्त और साझीदार हो सकते है। अगर आपने इस मौकेपर हमसे कोई दोस्ताना समझौता न किया तो यह आपकी भयंकरसे भयंकर भूल होगी। मेरे एक अंगरेज दोस्त उस रोज मुझसे कह रहे थे कि '१९३०की गोलमेज कान्फ्रेंसमे न आकर तुम लोगोंने बड़ी भूल की। उस समय मजूर-सरकारकी हमदर्दीसे तुम लोग काफी फायदा उठा सकते थे।' मालूम नही, इसमें कहातक सचाई है? मगर मौजूदा सरकारने यह मौका हाथसे जाने दिया, और हिंदुस्तानके साथ कोई समझौता न किया तो मेरी समझसे यह उसकी बहुत बडी भूल होगी। मैं अपने मुल्कके नौजवानोंको अच्छी तरह जानता हूं। बहुत संभव है कि कुछ वर्ष बाद इंग्लैण्डको महात्मा गांधी या भारतीय नरेशों या मुझ-जैसे पूंजीपतियोंसे समझौता न करके बिल्कुल नये आदमियों से, नई अवस्थाओंसे, नये विचारोंसे, नई आकांक्षाओंसे निपटना पड़े। इंग्लैण्ड को सावधान हो जाना चाहिए।"

लंदनसे लौटनेपर, ब्रिटिश स्वत्वो के संरक्षणके लिए, 'समझौता' चाहने वाले मि० बेंथलने, अंगरेज व्यापारियोंकी एक सभामें, कान्फ्रेंसकी कहानी सुनाते हुए, कुछ ऐसी बाते कही, जिनसे फेडरेशनके प्रतिनिधियोंको बहुत दु:ख और आश्चर्य हुआ। मि० बेंथलके इस भाषणकी जो रिपोर्ट अखबारोंमें

छपी, उसका उनकी ओरसे कोई खडन नही हुआ। इसमें महात्मा गांधीपर कुछ ऐसे दोषारोपण किये गए थे, जिनमें सत्यका लेश भी न था। साथ ही कुछ ऐसी बाते थी, जिन्हें पढकर किसीको भी यह सदेह हो सकता था कि फेडरेशनके प्रतिनिधियों या महात्मा गाधीसे उन्होने लदनमे समझौतेकी जो बातचीत की, वह कूटनीतिमे भले ही शुमार हो, मगर वह चीज न थी जिसका उनकी ओरसे बार-बार विश्वास दिलाया गया था। हम पाठकोका ध्यान डायरीके मि० बेथल-सबधी भागकी ओर आकर्षित करते है।

फेडरेशनके प्रतिनिधियोने अपनी कमेटीको जो रिपोर्ट दी उसमे महात्मा गाधीके सबधमें ये विचार प्रकट किये थे—

"कान्फ्रेसके असफल होनेका दोष महात्मा गांधीके माथे मढ़नेकी चेष्टा की गई है। इससे बढकर कोई झूठा अपवाद या कलंक नही लगाया जा सकता। हमलोगोको लदनमे उनके साथ काम करनेका और उनके विचारोसे अवगत होनेका काफी अवसर मिला। हमलोग अपनी जानकारीसे कह सकते है कि मुनासिब शर्तो पर सुलह या समझौता करनेके लिए महात्माजी बराबर तैयार थे। वह अपनी मागमे नरमसे नरम रहे और समझौतेके लिए उन्होने अपनी ओरसे कुछ भी उठा न रखा। अपने एक भाषणमे उन्होने अपनी शाति-प्रियताका परिचय इन मर्मस्पर्शी शब्दोमे दिया कि 'दिल्लीमे जो समझौता थोडे समयके लिए हुआ था, उसको मै स्थायी शातिके रूपमे परिणत देखना चाहता हूं, मगर ईश्वरके लिए, ६२ वर्षके इस जरा-जीर्ण व्यक्तिको एक मौका तो दो। उसको और काग्रेसको, जिसका वह प्रतिनिधि है, अपने दिलमें कोई छोटा-सा कोना तो बख्शो।' मगर कान्फ्रेसमे यह अरण्यरोदन ही रहा, और मि० बेथलके शब्दोमें महात्माजीको 'खाली हाथ' लौटना पडा।"

डायरी कान्फ्रेसके ऐसे अधिवेशनसे सबध रखती है जो महात्मा गाधीकी उपस्थितिके कारण विश्व-विख्यात हुआ—जिसकी बातोमे भारतवासी-मात्रने खास दिलचस्पी ली। इसके लेखक इसमे वर्णित घटनाओके अत्यंत निकट थे, बल्कि जो कुछ हो रहा था, उसकी भीतरी जानकारी जैसी उनको थी शायद ही किसी दूसरे को रही हो। जिस इतिहासको उन्होने अपनी इस डायरीका

मुख्य विषय बनाया, उसके निर्माणमे उनका अपना ही हाथ था। इनसब कारणोने उनके साक्ष्यमें विशेष प्रामाणिकता ला दी—बराबरके लिए उनके इस बयानको 'काम की चीज' बना दिया।

ऐसी डायरीका प्रकाशन आज इस आशा और विश्वाससे किया जा रहा है कि इसके पन्ने न केवल इतिहासका शोध या अध्ययन करनेवालोके लिए ही उपयोगी होगे, बल्कि उन लोगोंके लिए भी, जिनका विषय वर्तमान या आधुनिक राजनीति है।

—पारसनाथ सिंह

गाधीजी जहाज़ पर चढ रहे है, लेखक तथा श्री पट्टणी के साथ

भूमध्यसागर मे

डायरीके कुछ पन्ने

—दूसरी गोलमेज-परिषद्में गांधीजीके साथ—

एक

२९ अगस्त, '३१

'राजपूताना' जहाज

बंबईमें आज सबेरेसे ही चहल-पहल थी। महात्माजी कुछ कालके लिए भारतवर्षमे न रहेंगे, सबके चेहरेसे यही भाव झलक रहा था। मुझे तो सद्भाग्यसे ही यह सयोग मिल गया है कि जिस बोटसे गांधीजी और मालवीयजी जाते है, उसीसे मै भी जा रहा हूं। जब जहाजमें जगह ली थी, तब तो यह निश्चित था कि महात्माजी आर० टी० सी० मे न जायंगे, किंतु विधिने तो पहलेसे ही निश्चित कर रखा था कि गांधीजीको विलायत जाना है और 'विधिका रचा को मेटनहारा' ?

बंगलेसे चलकर बंदरपर पहुंचा तो फोटो लेनेवाले पागल दर्जनोकी तादादमे मुझपर टूट पड़े। न मालूम कितने प्लेट उन्होने बर्बाद किये। पच्चीससे कम तो न थे। स्वदेशी धनको विदेश इस तरह भेजा जाता है! आखिर मेरे फोटोकी कीमत ?

जहाजपर सवार होनेके थोड़ी ही देर वाद महात्मा गांधीकी जयध्वनिसे आकाश गूंज उठा। वस, सब लोग समझ गये कि गांधीजी आ रहे है। सारे जहाजमे चहल-पहल मच गई। क्या हिंदुस्तानी, क्या अगरेज, स्त्री-पुरुप दौड़-दौड़कर मौकेके स्थानपर कब्जा जमाने लगे। बंदरसे आधी मीलकी दूरी तकके सभी मकानोकी छते खचाखच भरी थी। चारों ओरसे जय-जय !

जहाजके ऊपर पहुंचनेमें महात्माजीको काफी कष्ट हुआ। मगर अंगरेज मल्लाहोंने किसी तरह हाथोंकी बाड़ बनाकर ऊपरतक पहुंचाया और सुरक्षित स्थानमें खड़ा कर दिया। वहींसे किनारेके लोगोंको महात्माजी दर्शन देते रहे। क्या विचित्र दृश्य था! आर० टी० सी० में जो लोग पहले गये थे वे जनताके प्रतिनिधि है, या एक मन वजनका दुबले-पतले शरीरवाला गांधी प्रतिनिधि है, इस बातकी गवाही लोगोका भाव दे रहा था। इतनेमे ही थोड़ी-थोड़ी वर्षा भी होने लगी। मानों इंद्र भी विदाईके आंसू बहा रहा था। किंतु लोग अपनी जगहसे न हटे। जहाजका घंटा हुआ। फिर दूसरा घंटा हुआ। तीसरा घंटा हो जानेपर लोगोंको स्मरण हुआ कि आखिर हमें जहाजसे उतरना है। वे किनारे उतरे, मगर आंखें सबकी गांधीजीकी ओर लगी थी। वल्लभभाईके चेहरेपर विषाद था। जवाहरलालजीके चेहरेपर मुस्कराहट। पंडितजी अभी पहुंचे भी न थे। सब लोग पूछते थे—"मालवीयजी अभी नही आये?" आखिर ऐन मौकेपर पहुंचे।

जहाजने लंगर उठाया और धीरे-धीरे सरका, तब कही पता लगा कि हम लोग जानेवाले है। रामेश्वर, ब्रजमोहन रूमाल हिला-हिलाकर संकेत कर रहे थे। पर मैं तो विचित्र दशामे गोते खा रहा था। एक छोटे-से दुबले-पतले आदमीने लोगोंको कैसा मोहित कर लिया है, इसीपर विचार कर रहा था। किंतु जहाज चलने लगा तो याद पड़ा कि जा रहा हूं। ज्यों-ज्यों जहाज और किनारेके बीचका अंतराय बढ़ता गया, त्यो-त्यों मन तेजीके साथ किनारेकी ओर दौड़ लगाने लगा। शायद किनारेके लोगोंकी भी यही हालत थी। आखिर आंखोंने काम देना बंद कर दिया और लोगोको पहचानना भी मुश्किल हो गया। तब कानोंसे जयनाद सुनते रहे। अंतमें तो समुद्रका खूं खूं रह गया। हिंदुस्तानका तो अब नामोनिशान भी नही। चारों तरफ पानी-ही-पानी है और उसके बीच हमारी छोटी-सी दुनिया—"राजपूताना" जहाज!

हिंदुस्तानके हृदय-सम्राट्की ऐतिहासिक यात्राका यह दृश्य सचमुच हृदय पिघलानेवाला है।

दो

३० अगस्त, '३१
'राजपूताना' जहाज

जहाजपर मर्य्यादा प्रायः भंग हो गई है। १९२७में मैं आया था तो कपड़ोका स्वांग रचना पड़ता था। रातके कपडे, दिनके कपड़े, पूरा झमेला था। घंटा भर तो प्राय. कपडे बदलनेमें ही लगता था। धोती-कुर्ता पहनना तो मानो गुनाह था। अबकी बेर यह हाल है कि धोती-कुर्तेवाले जहाजपर बेखटके फिरते हैं। न तो कोई पूछनेवाला है, न किसीको संकोच है। मुझे अब मालूम होने लगा है कि अपने धोती-कुर्ते छोड आया, यह गलती हुई। जहाजके मुसाफिर, कप्तान वगैरह भी धोती-कुर्तों को बर्दाश्त कर लेते हैं। यों तो उन्हे बुरा ही लगता होगा, पर शिमलेका आदेश है कि गांधीके आरामका ध्यान रखो, इसलिए सबकुछ बर्दाश्त कर लेते हैं।

पंडितजीके लिए चूल्हा अलग बन गया है। गंगाजल भी साथ है। मिट्टीका कनस्तर, स्वदेशी साबुन, दातौनोका बडा-सा बंडल। उधर गांधीजीका चर्खा, पीजन, बडी-बड़ी विचित्र चीजे साथ चल रही हैं। जहाजवाले भी देखते है कि यह शिवजीकी बरात अच्छी आई। आते-जाते तिरछी नजर डाल जाते है, पर ऊपर से पूरा अदब दिखाते हैं।

जहाज चलते ही गांधीजीने अपना असबाब संभालना शुरू किया। इस ट्रंकमे क्या है? उसमे क्या है? यह पूछताछ शुरू हुई। बेचारी मीराबेन तो झट समझ गईं कि तूफान आनेवाला है। महादेव और देवदास तो बंबई गांधीजीके साथ ही पहुंचे थे। इसलिए सारे प्रबंधका भार मीराबेनके ऊपर ही था। और जहां

गांधीजीने हिसाब पूछना शुरू किया, मीरा समझ गई कि खैर नही है। पहलेपहल तो गांधीजीने पूछा, इस ट्रकमे क्या है? मीराने कहा—वापू, इसमें आपके कपड़े है। गांधीजीने कहा—मेरे कपड़े है? इतने बड़े ट्रंकमें? मीराने कहा—लेकिन यह भरा हुआ नही है। गांधीजी—हां, तो तुम इसे भर देना चाहती थीं, यह नहीं सोचा कि हिंदुस्तानमें तो मेरे कपड़े बिना ट्रंकके ही चलते थे।

मीराने ट्रंक खोलकर सामग्रियां सामने रखीं तो गांधीजीका चेहरा लाल हो गया। सामान ज्यादा न था, किंतु एक भी पैसा अधिक खर्च हो, यह गांधीजीको असह्य था। पेटियां सारी मंगनीमे लाई गई थी, किंतु गांधीजीको संतोष न हुआ। पूरा घंटा तो उन्हें अपनी मंडलीको धमकानेमे ही लगा। अंतमे तय यह हुआ कि थोड़ा-सा सामान छोड़कर बाकी अदनसे वापस कर दिया जाय। गांधीजी बोले—"आज तो मै इस सामानको देखकर घबरा गया हूं। कागज रखनेके लिए भी यह लोग पेटी लाये है, मानो मै अब पुरानी आदतोंको छोड़नेवाला हूं।"

पांच बजे अपने बैठनेका स्थान चुननेके लिए गांधीजी छतपर आये। मैंने कहा—"जहाजका अंतिम हिस्सा तो बहुत हिलता है, इसलिए काफी कष्टप्रद है। एक मिनिट भी मुझसे तो यहां खड़ा नही रहा जाता, इसलिए इसे देखना ही फिजूल है। जहाजके बीचका हिस्सा ही देख लें।" गांधीजी कहने लगे कि इसको भी तो देख ले और मेरे लाख विरोध करनेपर भी जहाजके अंतिम हिस्सेका एक खतरनाक कोना पसंद किया। मै तो हक्का-बक्का-सा रह गया। क्या कोई समझदार मनुष्य ऐसी तकलीफसे भरी हुई निकम्मी जगह पसंद कर सकता है? किंतु—"यस्यां जाग्रति भूतानि सा निशा पश्यतो मुनेः"।

गांधीजीकी विचार-शृंखला यह थी कि जो स्थान अच्छा है, वहां हमारे बैठनेसे किसीको कष्ट हो सकता है, अच्छे स्थानमें एकांत भी संभव नहीं—इसलिए यह बुरा स्थान ही हमारे लिए

अच्छा है। मैंने कप्तानतक दौड़-धूप की, उनका विचार बदले, इसकी काफी कोशिश की। पर "हजरते दाग जहां बैठ गये बैठ गये!" गांधीजी तो टस-से-मस भी न हुए। आखिर पडितजीने अपना जोर आजमाना शुरू किया। उन्होने आग्रह किया कि गांधीजी फर्स्टका टिकट बदला ले। सध्या-समय घूमते-घूमते मैंने भी थोड़ा आग्रह किया। गाधीजीने पूछा—तुम क्यों आग्रह करने लगे? मैंने कहा—आपने टिकट तो सेकडका लिया है। किंतु आपकी प्रतिष्ठाके कारण फर्स्टके तमाम हक आपको स्वतः मिल जायगे। फर्स्टकी छतपर कनात लगाकर आपके लिए प्रार्थना-घर बनवा दिया है, क्या यह उचित नही कि आप फर्स्टके पैसे ही दे दें? गाधीजीने कहा—नही, इस दलीलसे तो यह सार निकलता है कि हम फर्स्टके तमाम हकोंको स्वयं त्याग दें। नतीजा यह हुआ कि गाधीजीने फर्स्टकी छतपर घूमना उसी समय बद कर दिया। प्रार्थनाकी कनात तो एक ही दिन काम आई। आज तो उन्होंने प्रार्थना अपने निकम्मे स्थानपर ही की।

प्रार्थना करते समय जहां गाधीजी ध्यान करते थे, वहा मै यह सोचता था कि भगवन्, प्रार्थना समाप्त हो तो यहासे उठू। बैठनेवाले दो मिनिटमे ही आधे बीमार हो जाते है। वमन नही हुआ, यह खैरियत है। कहते है जहा चाद-सूरजकी गति नही है, वहां भगवान् विराजते है। हमारे जहाजके बारेमे यह कुछ अशमे कहा जा सकता है कि जहां भले आदमियोंकी होश-हवासके साथ गति नही है, वहा गांधीजी विराजते है। कोई मिलनेवाला जाता है, तो एक मिनिटसे ज्यादा रुकना भी पसंद नही करता। बंबईसे चलते ही समुद्र तूफानी हो गया। इसलिए गांधीजीका स्थान ऐसा रहता है, जैसे हिंदुस्तानका डोलर-हिडा।

तीन

३१ अगस्त, '३१
'राजपूताना' जहाज

पंडितजीकी भी बात सुनिए। आज तीसरा दिन है, पर पंडितजीकी प्रायः एकादशी ही चलती है! बात यह है कि पंडितजीका रसोइया बीमार है और आटे-सीधेके बक्सका कहीं पता नही। पंडितजीसे लाख प्रार्थना की कि महाराज, बोटका चावल-आटा लेना बुरी बात नही है, किंतु पंडितजी कहते हैं कि भूख लगेगी तब ले लेंगे, अभी भूख नही लगी है, तबीयत सुधर रही है। परसों और कल तो थोड़ा-थोड़ा दूध ही लिया। सामानकी पेटीके लिए सारा जहाज छान डाला, किंतु वह भी ऐसी गायब हुई कि न पूछिए। पंडितजी खुद तो खाते नहीं, अपने रसोइयेसे कहते हैं—बैजनाथ! थोड़ा खा लो। बैजनाथ क्या खाये? पेटी तो ब्रह्मलोक चली गई, जहाजका सामान अभीतक पंडितजीने लेना स्वीकार नही किया। पर आज पंडित-जीको मना लिया है और जहाजके सामानसे रसोई बनेगी। पंडितजी कुछ कमजोर हो गये है, लेकिन वैसे प्रसन्न हैं। समुद्रके तूफानके कारण दो दिन कुछ व्यथित रहे। समुद्र कुछ शांत हो रहा है। शामको रसोई भी बनेगी।

पंडितजीने आनेमें काफी कष्ट उठाया है। पंडितजीकी प्रकृतिके मनुष्यको ऐसे सफरमें बहुत कष्ट है, किंतु देशके लिए पंडितजी सबकुछ सहन कर लेते है। सच पूछिए तो पंडितजीकी दृष्टिमे यह जहाज नरक है, इंगलिस्तान रौरव है। आज कहते थे—तुमने अच्छी-सी केबिन मेरे लिए सुरक्षित की, किंतु वह है तो केबिन (कोठरी) ही। यदि स्वदेशका काम न हो, तो पंडितजी ऐसा सफर करनेकी स्वप्नमें भी इच्छा न करें। पंडितजीमें प्रेम और आशावादकी कमी नही। पेटी गायब हो गई, सारा जहाज छान डाला, किंतु पंडितजी अब भी कहते है कि पेटी

जरूर मिलेगी, गायब कैसे हो सकती है? इसका उत्तर मैं क्या दूं?

गोविदजीने कल और आज पेड़ोंसे ही काम चलाया है। रामेश्वरजीने तो कहा था कि पेड़े ज्यादा ले लो, मगर मुझे क्या खबर थी कि ऐसी परिस्थिति उत्पन्न होनेवाली है!

चार

१ सितंबर '३१
'राजपूताना' जहाज,

समुद्र आज बुधवारको शांत हुआ है। सूरजिया तो अब भी बीमार है। पारसनाथजीने आज होश सभाला है। मैने एक वेला भोजन नही किया। गाधीजी मजेसे है। पंडितजीकी रसोई बनने लगी है—जहाज के सामानसे ही। गोविदजीको पेड़ोसे कुछ तकलीफ-सी हुई। महात्माजीकी प्रार्थना रोज सुबह-शाम होती है। हिंदुस्तानी आते है। अंगरेज दूरसे ही नजर बचाके देखते रहते है। आज रातको अदन पहुंच जायगे। पडितजी कहते थे कि "जहाज कैदखाना है। देखो, कैसी लीला है! हम पैसे भी देते है और कैदमें भी रहते है।" कल बेचैन होकर कहने लगे—

सीतापति रघुनाथजी, तुम लगि मेरी दौर;
जैसे काग जहाजको सूझत और न ठौर।

और ठौर यहां कहा सूझे!

पांच

३ सितंबर, '३१
'राजपूताना' जहाज

अदन अभी छोड़ा है। अदनमे महात्माजीका खूब स्वागत-सत्कार हुआ। संमानपत्र दिया गया; उन्होंने जवाब दिया। स्पीच हिंदुस्तानके अखबारोंमें छपी होगी। महात्माजीको ३२५ गिनी

भेंट की गई। सत्कारमें अरब, यहूदी, हिंदुस्तानी सभी शामिल थे। हजारों आदमियोंकी कतार रास्तेमें खड़ी हो गई, जो अपनी अरबी भाषामें सत्कार-सूचक नारे लगा रही थी। जिस गाड़ीमें महात्माजी थे, उसमें सरोजिनी नायडू, सर प्रभाशंकर पट्टणी और मैं था। कोई-कोई अरबी तो पट्टणीजीको ही गांधीजी समझ बैठते थे, क्योंकि पट्टणीजीकी सफेद दाढी, सफेद अंगरखा, सफेद साफा सचमुच महात्मापन-सा ला देता है। मीटिंगमें भी एक हजार मनुष्य थे। अधिकतर हिंदुस्तानी ही थे।

पंडितजीके लिए यहांसे आटा-सीधा और दो घड़े पानीके ले लिये गये हैं। हम लोगोंने मजाक किया कि पंडितजीके गंगाजलके घड़े अब अरबके पानी से भरे जायंगे, और अरबका पानी पीकर पंडितजीको शौकतअलीका साथ देना होगा। किंतु पंडितजी कहते हैं कि पानीका विष सुबह-शामकी संध्यासे धो डालूंगा !

× × ×

महात्माजी लंदन पहुंचते ही क्या करेंगे, यह जाननेकी सबको उत्सुकता है। आर० टी० सी० में करीब १०० मेंबर हो गये। ऐरे-गैरे नत्थू-खैरे, सभी इसमें शामिल हैं। यह हिंदुस्तानके प्रतिनिधियोंकी कांफ्रेंस तो है नहीं, गांधीजीको छोड़ प्रतिनिधि कहे जानेवाले सज्जन सारे-के-सारे मनोनीत हैं, चुने हुए नहीं। कुछ अच्छे हैं, तो बहुतसे रद्दी हैं। असलमें तो यह सब-के-सब सरकारके प्रतिनिधि हैं। ऐसी हालतमें अकेले गांधीजी क्या कर सकेंगे? और बहुसमें भी सरकारी हां-में-हां मिलानेवाले खैरख्वाहोंकी आर० टी० सी० में कहां कमी है? ऐसी अवस्थामें वहांके लोग सहज ही कह सकते हैं—गांधीजी, आप ठीक कहते हैं, मगर आपके मुल्कके लोग सहमत नहीं है,—इसलिए आपकी बात कैसे मान ली जाय ?

ऐसी स्थिति अवश्य ही समयकी बरबादी करनेवाली होगी। न कुछ काम ही बनेगा। इसलिए निश्चय ही गांधीजी ऐसे झमेलेमें न पड़ेंगे। "गढ़ां राजा मढ़ां जोगी!" जबतक गांधीजी भी अपनी

मढ़ीमें बात न करेंगे तबतक कोई सुननेवाला नहीं। इसलिए विचार इस तरहसे है कि आर० टी० सी० तो हाथीके दांतकी तरह शोभा बढ़ाती रहे और गांधीजी खानेके दांतकी तरह मंत्रि-मंडल एवं वहांके नेताओंसे अलग मंत्रणा करें, उन्हें यहांकी हालत समझावें, वहांकी जनताको उकसावे और इस तरह किसी निर्णयपर पहुंचे। यदि वहांका मंत्रिमंडल अलग बात करनेकी इच्छा प्रकट न करे, तो गांधीजी फेडरल कमेटीमें अपना वक्तव्य सुना देंगे और कहेंगे, मुझसे बहस करनी हो तो करो। इतनेपर भी यदि गांधीजीको सब धान बाईस पसेरी बनानेकी चाल रही तो गांधीजी तुरंत ही वापस चले आयंगे।

मेरा अपना मत है कि जाते ही गांधीजी वापस आनेका निर्णय सुना देंगे। मंत्रिमंडल गांधीजीसे अलग मंत्रणा करेगा और शेषमें गांधीजी ही आर० टी० सी० बन जायंगे।

× × ×

फेडरेशनकी ओरसे सरकार सर पुरुषोत्तमदासको और मुझको मनोनीत करना चाहती है, ऐसा गांधीजीसे शिमलेमें कहा गया। मैंने सर पुरुषोत्तमदाससे बंबईमें ही कह दिया था कि या तो तीनों जायंगे या बिल्कुल न जायंगे। गांधीजीने बंबई पहुंचते ही वाइसरायको एक जोरदार चिट्ठी लिखी है। मेरा खयाल है कि गांधीजीके पैर जम गये तो तीनों बुला लिये जायंगे। वर्ना एक भी नही।

छह

४ सितंबर, '३१
'राजपूताना' जहाज

कल गांधीजीने फिर आर० टी० सी० के कामके संबंधमें चर्चा छेड़ी। मैंने आश्चर्य प्रकट किया कि "सरकार आपको क्या समझकर बुला रही है? आप क्या मांगनेवाले हैं, यह तो

सरकार जानती है। करांचीका प्रस्ताव भी सामने है। फिर भी आपको बुलाती है, इसके यह माने है कि आपकी मांग पूरी होनेवाली है।" गांधीजीने कहा, "मैने तो कोई बात छिपाकर नहीं रखी है। इर्विनसे समझौता हो चुका, उसके बाद रात ८ बजे इर्विनसे मैने कहा, 'देखो, मुझसे समझौता करते ही मुझे लंदन क्यों भेजते हो? मेरी मांग तो जानते हो। यह तुमसे पूरी होनेवाली नही है, इसलिए मुझे भेजनेसे फायदा?' इर्विनने कहा कि तुम्हारी मांग कुछ भी हो, तुम न्याय-मार्गपर ही चलोगे, ऐसा मानकर तुमसे जानेका आग्रह करता हूं।" फिर मैने चर्चा छेड़ी कि हां, मांग किस तरह रखी जाय। गांधीजीने कहा, "ग्रामीणकी तरह सीधी-सादी भाषामें। यदि वहां कोई लंबी-चौड़ी बातें करेगा, राजबंधारणकी बारीकियोंकी बहस करेगा, तो मैं कह दूंगा कि मैं तो मूर्ख हूं, ये बातें नही समझता। किंतु मैं फलां-फलां बात चाहता हूं और मुझे ये दे दो। यदि मेरी बात कोई सुनना नही चाहेगा तो मै कह दूगा, मुझको क्यों बैठाके रखते हो, वापस हिंदुस्तान भेज दो।" मैने पूछा—वापस आनेके पहले आप वहां सार्वजनिक व्याख्यान तो देंगे ही? महात्माजीने कहा—"वह भी मैकडानल्ड या बाल्डविन चाहेगा तो ही, नही तो बंदमुंह वापस चला जाऊंगा। मेरा स्वभाव यही है कि जिसके यहां रहना, उसका गुलाम बनकर रहना। आखिर उनका मेहमान बनके जाता हूं और जबतक वहां रहूंगा, उनको क्षोभ हो, ऐसा कोई काम नही करना चाहता।" फौज और अंगरेज व्यापारियोंके स्वत्वोंके बारेमे भी काफी बहस हुई। हर बात इनकी निराली है। हम लोग हर बातको सांसारिक दृष्टिसे देखते है। यह तात्त्विक और धार्मिक दृष्टिसे देखते है। १००-२०० साल भी लग जायं तो चिंता नही, किंतु स्वराज्य नही, रामराज्य ही चाहिए। बारीकीके साथ अध्ययन करता हूं, तो ऐसा पता चलता है कि इनकी मांग जितनी ही बड़ी हो, उतनी ही उसमें कमी करनेके लिए गुंजाइश है। समझानेके लिए यों कहना चाहिए कि १ मन

गाधीजी जहाज़ के कप्तान के साथ

जहाज पर गांधीजी : नवाब भोपाल के साथ

मक्खन निकाले हुए दूधकी अपेक्षा यह १ सेर मक्खनवाला दूध लेना पसंद करेंगे । तादाद शायद घटा देंगे, किंतु किस्म नहीं घटायंगे । मैंने कहा कि अध्ययन कर लीजिए, नही तो कही बात विगड़ जायगी । किंतु गांधीजी कहते हैं कि "आर० टी० सी० में अवतक क्या हुआ, यह मैंने आजतक नहीं पढ़ा है, अव पढ़ लूंगा । विद्या मेरा वल नही है, न मुझे वहस करनी है । मुझे तो अपना दुःख रोना है, इसमे विद्वत्ताकी कौन-सी वात है ?" यह है भी सच, क्योकि रोना और हँसना स्वाभाविक होता है। रोनेमे विद्वत्ता नाटकवाले ही दिखाते है। गांधीजी तो स्वाभाविक रुदन करना चाहते है ।

इधर पंडितजी मुझसे कहते है कि अमुक विषयका अध्ययन करो, अमुक इतिहासको देख लो, अंगरेजोंकी करेंसी-नीतिका इतिहास तैयार कर लो। मालवीयजी अनेक अस्त्र-शस्त्रोंसे लड़ेंगे, गांधीजी केवल एक ही वाणसे। मालवीयजी कहते है, वहां प्रचार-कार्य करेंगे । गाधीजी कहते है, प्रचार भी हमारे दुश्मनोंकी आज्ञा होगी, तभी करेंगे । विल्कुल नया ढंग, नया विचार, नया तरीका है। मुझे ऐसा मालूम होता है कि लंदनवाले भी अचरज करेंगे कि कैसे आदमीसे पाला पड़ा है !

कल लिखते-लिखते गांधीजीका दाहिना हाथ विल्कुल वेकार हो गया। अब वायेंसे लिखते है। रोज छ. मील घूम लेते है। दूध १ सेर लेने लग गये है। गांधीजी कहते थे, चर्चिलसे लंदनमे अवश्य मिलना है, क्योंकि वह दुश्मनी रखता है, गालियां देता है। 'वर्नार्ड शॉसे मिलेंगे क्या ?' यह पूछनेपर कहा कि उससे क्या मिलेंगे !

सात

५ सितंबर, '३१
'राजपूताना' जहाज

भोपालने महात्माजीको वुलाकर कहा कि हिंदू-मुसलमान-

समस्या सुलझानेके लिए आप पृथक् निर्वाचन स्वीकार कर लें। महात्माजीने कहा कि न तो मुझे पृथक् निर्वाचनसे शिकायत है, न संयुक्त निर्वाचनका मोह है, किंतु मै अंसारीके बिना कुछ भी न करूंगा। कहते थे नवाबको यह बुरा-सा लगा। गांधीजीने कहा कि, अपने मित्रोंसे मै हर्गिज बेवफाई नहीं करूंगा। अंसारीके पीठ-पीछे मै कोई निर्णय नही करना चाहता। भोपालने कहा कि अंसारीको कैसे बुलावे ? महात्माजीने कहा कि लंदन जाकर उद्योग करो, मैं तो कर ही रहा हूं।

दो घंटेतक फिर मेरे और महात्माजीके बीच निजी व राजनैतिक बातें हुई। मेरा यह तो अनुमान है कि महात्माजीकी मांग तो पूरी होनेवाली नही है, किंतु इतना मिल जायगा, जिससे अन्य लोग संतुष्ट हो जायं। महात्माजी कहते हैं, यह भी अच्छा है। कहते थे, मेरी दूसरी लड़ाई जमीदारों, धनिकों व राजाओंसे होगी, किंतु वह लड़ाई मीठी होगी।

रातकी प्रार्थनामे अंगरेज भी आते है। अधिक नही सिर्फ ५–७। एक मुसलमानने पूछा—"प्रार्थनासे फायदा ?" महात्माजीने कहा—"मुझमें कुछ अक्ल मानते हो, तो समझ लो कि लाभके लिए ही प्रार्थना करता हूं।" महात्माजीने बताया कि उन्हे न ईश्वरमे विश्वास था, न प्रार्थनामें और पीछे उनको इसका ज्ञान हुआ। अब यह हाल है कि उनके शब्दोंमें "मुझे रोटी न मिले तो मै व्याकुल नही होता, पर प्रार्थनाके विना तो पागल हो जाऊं।" उन्होंने कहा कि "मेरा सारा-का-सारा जीवन प्रार्थनामय ही है और इसका सुख इस मार्गमें जानेसे ही अनुभव हो सकता है। बुद्ध, ईसा, मुहम्मद तीनोंने प्रार्थनाकी सार्थकता स्वीकार की है। मै ईश्वरका दर्शन नही करा सकता। ईश्वर अनुभवमय है, इसलिए अनुभवसे ही जाना जा सकता है। प्रार्थना द्वारा उसका अनुभव होता है। जो अनुभव लेना चाहता है, जिसे शांतिकी आवश्यकता है, वह प्रार्थना करे।"

आठ

६ सितंबर, '३१
'राजपूताना' जहाज

आज रविवारको जहाजके गिर्जेमें प्रार्थना थी। कप्तानने महात्माजीको न्यौता दिया था। पडितजी और हम भी गये थे। भजन, ध्यान, गुणगान होता रहा। पडितजीका हाथमें बाइबिल लेकर ईसाइयोंके साथ ध्यानावस्थित होना विशेषतापूर्ण था। पंडितजीको जो कोई लकीरका फकीर बताता है, वह मूर्ख है। पंडितजी अरबका पानी पी सकते है, गिर्जेमें प्रार्थना कर सकते है, फिर भी परम सनातनी है, क्योंकि उनके हृदयमे ईश्वर विराजमान है। जो हो, पडितजीका बाइबिल हाथमे लिये हुए ध्यानमग्न होना, यह दर्शन दुर्लभ है।

गाधीजीको कप्तान ऊपर ले गया और वहां जहाजका संचालक चक्कर उनके हाथमे देकर उनसे जहाज चलवाता रहा। किसीने मजाकमे कहा कि हिंदुस्तानके जहाजका गांधीजी संचालन कर रहे है।

स्वेज और पोर्ट सईदमे अरब लोग आयेगे और गांधीजीका सत्कार होगा। स्वेजमे प्रवेश होते ही जाड़ा शुरू हो गया। कल तक तो बेहद गर्मी थी।

नौ

७ सितंबर, '३१
'राजपूताना' जहाज

स्वेज नहर पहुंचनेपर काफी चहल-पहल मच गई। जहाजपर मुसाफिरोंकी डाक्टरी परीक्षा ली गई। परीक्षाका तो केवल नाम था। डाक्टर मिश्र-सरकारकी ओरसे आया था, वह मुसाफिरोंको केवल देख लेता था और पास कर देता था। अंतमें गांधीजीकी पार्टी आई तो डाक्टर उठ खड़ा हुआ और हाथ मिला-

कर कहने लगा कि मेरी इस किताबमें आप अपने हाथसे दो शब्द लिख दें। इस तरह गांधीजीकी शारीरिक परीक्षा समाप्त हुई। इसके बाद जहाजपर मिश्रके राष्ट्रीय नेता, अखबारनवीस, फोटोग्राफर पहुंचे। प्रायः लोग गांधीजीसे हाथ मिलाकर उनके हाथ चूमते जाते थे। जहाजपर बड़ी भीड़ होगई। जहाज छूटनेका समय आया, तब बड़ी मुश्किलसे लोगोंको किनारे उतारा। चित्र उतारनेवालोंने तो ज्यादती शुरू करदी। एक क्षण गांधीजीको आरामसे नहीं बैठने दिया। जिधर मुंह फेरें, उधर ही चित्रवाले अपना चित्रयंत्र लिये झपटनेको तैयार। कम-से-कम २००-३०० चित्र लिये होंगे। लंदनके 'डेली टेलीग्राफ' का प्रतिनिधि भी आया था। उसने भी बहुत-से प्रश्न किये। अंतमें जहाज चला। कुछ प्रतिनिधि तो साथ हो लिये, जो रातभर सफर कर सुवह पोर्टसईदमें उतरे।

रातकी प्रार्थनाके समय मिश्रके बहुत-से प्रतिनिधि प्रार्थनामें भी शरीक हुए। एक जर्मनने अहिंसाके संबंधमें महात्माजीसे प्रवचन करनेको कहा, जिसपर महात्माजीने आध घंटेतक अत्यंत सुंदर प्रवचन किया। मिश्रवाले उसे अपनी भाषामें लिखते जाते थे। जवतक महात्माजी सो न गये तवतक महात्माजी की हर वातको, हर क्रियाको मिश्रवाले नोट करते रहे। मैंने उनसे मिश्रका हाल पूछा। मालूम हुआ कि मै पिछली वार आया था उसके वाद उन्होंने कोई उन्नति नही की है। दृढ़, निःस्वार्थ नेताओंकी कमी है, तो भी नहासपाशाका काफी आदर है। नहासपाशाने महात्माजीको प्रेम-भरा स्वागतका एक तार भी भेजा है और लौटती वेर काहिरा पधारनेकी प्रार्थना की है।

सुवह पोर्ट सईदमें भी काफी लोग आये। शौकतअली पिछले जहाजसे उतरकर मिश्रमें और फिलस्तीनमे भ्रमण कर रहे थे। वह भी हमारे जहाजमे आज सवार हो गये हैं। सुना है कि वह मुस्लिम मुल्कोंमे मुसलमानोंका संगठन करनेके लिए दौरा करने गये थे। गांधीजीसे [illegible] मुसलमानोंके साथ

ऐक्य स्थापित करनेका प्रयत्न किया। मिश्रवाले कहते थे कि इनका कही स्वागत नही हुआ। नहासपाशाने तो कुछ खरी बाते भी सुना दी। इस तरफके मुसलमान राष्ट्रवादी है। मजहबी पागलपन उनमें नही है। इसलिए मौलाना साहबका रंग फीका ही रहा।

पंडितजीके विषयमे यहां छपा है कि पंडितजी कीचड़की एक मटकी लाये है और रोज कीचड़का एक बुत बनाकर पूजा करते है। पीनेका पानी गंगाका आता रहेगा, जिसका कुल खर्च १५,०००) बैठेगा, जो उनके एक धनी मित्रने दिया है।

स्वेजके किनारे-किनारे कही-कही अरब लोगोकी भीड़ मिलती थी जो चिल्लाकर महात्माजीका स्वागत करती थी।

पोर्ट सईदमे लोग महात्माजी के लिए फल-फूल लाये थे, जिनमे ताजा आम और खजूर भी थे। आम उतने स्वादिष्ट नहीं होते, जितने अपने यहा के, किंतु खजूर देखनेमे अत्यत सुंदर थे—खानेमे भी होगे।

दस

९ सितंबर, '३१
'राजपूताना' जहाज

अभी-अभी मौलाना मुझसे बाते कर गये है। मैंने पूछा कि जनाबकी सेहतका क्या हाल है ? कहने लगे—"जिदा तो हूं।" मैंने कहा कि "आप आ गये यह खुशनसीबी है। अब लदन पहुचनेसे पहले इस झमेलेको तय कर लीजिये; वर्ना दोनों कौमोकी बरबादी होनेवाली है।" मौलानाने कहा—"छोटा-सा मसला है, गांधीजीके हाथमे है।" मैंने कहा कि "सब कुछ आपके हाथमे है। नवाबसाहव भी साथ है, अंसारीको बुलवा ले और बैठकर तसफिया कर ले।" पर होना-जाना कुछ है नही।

भोपालने फिर गांधीजीको बुलवाया। शौकतअली भी मौजूद थे। ४ घटे तक बातचीत हुई, पर कोई नतीजा न निकला। महात्माजीने पूछा कि तुम जो कुछ कहते हो उसे मै मान भी लूं,

तो तुम्हारा रुख लंदनमें राष्ट्रीय मांगोंके प्रति क्या होगा ? शौकत-अलीने कहा कि मैं तो सरकारका ही साथ दूंगा।

दूसरे दिन मालवीयजी को भी भोपालने बुलवाया। आर० टी० सी० में मालवीयजीका क्या रुख रहेगा, इसीकी चर्चा थी। पंडितजीने कह दिया कि "जीवन-मरणका प्रश्न है, मैं लंदन इसलिए नही आया कि पौने सोलह आना लेकर जाऊं। गांधीजीका हर्गिज साथ न छोडूंगा।" भोपालने कहा—"फिर तो वात टूटेगी।" पंडितजी ने कहा कि, चाहे जो हो।

लंदनसे एड्रूजका तार आया है कि सरकारकी राय है कि महात्माजी फोकस्टन (लंदनसे ८० मीलपर एक शहर) मे उतरकर वहीसे बजाय रेलके मोटरमे आवें। महात्माजीनेतार दे दिया कि मुझे कोई आपत्ति नही है। लंदनमे बहुत भीड़ होनेकी संभावना है। सरकार नही चाहती कि ऐसा स्वागत हो, इसलिए यह चाल है।

सप्रूका भी तार आया है कि रविवार १३ की रात को आपको प्रधान एवं अन्य प्रतिष्ठित आदमियोंसे मिलना है। महात्माजी कहते थे कि उसी रातको मै तो अपना दांव फेंक दूंगा और फिर आवश्यकता होगी तो दूसरे स्टीमर से ही लौट आऊंगा। उनके स्वागतको रोकनेके लिए उन्हें मोटर द्वारा बुलाया गया है, इससे तो मुझे नीयत साफ नहीं दीखती।

ग्यारह

११ सितंबर, '३१
ट्रेन में

आज सुबह मारसेल्स पहुंचे। वही पुरानी वात है। सैकड़ों चित्र खैंचनेवाले अपने यंत्र लिये और बीसों पत्र-प्रतिनिधि मौजूद थे। स्टीमरपर आनेकी इजाजत नहीं थी, तो भी भीड़ काफी थी। लंदन, अमेरिका, जर्मनी, नारवे आदिके पत्र-प्रतिनिधि खूब

आये थे। सबने भिन्न-भिन्न प्रश्न किये। लंदनवाले तो छिद्रान्वेषण करनेको ही आये थे। खूब झूठी-मूठी खबरें बनाकर भेजते है। मिश्रसे तो एक फौजी अफसरने महात्माजीको एक चोली भेजी है और कहा है कि तुम इसे पहन लो। महात्माजीने उसे रख लिया है।

११ बजे महात्माजी जहाजसे नीचे उतरे और शहरमें फ्रांसके छात्रोने जहां मीटिंग की थी, वहां गये। बीचमें जहां-जहा गाड़ी रुकती, वहां-वहां लोगोकी भीड जमा हो जाती, और 'गाधी चिरजीवी हो' की ध्वनि होती। लोगोको गांधीजीके दर्शनका काफी कौतूहल था। मीटिंगमे बहुत आदमी नही थे। प्रवेश-पत्रके बिना सभा-भवनमे प्रवेश निषिद्ध था, किंतु बाहर खासी भीड थी। यहांके सार्वजनिक उत्सवोंमें चित्र-यंत्रवालों और पत्र-प्रतिनिधियोंकी बहुतायत रहती है। सो यहां भी थी। यों कहना चाहिए कि गांधीजीके रोजके चित्रोंका औसत करीब २०० पड़ जाता है। और १०-१५ पत्र-प्रतिनिधि वक्तव्य ले जाते है।

पत्र यहां व्यापारकी दृष्टिसे ही चलाते है और जो प्रतिनिधि आते है, वे सच्ची ही खबर नही भेजते। झूठ तो प्राय. सभी लिखते है, किंतु जो मित्र है वे भी अच्छी बातें बनाके लिखते है। उदाहरणके लिए एक अमेरिकन पत्र-प्रतिनिधिने हालमे लिखा कि गाधीजी इतने दयालु है कि पासमें रहनेवाली बिल्लियोंको भी साथ मे सुला लेते है। एक अंगरेज पत्रकारने, जो विरोधी दलका है, लिख मारा कि "गाधीजी जहां जाते हैं, अगरेजोंको गालियां देते है। अबतक इनका कही सम्मान नही हुआ, इसलिए इनका चेहरा उतर गया है। क्रोधसे भरे रहते है। विलायती कपड़ोंका ही उपयोग करते है, देशी तो केवल दिखानेके लिए है," इत्यादि, इत्यादि। यह पत्रकार साबरमती-आश्रममे कुछ दिन ठहरा था, वहा इसकी बीमारीमे गांधीजीने अपने हाथसे इसकी सेवा की थी। मारसेल्ससे जब चले तो दसो पत्रकार साथमे ही गाड़ीमे बैठ गये। उनमे यह भी था। गांधीजीने उसे अपने डिब्बेमें

बुलाया और खूब डांटा। वह भी शर्मके मारे वर्फ तो हो गया, पर अपनी आदतसे शायद बाज न आयेगा।

बारह

१२ सितंबर, '३१
लंदन

पेरिस गाड़ी सुबह ६ बजे पहुंची। वहां भी वही भीड़, वही चित्रवाले, वही प्रेस-प्रतिनिधि !

११ बजे गाड़ी बूलों पहुंची। यहांसे इंग्लिश चैनल पार कर हमलोग १ बजे फोकस्टन पहुंचे । वहां भी खूब भीड़ थी, किंतु पुलिसके प्रबंधके कारण कोई जहाज तक पहुंच नही पाता था। यहां दो सरकारी गाड़ियां आई थी । एकमें गांधीजी बैठ गये, एकमें मालवीयजी और मैं। पर पुलिसने ऐसा जाल रचा था कि दोनों गाड़ियोंको शुरूसे ही अलग-अलग रास्तोसे लंदनको रवाना किया।

लंदनके निकट पहुंचनेपर पंडितजीने गाड़ीवानसे कहा कि "मुझे पेशाब करना है, पहले मुझे आर्यभवन ले चलो।" गाड़ीवानने कहा कि "महाशय, मुझे हिदायत है कि सीधे आपको सभास्थलपर ले जाऊं। (पेशाब रास्ते में ही कही करा सकता हूं) मैं आर्यभवन नहीं जा सकता। मुझे ऐसा मालूम हुआ कि हम लोग कैदी है। हमें कैसा स्वराज्य मिलनेवाला है, इसकी कल्पना इस स्वागतसे ही की जा सकती है।

हजारों आदमी विक्टोरिया स्टेशनपर, यह जानते हुए भी कि गांधीजी रेलसे नहीं आयेंगे, जमा थे और यद्यपि वर्षा हो रही थी, फिर भी हजारों आदमी सभा-भवनके बाहर गांधीजीकी बाट जोह रहे थे।

यह जान लेना आवश्यक है कि इंग्लिस्तान भी एक नहीं है। एक इंग्लिस्तान है दीन-दुखियोका, गरीब साधारण जनताका,

दरिद्र-नारायणका—जो गांधीजीका स्वागत कर रहा है; जिसे न हिंदुस्तानसे द्वेष है, न जिसका यहां कोई चलन है। दूसरा इंग्लिस्तान है ठाकुरोंका, जो हुकूमत करते है और जिनके हाथमें सत्ता है। यो कहा जा सकता है कि यदि इस श्रेणीके दस आदमी भारतको स्वराज्य देना चाहे तो दे सकते है। जो गांधीजीका 'हुर्रेहुर्रे' करके स्वागत करते है वे हजारो होने पर भी पंगु है। राज अब भी यहा ठाकुरोका ही है। कहनेके लिए ही मजदूर-पार्टी है और मजदूर-सरकार थी। मजदूर-सरकारने भी जब ची-चपड़ की तो सेठोने उधार देनेसे इंकार कर दिया, जिससे मैकडोनल्ड साहबको होश संभालना पड़ा, 'गांव राम' का स्वागत ठीक है, पर 'ठाकुरो'की नीयत अच्छी नही।

सभाभवनमें १५०० के लगभग आदमी थे, जिनमें ६०० के करीब देशी थे। स्वागताध्यक्षका व्याख्यान अच्छा था, किंतु गांधीजीका भाषण तो अपूर्व था। लोग बिल्कुल मोहित हो गये। बैठे-बैठे हजारों हैट-धारियोंके बीच कमली ओढ़े गाधीजीका प्रवचन ऐसा हुआ मानो अंगरेजोंका ईसामसीह बोल रहा हो। गांधीजीने कहा, "तुम्हारी सरकार इस समय अपने आय-व्ययका हिसाब बराबर कर रही है, इसलिए बड़ी व्यस्त है, किंतु जबतक हमारा हिसाव बराबर न करोगे तबतक तुमने कुछ नही किया, ऐसा समझना होगा। मै देश-भक्त हूं, किंतु मेरी देश-भक्ति जीव-भक्ति है। मै सबका भला चाहता हूं।" इन बातोंपर तालियोकी गड़गड़ाहट हुई।

स्वागतके बाद गांधीजी अपने डेरे गये, जो मजदूर-मुहल्लेमें है। पंडितजी आर्य-भवनमे आ गये। सभा-भवनसे निकले, तो पडितजी गद्‌गद् हो गये थे। एकांतमे मुझसे कहते थे कि "गांधीजीके शरीरकी मुझे बड़ी चिंता है, यह कपड़े नही पहनते, कही इनको कुछ हो न जाय। मै ईश्वरसे प्रार्थना करता हूं कि रोग हो तो मुझे हो, मौत आये तो मुझे आये।" मैने कहा कि पडितजी, आप अपनी ही चिंता करें, इनकी नही। पंडितजी बंबई

छोड़नेके बाद काफी दुर्बल हो गये हैं और ढीले होते जाते हैं। इनके शरीरकी मुझे तो बड़ी चिंता है।

तेरह

१३ सितंबर, '३१
'लंदन'

गांधीजीका स्थान बहुत छोटा है, आराम भी नही है, किंतु लोग प्रेमसे उनकी सेवा कर रहे हैं। विना तनख्वाहके नौकर हैं। अखवारवाले विना पैसे लिये अखबार दे जाते हैं। सैकड़ों आदमी मकानके सामने खड़े जय-जयकार करते रहते हैं।

आज रातको प्रधानमंत्रीसे बातें होंगी और शायद कलतक नाड़ीका पता चल जाय।

चौदह

१५ सितंबर, '३१
'लंदन'

आज शामको भोजनके बाद हम लोग किंग्सले हाल पहुंचे। मुझे खासकर तीन बातोंके संबंधमे महात्माजीका विचार जानना था। पहला प्रश्न तो यह था कि यहांसे हट चलनेकी राय अब होती है क्या ? देवदासने कल टेलीफोन किया था कि बापू कुछ-कुछ स्थान-परिवर्तनके पक्षमे हो चले हैं और संभव है कि आर्य-भवनमे धूनी रमा दे। किंग्सले हाल आना-जाना आसान काम नही है। भारतवासी-मात्र चाहते है कि महात्माजीके और उनके बीच इतनी दूरी न हो। पर स्थान बदलनेके पक्षपाती इससे भी जोरदार दलील पेश करते हैं। किंग्सले हाल एक सार्वजनिक संस्था है। महात्माजीके वहां ठहरनेसे इस संस्थाके कार्यमें विघ्न-बाधा पड़ रही है। कार्यकर्त्ताओंकी संख्या थोड़ी है, उनपर बोझ बहुत भारी आ पड़ा है। अभी उस दिन टेलीफोनपर रहनेवालेकी

ओरसे दबी जबान शिकायत हुई थी कि मुझे सांस लेनेकी भी फुरसत नही मिल रही है। मैंने उस दिन सस्थाकी परिचालिका मिस लेस्टरसे बातें की थीं—अन्य कार्यकर्त्ताओंसे भी कहा था कि हम लोग हाथ बंटानेको तैयार है। पर लेस्टर बराबर यही कहती जाती है कि हमें कोई कष्ट या असुविधा नही है। अगर होगी तो कह देनेमें हमें कुछ भी संकोच न होगा। महात्माजीके लिए इतना ही बस है। उनके सामने और दलीलें भी पेश की गई—लेस्टरकी आपमे पूरी भक्ति है, पर भारतवर्षके राजनैतिक आंदोलनसे उसकी पूरी सहानुभति नही; इस संस्थाके सभी ट्रस्टी आपको उस दृष्टिसे नही देखते जिस दृष्टिसे लेस्टर देखती है, इत्यादि, इत्यादि। पर इनका महात्माजीपर कुछ भी असर न पड़ा। आज मेरे पूछने पर वह कहने लगे:

"आज फिर मेरी लेस्टरसे इस संबंधमें बाते हुई है। मैंने उससे कहा कि मेरे यहां रहनेसे तुम्हारी संस्थाकी किसी प्रकारकी क्षति हो या तुम लोगोको किसी कठिनाईका सामना करना पड़े तो मुझे स्पष्ट बता देना—तुम्हारे और मेरे बीच संकोचका पर्दा नही रहना चाहिए। पर लेस्टरने फिर मुझे विश्वास दिलाया कि 'आपके यहां रहनेसे न तो हम लोगोंको कष्ट है, न हमारी संस्थाके काममें बाधा पड़ रही है, बल्कि आपके रहनेसे इसका खासा उपकार हुआ है। कुछ ऐसे लोग, जो इससे विमुख या हमारे विरोधी हो रहे थे, अब हमारे यहां आने लगे है और हमारा साथ दे रहे है।' लेस्टरकी बातका मुझे विश्वास है और मै यहासे अन्यत्र जानेका विचार नही करता।"

यह गरीबोंका मुहल्ला है और इसमे संदेह नही कि इस श्रेणीके लोगोके हृदयमें गांधीजीके प्रति प्रेमका समुद्र उमड़ पड़ा है। भावके भूखे महात्माजी इनसे अलग होनेका अभी कोई कारण नही देखते।

मीराबेन और लेस्टर एक-दूसरीसे कुछ खिची-सी रहती हैं। इसकी चर्चा चलनेपर महात्माजीने कहा कि "मै तो मीरा-

बेनको ही दोष दूंगा। उसके मनमें यह आता है कि जिस हदतक मैंने त्याग किया है, उसी हदतक दूसरे भी क्यों न करे। पर मनुष्यको अपने त्याग या तपका कुछभी अभिमान नहीं करना चाहिए। मुझसे जहांतक बन पड़ता है, मैं करता हूं—दूसरे अगर उस हदतक नहीं बढ़ सकते तो मैं इसका बुरा क्यों मानूं? त्यागकी राहपर कदम रखनेवालेको आरंभमें अभिमान-सा हुआ करता है, मुझे भी किसी समय हुआ था, पर मैं तो शीघ्र ही संभल गया।"

महात्माजीके कानों तक लोगोंकी यह टिप्पणी भी पहुंच चुकी है कि लेस्टर अपनी संस्थाका विज्ञापन करनेके लिए ही उन्हे अपना अतिथि रखना चाहती है। इस विषयमें महात्माजीने कहा—

"अगर वह ऐसा चाहती है और उसकी संस्थाका कुछ विज्ञापन होता है तो क्या हर्ज है? आखिर उसका और उसकी संस्थाका व्रत तो दीन-दुखियोंकी सेवा करना ही है।"

दूसरा प्रश्न शार्टहैंड टाइपिस्टके विषयमें था—उसे कबसे आना होगा? उत्तर मिला कि "अभी उसकी कोई आवश्यकता नही है। लिखने-लिखानेका समय ही कहां मिलता है? लेख-के रूपमें जो कुछ सामने आता है उसको 'पास' कर देता हूं। महा-देवकी भाषा तो मेरे 'अनुकूल' हो गई है। उसकी लिखावट भी अच्छी होती है। पर प्यारेलालमें यह बात नहीं है। उसके अक्षर बहुत खराब होते हैं और उसकी भाषा भी पूरी संतोषजनक नहीं होती। विद्वान् तो अच्छा है, पर उसकी भाषा या रचना बरा-बर एक-सी नही होती। जब उसका ध्यान अपने विषयपर केंद्रीभूत रहता है तब तो अच्छा लिख लेता है, नही तो त्रुटियां रह जाती है।"

सुना था कि कांफ्रेंस आने-जानेके लिए मोटरकी नई व्यवस्था आवश्यक है, पूछने पर मालूम हुआ कि यह खबर भी गलत है। एक हिंदुस्तानी डाक्टरने महात्माजीको पहुंचानेका काम अपने जिम्मे ले रखा है। कल गलतीसे उनकी मोटर एक दरवाजे पर खडी रही और महात्माजी दूसरे दरवाजेसे बाहर निकले।

लाचार टैक्सीसे आना पड़ा। जब महात्माजीको पीछे मालूम हुआ कि डाक्टरसाहबकी गाड़ी मौजूद थी, तब उन्हें इसका खेद हुआ। कहते थे कि मेरा मौनका दिन था, इसलिए पूरी तहकीकात न करा सका—महादेवसे पता न लग सका कि गाड़ी किधर खड़ी है। व्यर्थ एक कौड़ी भी खर्च न हो, इसका महात्माजीको पूरा ध्यान रहता है। फिर भी उन्होने कुछ पैसे बचा ही लिये। मालवीयजीके लिए भी टैक्सी करनी थी, सो उन्हे अपनी टैक्सीमें ही आर्य-भवन छोड़ते आये। पर आगेके लिए उन्होने कहा कि भाड़ेकी गाड़ीकी कोई जरूरत नही है।

मैंने कहा—तो तीनों बातोंके संबंधमें मुझे जो सूचना मिली थी वह गलत निकली।

महात्माजी—बिल्कुल गलत !

मै—तीनो-की-तीनो अखबारी खबरे साबित हुईं ?

महात्माजी खिलखिलाकर हँस पड़े।

× × ×

आजकी कांफ्रेसमें महात्माजीका जो भाषण हुआ है, उसकी चर्चा छिड़ी। सभी मुक्तकंठसे उसकी प्रशसा कर रहे हैं और कहते है कि ऐतिहासिक दृष्टिसे यह अमर होगा। कांफ्रेंसमे जानेसे पहले महात्माजी भारत-सचिवसे मिले थे। उसका रुख उन्होंने अच्छा पाया। महात्माजीने उसे स्पष्ट-से-स्पष्ट शब्दोमे यह बताया कि वह ब्रिटिश शासन-पद्धतिके परम अनुरक्त भक्तसे उसके कट्टर शत्रु कैसे बन गये। उन्होने कहा कि "एक समय था जब मैं तुम्हारे शासनको अपने देशके लिए हितकर समझता था और उसकी भलाई मनाता था। मेरा दावा है कि संसारमे शायद ही कोई दूसरा मनुष्य होगा, जिसने मेरी ही तरह पवित्र और निःस्वार्थ भावसे तुम्हारा साथ दिया होगा—तुम्हारा भला चाहा होगा। फिर क्या कारण कि मै आज दोस्तसे दुश्मन बन गया हूं और तुम्हारी जड़ सीचनेके बजाय उसे खोदनेमे दिन-रात लगा हुआ हूं ?"

होरने कहा—"महात्माजी, मैं तो संस्कारसे ही दूसरे मतका अनुयायी हूं। मेरी शिक्षा-दीक्षा इस प्रकारकी हुई है कि मेरी जातिने भारतवर्षमें जो कुछ किया है, उसका मुझे गर्व है।"

महात्माजीने उत्तर दिया—"तुम्हें गर्व होगा, पर होना नहीं चाहिए। भारतवर्षकी इस समय जो दशा है और दिन-दिन होती जा रही है, वह तुम्हारे लिए अभिमान की नहीं, लज्जाकी बात है। बरसोंसे मेरा अपने देशकी जनतासे घनिष्ठ संबंध चला आ रहा है। गांवोंमें घूमना-फिरना, ग्रामीण लोगोंके साथ उठना-बैठना, उनके सुख-दु.खमें शामिल होना, उनकी कठिनाइयोंकी जांच-पड़ताल कर उसकी पूरी जानकारी हासिल करना—इन बातोंमे तुम्हारा एक भी कर्मचारी मेरी बराबरी नही कर सकता। मैंने अपनी आंखो देखा है कि मेरे इन देशवासियोंकी कल क्या हालत थी और आज क्या है, और बहुत-कुछ कटु अनुभव प्राप्त करके मैं इस नतीजेपर पहुंचा हूं कि तुम्हारे हाथों हमारी भलाई नहीं हो सकती।"

होरने कहा कि अभी तो हमारे समझौतेके प्रयासका आरंभ ही हो रहा है; अंत होनेसे पहले आपसे बहुत कुछ बातें करनी है।

महात्माजीको इसके बाद ही कांफ्रेंसमें जाना और अपना वक्तव्य सुनाना था। होरने कहा कि मै चाहता तो नहीं था कि आज आपको कुछ भी कष्ट दूं, पर साथ ही आपसे यथासंभव शीघ्र मिल लेना भी आवश्यक था। महात्माजीके ठहरनेके स्थानके विषयमें पूछताछ की। उन्होंने कहा कि मैं अपने गरीब भाइयोंके बीच बड़े सुखसे हूं। होर बोला कि इंग्लैंडका वास्तविक जीवन भी गरीब लोगोंका ही जीवन है। उसकी बातचीतके ढंगसे महात्माजीको संतोष हुआ। कहते थे कि "उसने न तो हाकिम-हुक्कामकी तरह रूखे-सूखे शब्दोमें बातें की, न कूटनीतिकी भाषाका ही उपयोग किया। मैंने उससे कहा कि मुझसे यह आशा मत करो कि मेरी जबान कभी भी मेरे मनकी बात छिपानेकी कोशिश करेगी हां, मै यह सर्टिफिकेट जरूर चाहता हूं कि समझौतेके लिए मैंने

कुछ भी उठा न रखा। उसने कहा कि मै भी आपसे ऐसी ही सर्टिफिकेट पानेका इच्छुक रहूंगा।"

मै—"तो यह मान लू कि उससे आपकी जो बातचीत हुई वह आशाप्रद थी ?"

सिर हिलाते हुए महात्माजीने कहा कि "नही ! इतना ही कहूंगा कि मैने यह आशा नही की थी कि वह मुझसे इस हदतक दिल खोलकर बातें करेगा।"

लार्ड सैकीसे होरकी तुलना होने लगी। महात्माजीने कहा कि उसपर भी मेरी बातोंका अच्छा प्रभाव पडा है; पर इसमे सदेह नही कि वह होरसे कही अधिक चतुर और गंभीर है, इसलिए उसके शब्दोसे ही उसके हृदयकी थाह मिलनी मुश्किल है। महात्माजीने उसे एक चपत अच्छी लगाई। वह देशी नरेशों-की बात करने लगा, तो महात्माजीने कहा कि "क्या असलियत तुमसे छिपी है ? क्या तुम नही जानते कि कान्फ्रेस सरकारकी हां-मे-हा मिलानेवालोसे भर दी गई है ? क्या यह भी बताना आवश्यक है कि जिन नरेशोकी तुम बात करते हो, वे सब-के-सब सरकारके इशारेपर नाचनेवाले हैं ? मै उन्हे या उनकी बातोको कुछ भी महत्व नही देता और जो सच्ची बात है वह तुम्हे भी मालूम है।" सैकीसे इसका कुछ भी जबाव न बन पड़ा।

महात्माजीके पैर जमते जा रह है। उनकी चमकस दुश्मनोंको भी चकाचौंध लग गई है। लार्ड रीडिगके पाससे वह दो-तीन बार गुजरे, तो वह खड़ा हो गया और उनसे विशेष बातचीत करने की इच्छा प्रकट की।

चर्चिल अभी स्वयं नही मिला है, पर बेटेको भेजा था। अखबारवाले उसे ताना देने लग गये हैं। 'स्टार' ने लिखा है कि तुम तो बड़े वीर बहादुर हो—शेरोंका सामना करनेवाले हो—पर जब गाधी तुमसे मिलनेको तैयार है, तो दुम दबाकर क्यों भागे जाते हो ? बेटेमे बापकी-सी ही तेजी है और उसके विचार भी बिल्कुल वैसे ही है। उसने पूछा कि अगर कान्फ्रेंससे कोई भी

नतीजा न निकला—समझौता न हो सका—तो आप क्या करेंगे ? गांधीजीने एक शब्द मे उत्तर दिया कि 'सत्याग्रह'; और इसकी व्याख्या-सी करते हुए बोले कि पिछली बार हमलोग जो कुछ कष्ट झेल चुके है, उससे इस बार कही अधिक झेलनेको तैयार रहना पडेगा । उन्होंने उसे मेनकी प्रसिद्ध पुस्तक 'प्राचीन ग्राम-संस्थाएं' (एंशियंट विलेज कम्यूनिटीज) पढ़नेकी सलाह दी, जिससे उसे पता चल जाय कि भारतवासियोंमे स्वराज्यकी क्षमता कहा तक थी और आज भी है । उसने कहा कि मै पिताको सब बाते सुनाऊंगा। चर्चिलपर इनका कुछ भी प्रभाव पड़ेगा या इनसे मिलनेके फलस्वरूप वह अपनी राह छोड़ देगा, यह आशा तो दुराशामात्र है । फिर गांधीजीका यह प्रयास क्यों ? बात यह है कि वह संसारकी सहानुभूति अपने साथ कर लेनेका मार्ग अच्छी तरह जान गये है । उनकी यह विद्या निराली है । महात्माजीने अपनी ओरसे ऐलान कर दिया कि जो मुझे गालिया देते है और मेरे कट्टर-से-कट्टर दुश्मन है, मै उनसे भी मिलने और बाते करनेको तैयार हूं । चर्चिल अभीतक चुप है । वास्तवमें महात्माजीके नामसे वह असमंजसमे पड गया है। पर वह मिले या न मिले, नैतिक रणक्षेत्रमें इससे महात्माजीके पक्षको ही सहायता पहुंचेगी।

लार्ड ईर्विनको महात्माजीने आते ही तार दिया था कि मै पहुच गया हूं, तुम कब और कहां मिल सकते हो ? कहते थे कि उसके उत्तरमे उसने बडा ही सुंदर पत्र लिखा है। कहा है कि मै जान-बूझकर आर० टी० सी० में शरीक नहीं हुआ, क्योंकि मेरा खयाल है कि मैं बाहर रहकर अधिक सहायता कर सकता हूं। वह शीघ्र ही लदन आनेवाला है।

शिमलेसे एमर्सनने भी महात्माजीके पत्रका बड़ा ही संतोष-जनक उत्तर दिया है। महात्माजीने उसे बड़ी फटकार बताई थी—उसे बहुत-कुछ भला-बुरा कहा था। महात्माजी कहते थे कि उसका

पत्र पढ़ने ही लायक है। उसने एक तार भी दिया था, पर वह किसी कारणवश महात्माजीको न मिल सका।

मैंने कहा कि "आपने अपना वक्तव्य सुना दिया। सबको मालूम हो गया कि आप क्या चाहते है—अब आगे क्या होगा ? आप उनके उत्तरकी प्रतीक्षा करेंगे या उत्तर मिले बिना भी कमेटीकी कार्रवाईमें भाग लेंगे ?"

महात्माजीने कहा कि "मै कार्रवाईमें भाग लूंगा। जहां मैं देखूंगा कि कोई ऐसा प्रश्न उपस्थित है, जो कांग्रेसके किसी मूल सिद्धांतसे संबध रखता है और उसके विषयमें कांग्रेसका मत स्पष्ट कर देना आवश्यक है, वहां मैं अपनी राय जाहिर कर दूंगा। उदाहरणके लिए—वोट देनेके अधिकारका प्रश्न है। अनावश्यक बातोंपर बोलनेका विचार मेरा नही है। सैंकी शायद यह नहीं चाहता था कि मैं कार्रवाईमें इस प्रकार भाग लूं। पर जब वह भाग लेनेवालोंकी लिस्ट बनाने लगा तब मैंने भी अपना नाम लिखा दिया। उसे मेरा भाग लेना पसंद नहीं था—यह मैं इसलिए कहता हूं कि मैं उसकी बगलमें ही बैठता हूं और उसने मुझसे इस संबधमें कुछ भी बात नही की। नाम लिखाकर मैंने उससे कह दिया कि तुम चाहे मुझे सबके बाद बोलनेका मौका दे सकते हो।"

मैंने पूछा कि आप जहां कुछ भी न बोलेंगे वहां '**मौनं सम्मति-लक्षणं**' तो न समझा जायगा ?

महात्माजीने कहा कि "हर्गिज नही। यह तो मैं स्पष्ट कर दूंगा कि प्रत्येक निर्णयको मैं स्वीकार करता हूं—यह कोई न समझे।"

मैंने कहा—मान लीजिए कि उन्होंने इसमें बहुत ज्यादा समय लगा दिया तो आप तबतक उनके उत्तरकी राह देखते रहेंगे ?

महात्माजी—"उनका उत्तर क्या होगा, यह तो मुझे कुछ ही दिनोंमें मालूम हो जायगा। पर अगर उन्होंने हमें छोटी

बातोंमें उलझाकर समय विताना चाहा, तो मैं ऐसा कब होने दूंगा ? मैं भी तो लगाम कसना शुरू कर दूंगा !"

आजके भाषणके संबंधमें मैंने पूछा कि उसके लिए आपने कोई तैयारी की थी क्या ? बोले—"कुछ भी नही । चाहता जरूर था कि ऐसे मौकेपर बोलनेके लिए कुछ तैयारी कर लू, कुछ बाते सोच लू । पर इसके लिए समय न मिल सका । कल रात कुछ ऐसी ही वाधा पड गई कि इस ओर ध्यान न दे सका । आज सुवह दो सज्जन मिलने आ गये । सोचा कि होरसे मिलने इंडिया आफिस जाना हैं, रास्तेमे कुछ सोच लूंगा । पर गाड़ीमें एंड्रूजका साथ हो गया और रास्ते भर बातें होती रहीं । इंडिया आफिसमें नियत समयसे २० मिनट पहले पहुंचा (कल महात्माजीको कान्फ्रेंस पहुंचनेमे कुछ देर हो गई—भीड़ ज्यादा होनेके कारण गाड़ियोको रुक जाना पड़ता है, इसलिए आज समय बचाकर चले थे), पर वहां भी कुछ सोचनेका समय न मिला, क्योंकि होरके दो सेक्रेटरी आ गये और उनसे बाते होती रहीं । बस, इतना ही सोच सका कि कांग्रेसके प्रतिनिधिकी हैसियतसे मुझे बोलना है, इसलिए उसके विषयमे कुछ कहना चाहिए । जो कुछ तैयारी कर सका वह इतनी ही।"

मैंने कहा कि बिना कुछ भी तैयारीके ऐसा अद्भुत भाषण हो, इसे तो दैवी अनुप्रेरणा ही समझना चाहिए ।

महात्माजी बोले—"बिल्कुल ठीक है । लार्ड इर्विनसे समझौता होने जानेपर मै पत्र-प्रतिनिधियोंको जो वक्तव्य दिया था, यहां आनेके दिन मेरा जो भाषण हुआ, अमेरिकाके लिए अभी उस दिन जो सदेश देना पड़ा—इनमें किसीके लिए पहलेसे न तो कुछ तैयारी कर सका था, न कुछ सोच ही सका था । ऐन मौकेपर हृदयमें जो आकाशवाणी हुई, उसे दोहरा दिया। यह सब ईश्वरकी अनुकंपाका फल है ।"

आगे क्या होगा, ईश्वर जाने, पर आसार बुरे नही है। प्रधान मंत्रीकी ओरसे कोई बात अभी तक आशाप्रद नही हुई है, पर जैसाकि गाधीजीने कहा—उसका प्रभाव नहीके बराबर रह गया है। अखबारोमे अभी तक 'मैंचेस्टर गार्जियन' जैसी सचाई और सहानुभूति किसी दूसरेने नही दिखाई, यद्यपि उसने भी भूलकर लिख दिया है कि महात्माजीने लगोटी त्यागकर पाजामा पहन लिया! महात्माजी यह सुनकर हँसने लगे। 'डेली मेल' महात्माजीको सनकी (फेनेटिकल) लिखता जाता है, पर उसने भी तार द्वारा ३००० शब्दोका एक लेख इस आशयका मागा है कि आप क्या चाहते है? साथ ही वचन दिया है कि लेख ज्यो-का-त्यों छपेगा—एक शब्दका भी हेर-फेर न होगा। महात्माजीने उसे उत्तर दिया है कि अभी तो बहुत-सा काम है, पर समय मिलते ही मै लेख भेज दूगा।

पंद्रह

१७ सितंबर, ३'१

लदन

कल रातको महात्माजीसे फिर मिला था। मुझसे कहा, मैचेस्टर साथ चलो। मैने पूछा, बबईसे तार आया है कि फेडरेशनके प्रतिनिधित्वका क्या होगा? उसपर महात्माजीने कहा, मै प्रधान मत्रीसे कहनेवाला हू, कितु मेरे पाव और जम जायगे, तब कहना ठीक होगा। यदि यहांसे भागना ही पड़े तो क्या लाभ है?

महात्माजीकी शरीर-रक्षाके लिए काफी खुफिया तैनात है। कल रातको खुफियावालोने आकर कहा कि "आपको तो कोई पर्वाह नही, कितु इग्लैडमे रहते यदि आपका बाल भी बाका हो जाय, तो हमारा मुह काला हो जायगा। इसलिए कृपया आप जहां जावे हमे सूचना दे दे, जिससे हमे आपका पीछा करनेमें सुभीता हो।" गाधीजी कहते थे कि भारत-सचिवने भी उनसे

ऐसा ही कहा । फलतः महात्माजी जहां जाते है, अपने दौरेकी सूचना खुफियाको दे देते है ।

एक ग्रामोफोन कंपनीवाला अपने रेकार्डमें महात्माजीका प्रवचन चाहता था । खूब बहस हुई । सारा मसला नीतिकी कसौटीपर कसा गया । अंतमे मांग अस्वीकार की गई । कुछ दिन पीछे बहस-मुवाहसेके वाद यह माग स्वीकार की गई ।

क्लार्क कहता था, "मंचेस्टरको रोटी फेंक दो और भारतमे रहनेवाले अंगरेज व्यापारियोंकी दिलजमइ कर दो तो तुम्हारा काम शीघ्र बन जाय ।" किंतु इनकी दिलजमइ की जाय तो कैसे ? इन्हें चाहिए मिश्री और हमलोग वातोंसे ही इन्हें मिठासका अनुभव कराना चाहते है !

सोलह

२४ सितंवर, '३१
लंदन

कल रातको हाउस ऑव कामंसमें महात्माजीका भापण था । श्रोताओंमें सभी लोग मौजूद थे । उपस्थिति २०० के करीव थी, जिसमें प्रायः १५० पार्लमेंटके मेंवर रहे होंगे । कई बारा-दरियोंसे गुजरकर हम लोग सभाके स्थानपर पहुंचे । महात्माजीने अपने भाषणमे कहा कि "हम लोग क्या चाहते है और क्यों चाहते है, यह मैं एक नही अनेक वार वता चुका हूं । हम 'पूर्ण स्वराज' से ही सतुष्ट हो सकते है । पर इसका यह अर्थ नही कि हम अपनी डेढ चावलकी खिचडी अलग पकायेंगे । हम भागीदार होकर तुम्हारे साथ रहना चाहते है, गुलाम होकर नही । हमारी मर्जी-की वात होनी चाहिए—जवतक अपनी भलाई देखते हैं, तुम्हारे साथ रहेंगे, दूसरी वात होते ही संवंधविच्छेद कर लेंगे । पिछली कान्फ्रेंसमें संरक्षणोपर जोर दिया गया था । पर जो व्यवस्था वहा तजवीज की गई थी, वह न तो 'औपनिवेशिक स्वराज्य'

(डोमीनियन स्टेट्स) था न किसी प्रकारकी स्वतन्त्रता। फौज और पर-राष्ट्र-नीति दोनो ही तुम अपने हाथमे रखना चाहते हो। आर्थिक नीतिके संबधमे भी तुम सरक्षण चाहते हो। फिर जो कुछ देते हो उसका मूल्य ही क्या? तुम कहते हो कि सेना भारत की रक्षाके लिए रहेगी। वास्तवमे उसका होगा भारत-को पराधीन रखना, उसके हाथ-पांव हिलने-डुलने न देना! हम अंगरेजोंको हर्गिज निकालना नही चाहते। पर हम यह जरूर चाहते है कि वे हमारे नौकर होकर रहे, मालिक होकर नही।"

इग्लैड ने आखिर गोल्ड स्टैडर्ड छोड दिया। भारतवर्ष सोनेसे तो हट गया, पर स्टर्लिंगसे वह अभी तक बधा हुआ है। शुष्टरने शिमलेमे कुछ कहा और होरने फेडरल कमेटीमे कुछ! जान-बूझकर यहावालोंने पीछे वेईमानी की है। महात्माजीने इस सबधमे जो वक्तव्य दिया, वह मुझे बहुत पसद न पडा। मेरे कहनेसे उसमे उन्होने थोडा परिवर्तन भी किया। रातको इस विषयमे उनसे फिर बाते हुई। मैने कहा कि आप ऐसे मामलोमे बिना पूछे ही वक्तव्य दे देते है, यह कैसी बात है? बडी वहस हुई। महात्माजीकी दलील थी कि मेरे शब्दोका वह अर्थ ही नही हो सकता, जो तुम करते हो। बोले कि "वकालतमे जितनी अच्छी बाते सीखनेको मिलती है,उन्हे मैने ग्रहण कर लिया है। मैने एक भी ऐसी वात नही रखी थी जिसके लिए कोई मुझे पकड सके।" खैर, अंतमें यह ठहरा कि भविष्यमे बिना सलाह लिये ऐसे विषयपर कुछ भी न कहेगे।

भारत-सचिवकी ओरसे एक पत्र आया था। उसका जवाब भेज दिया है।

मेरे विरुद्ध काफी प्रचार किया गया है। इसका फल यह हुआ कि मेरा अविश्वास किया जाता है। हा, जवसे काफ्रेसका मेंबर वना हूं तवसे लोगोसे मिलना-जुलना ज्यादा होता है।

अटलसे मिला था। यही अचानक मुलाकात होगई। इस सप्ताह लोथियन और बेनसे मिला। अच्छी बाते हुई।

पर बातोंसे तो अब काम आगे नहीं बढ़ता।

पंडितजीकी तंदुरुस्ती अच्छी है।

उस दिन श्री विट्ठलभाई पटेल महात्माजीके पास पहुंचे और कहने लगे कि फेडरल कमेटीमे आपका जो भाषण हुआ, उसे पढ़कर तो मै बेहोश-सा होगया। यह आपने क्या कह डाला? महात्माजी बोले कि "मैंने तो एक ही चार्ली चैपलिनका नाम सुना था, मुझे क्या खबर थी कि अपने यहां भी एक चार्ली चैपलिन है! खैर, तुम लोगोंको मेरा भाषण पसंद नही है, तो तुम अपना मुख्तारनामा वापस ले सकते हो।"

महात्माजीकी बाते निराली है। उस दिन कहते थे कि मुझे बच्चों के साथ खेलना जितना अच्छा लगता है, उतना आर० टी० सी० मे शरीक होना नही लगता। गरीबोंकी मडली ही महात्माजीकी आर० टी० सी० है।

सत्रह

३० सितंबर, '३१
लंदन

महात्माजी मैंचेस्टरसे लौट आये। वहां उनका अच्छा प्रभाव पड़ा।

हिंदू-मुस्लिम-प्रश्न अभी तक हल नही हो सका है। आशा भी कम है। सोमवार (२८ सितंबर, ३१) को कान्फ्रेसकी अल्प-संख्यक-दल-कमेटीकी मीटिंग थी। प्रधान मंत्रीने उसमें प्रजा-प्रतिनिधियोको इस हिसाबसे बिठाया—सबसे पहले श्रीमती नायडू, फिर गांधीजी, फिर मालवीयजी, फिर मैं।

प्रधान मत्रीका भाषण मुझे अच्छा नही लगा। उसमें ईमानदारी नही थी। खुशामद काफी थी; हमारे दर्शनशास्त्रोकी भरपूर प्रशंसा भी थी, पर इन ऊपरी बातोंके सिवाय और कुछ न था। महात्माजीके सामने, सभा-विसर्जनके बाद, उसने हाथ जोड़े
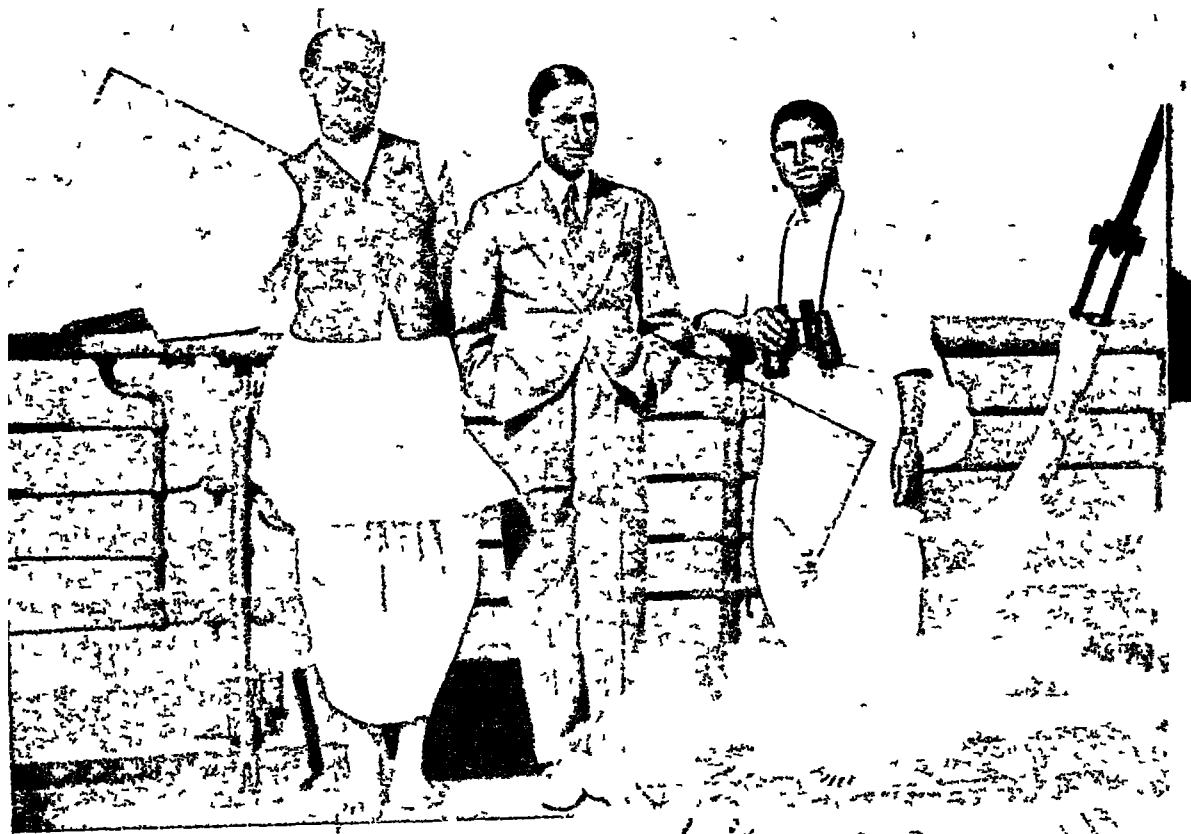
श्री महादेव देसाई : लेखक : श्री देवदास गाधी

जहाज़ पर गाधीजी, श्री महादेव देसाई और श्रीमती मीराबेन के साथ

गाधीजी फाकस्टन बंदर पर

और कहा कि कभी आपके आश्रममे आकर अपने पापोको धोऊंगा ! मालवीयजीने सर्वप्रथम दो दिनके लिए सभा स्थगित करनेको कहा। मोहलत मिली भी, पर किसीसे कुछ न बन पडा। गाधीजी और आगाखामे बाते जरूर चलती है, परतु उसका मोहलतसे कोई सबध नही। कुछ 'प्रतिनिधियो' का रुख लज्जित करनेवाला था। इनमे कोई कनफटे जोगीकी तरह गाली देकर मांगता है, कोई घरू ब्राह्मणकी तरह मागता है, पर है दोनो भिखमंगे। यद्यपि यह स्पष्ट है कि ये ब्रिटिश सरकारके ही आदमी है और अपने मालिकोके मनकी ही बात कहने-करनेवाले है तो भी आपसमे कुजड़ोकी-सी लडाई शर्मानेवाली है।

हिंदू-मुस्लिम-समस्याके सबंधमे गाधीजीकी आगाखासे तीन-चार घटे बातचीत हुई। उनकी तो वही पुरानी कहानी है कि असारीको बुलाओ ! कागजपर दस्तखत भी करके दे आये है और कह दिया है कि जो कुछ असारी कहेगा, मान लूगा और देशसे मनवानेकी पूरी कोशिश करूगा। अब सबकी गर्दन असारीके हाथमे है, पर महात्माजी कहते है कि इसमे चिताकी कोई बात नही है। गाधीजीपर मुसलमान काफी बिगडे है कि असारीको इतना वजन क्यो ? और अंसारीको वुलानेवाले भी नही है, लेकिन जान पडता है कि टूटनेकी नौवत न आवेगी। अगर टूट भी जाय, तो हमारा बुरा नही है। आज फिर गाधीजी मुसलमानोसे मिलनेवाले है। कुछ लोगोका प्रस्ताव था कि अंगरेजो-की पचायतसे निपटारा करा लिया जाय। किंतु पडितजी और गाधीजीकी राय कम है। यह सही भी है। जहा ऐसी पचायतका प्रस्ताव किया, वहा हमारी कमजोरी साबित हो जायगी और हम स्वराज्य मागनेके लायक नही रहेगे।

मार्लेसे मिला था। यह पार्लमेंटका मेबर है। कहता था कि कुछ होना-जाना नही है, बाते वनाके वापस कर देगे। उसका खयाल है कि नये चुनावमे कंजर्वेटिव बड़ी तादादमे

आ जायंगे और सब तरहसे दमन करेगे । मेरे पूछनेपर उसने कहा कि आवश्यक हुआ तो यहासे पैसे और फौज दोनों ही भेजे जायंगे । अध्यापक हैरेल्ड लैस्की (लंदन-विश्वविद्यालयमें राज-नीति-विज्ञानका अध्यापक और इस देशका एक प्रसिद्ध विद्वान्)का मत और है । उसने कहा कि यहांकी सेना अधिक कालतक वहां ऐसे कामके लिए नही ठहर सकती । लैस्कीसे अर्थशास्त्र-संबधी बाते काफी हुई । हमारे राजनैतिक मसलेपर भी बातचीत हुई । उसका भी यही कहना है कि कुछ होनेवाला नही है । लैस्कीका खयाल है कि यहां भयंकर स्थिति पैदा होनेवाली है । कल एक बहुत बड़ा जुलूस निकला था, जिसपर पुलिसकी लाठियां बरसी थी । कम्युनिस्ट पार्टी जोर पकड़ती जा रही है।

कल महात्माजीने कहा कि पडितजीको हिंदू-मुस्लिम-प्रश्नके संबंधमे समझाओ । मैंने निवेदन किया कि आपकी आत्मा जो कहे आप कर ले । पंडितजी भी मान जायंगे ।

कल भारत-मत्रीसे महात्माजीकी तीन घंटेतक बातचीत हुई । महात्माजीने कहा कि "समय बरबाद न करो; देनेके सबधमे या तो सीधी-सीधी बाते करो या वापस जाने दो । मुझे इससे कुछ भी दुःख न होगा, पर समयकी बरबादी से होगा ।" होरने कहा कि आपको व्यर्थ न रोकूगा । उसका भी विचार है कि कान्फ्रेसमे कुछ तय होना नही है । उसने छोटी-सी कमेटीका प्रस्ताव किया तो महात्माजी बोले कि "मै पहलेसे ही जानता हूं कि कान्फ्रेस द्वारा कुछ तय होनेवाला नही है । मै तो तुम्हारे निमंत्रणके कारण इसमें शरीक हुआ हूं । पर कमेटीमे भाग लेनेसे पहले यह तय कर लेना जरूरी है कि तुम कहांतक जानेको तैयार हो । पहले मूल सिद्धांतोंपर हम सहमत हो ले, फिर और बाते कर लेंगे ।"

होर—मै पहले इर्विनसे बातें करूंगा । आपकी तरह हमारे भी आदर्श है, पर आपकी तरह हम यह नही मानते कि हिंदुस्तानमें

हमसे इतनी ज्यादा बुराई हुई है। हमसे बहुत-कुछ भलाई हुई है। वर्तमान स्थितिमे हम आपको सेना और अर्थ-विभागका अधिकार कैसे दे सकते है ?

महात्माजी—भूलसे मनुष्य बुरी बातको अच्छी मान लेता है। तुम्हारे इस समय जो आदर्श है, उन्हे बिना चोट लगे तुम न भूलोगे।

होर—मै मानता हूं कि ऐसा हुआ करता है, पर इस समय तो हमारा यही विश्वास है कि हमारे आदर्श झूठे नही है।

महात्माजी—करेसी और एक्सचेजके सबधमे निर्णय करनेसे पहले तुमने हमारे विशेषज्ञोको क्यो नही बुलाया ?

होर—मै मानता हू कि भूल हुई।

भूल-सुधारके नामपर अब वह यह करनेवाला है कि मुझको यहाके प्रसिद्ध अर्थशास्त्रज्ञ और अपने सलाहकार सर हेनरी स्ट्राकोशसे मिलावेगा। हम दोनोकी बहस होगी और गाधीजी उसे सुनकर यह निर्णय करेगे कि सरकारने जो कुछ किया, वह अच्छा था या बुरा। इसके लिए अगला मंगलवार निश्चित हुआ है। होर अपने दो-एक मित्रोको भी बुलानेवाला है। सभवत ये मित्र सर मानिकजी दादाभाई-जैसे लोग होगे। वास्तवमे हम दोनोके बीच यह एक दगल-सा होगा। पर मुझे तनिक भी आशका नही है कि वह मेरी दलीलको किसी भी अशमे कमजोर साबित कर सकेगा।

कल बेथलसे महात्माजीकी बहुत-सी बाते हुई। उसने मेरा जिक्र किया और मुझे गरम मिजाजका बताया। उसका कहना था कि विड़लाका आपपर असर पड जाता है। महात्माजीने कहा कि मुझपर किसीका भी जल्दी असर नही पडता। बेथलने मुझे मगलवारको निमंत्रित किया है। देखे, क्या बाते होती है।

आज प्रधान मंत्रीसे महात्माजी मिले। बडी दिलचस्प बाते हुई। होरके संबंधमे महात्माजीकी जितनी अच्छी धारणा

हुई उतनी प्रधान मंत्रीके संबंधमे नही। उसने कहा कि "तुम बार-बार पूछते हो कि क्या दोगे ? पर यह बताओ कि तुममें क्या-क्या लेनेकी ताकत है ?"

महात्माजी—"तो तुम मुझे ललकारते हो। मै यहां आता ही क्यो ? मै वही बैठा-बैठा सबकुछ ले लेता। आज तुम मुझे वापस जाने दो, मै जो लेना चाहूगा, ले लूगा। कान्फ्रेसको तुमने अपने पिट्ठुओंसे भर दिया। अगर तुम मुझे अपना प्रतिनिधि बनाकर हिदुस्तान भेजो, तो मै तुम्हे सौ ऐसे आदमी और ला दू जो किसी प्रकार का समझौता न होने दे। तुम्हारी कान्फ्रेंसमें जो अछूतोंका प्रतिनिधि है, उसे किसने अपना प्रतिनिधि चुना ? मेरा तो दावा है कि अछूतोंका सच्चा प्रतिनिधि मै हूं। ऐसे-ऐसे आदमियोंको जमाकर उनके बलपर तुम मुझे ताना देते हो कि तुममे क्या लेनेकी ताकत है ! अगर तुम्हारा दिल पाक-साफ है, तो तुम हमे इस शर्तपर स्वराज दे दो कि हम आपसके झगड़े निपटा लेगे, फिर देखो कि हम प्रश्नको हल कर लेते है या नही।"

बड़ी अच्छी फटकार थी। प्रधान मन्त्री बगलें झांकने लगा। कहा कि हम दोनोकी अपनी-अपनी कठिनाइयां है।

महात्माजीने उत्तर दिया—"मेरी नही, तुम्हारी कठिनाइयां है।"

उसका अच्छा असर न पड़नेपर भी महात्माजी प्रफुल्लित थे। रंग-ढंगसे उत्साह काफी जान पड़ा—मेरा खयाल है कि महात्माजीसे लड़ाई मोल लेनेकी मूर्खता यहांवाले न करेंगे। इनकी नीयत तो बेहद खराब है, पर यहांकी स्थिति ऐसी बुरी होती जा रही है कि कान्फ्रेस टूटने न देगे। लैस्कीने कहा था कि बुधको सैकी मिलकर बाते करेगा। उसकी जगह प्रधान मंत्री खुद मिला। कल पंडितजीसे उसकी बाते होनेवाली है। पर एक बार मामला रंगपर आये बिना कुछ होनेवाला नही है। महात्माजी संभवतः शीघ्र ही वैसी परिस्थिति उत्पन्न कर देगे।

एक्सचेंजका अध्याय अभी समाप्त नही हुआ है । प्रायः प्रत्येक देश सोनेसे विदा लेता जा रहा है । इसका सबसे बड़ा असर यह हुआ है कि देने-लेनेकी जो बंधी रकमें थी वे आप-ही-आप घट गईं । कर्जदारोका कर्ज, पूजीवालोंकी पूजी कम होगई । स्थिति खराब है, इसलिए अभी बाजार सुधरनेकी आशा नही है ।

खुफियावाले बराबर महात्माजीके साथ उनकी हिफाजतके लिए चलते है । उनकी गाडीके आगे पुलिसकी गाड़ी चलती है । जहां भीड़ नजर आई वहा इस गाड़ी की घंटी बजी और पुलिसके सिपाहियोने रास्ता साफ कर दिया ।

अठारह

१ अक्तूबर, '३१
लंदन

आज अल्पसख्यक-दल-कमेटीकी फिर बैठक थी । महात्माजीने कल मुसलमानोसे कह दिया कि "मै साफ-साफ बता दूगा कि मौजूदा हालतमें समझौता मेरे बसकी बात नही है । अगर कुछ नही होता तो मैं कान्फ्रेससे हट जाता हू ।" इसपर उन लोगोनें आग्रह किया कि आप समझौतेके लिए एक छोटी कमेटी बना दे और उसमे एक बार फिर प्रयत्न कर देखे कि कुछ तय होता है या नही । इसलिए फिर एक सप्ताहके लिए कमेटीका कार्य स्थगित किया गया । समझौतेकी कमेटी बन गई है । मुझे भी उसका मेबर रखा है ।

इन कमेटियोमे कुछ होना नही है । मैंने महात्माजीसे कहा भी कि ऐसी बीसो कमेटिया पहले बैठ चुकी, आपने यह फिर बला क्यो मोल ली ? अंसारीके विना आप तो कुछ कमोवेश करनेवाले नही और अन्य लोगोसे तो अनतकालतक भी समझौता नही होनेका है । महात्माजी कहते है, "यह कमेटी तो मुझे नीचा दिखानेके लिए बनाई गई है और यह जानते हुए भी मैंने ही इसका सचालन करना स्वीकार किया है, किंतु इसमें भी मेरी कोई हानि

नही है। अंतमें मैं तो अपना निर्णय दे दूंगा, चाहे कोई माने या न माने।" मुझे उनकी यह बात नापसंद है। किंतु गांधीजी सब कुछ समझकर ही करते हैं, इसलिए देखें क्या होता है।

अबतकका निचोड़ तो यह है कि न तो हम तिल घटे न चावल बढ़े। जहां-के-तहा ध्रुवकी तरह बैठे हैं। यह भी स्पष्ट है कि अबतक यहांके किसी प्रतिष्ठित नेताने जीभ नही जमाई है, तो भी मेरा ऐसा खयाल है कि अबतककी सारी बाते 'बिलैया दंडवत्' हैं। या तो यों कहना चाहिए कि दोनों दल सलामी उतार रहे हैं। असल मुठभेड अगले सप्ताहमे हो जायगी। उसके बाद या तो उस पार या इस पार। मुझे तो अबतक यही विश्वास है कि कोई रास्ता निकलेगा। लेकिन यह स्पष्ट है कि महात्मा-जीको छोड़कर सब यहां तेज-हीन-से हो रहे हैं। कुछ तो लंदनके सामने हक्के-वक्के हो गये, कुछ महात्माजीके सामने दब गये, पर तो भी किसीमे जिसको हम 'झाडा-फाड़ा' कहते हैं, वह करनेकी शक्ति नही है। विचार करते-करते लोग बुड्ढे हो गये, किंतु 'अब भी वह विचार, १०० वर्ष बाद देखो तो वही विचार' यह हाल है।

प्रधान मत्रीने आज महात्माजीसे कहा कि कल मैंने जो कुछ कहा, उसका आपने कुछ भी बुरा तो नही माना! मैंने महात्माजीसे कहा कि होरका आपपर अच्छा प्रभाव पड़ा और प्रधान मत्रीका बुरा, पर अंतमें प्रधान मंत्री ही आपका साथ देगा। इसपर श्रीनिवास शास्त्रीने कहा कि "दोनोंमे कोई साथ न देगा। प्रधान मंत्री से कुछ भी आशा करना व्यर्थ है। यह पक्का साम्राज्यवादी है और मौका पड़नेपर अपने सिद्धांतोंको ताकपर रख देता है।"

उन्नीस

४ अक्तूबर, '३१
लंदन

आज वेथलसे दिनमें भोजनके समय देरतक बातें हुईं।

उसकी पत्नी भी मौजूद थी। पर हम लोगोकी बातचीत अलग हुई।

मैंने आरंभमे ही कहा कि "मुझे तुम लोग गरम मिजाजका बताते फिरते हो और मेरा विश्वास भी कम करते हो। ऐसी अवस्थामे मुझे डर है कि हम दोनोकी स्पष्ट बाते न हो सके। पर अगर ऐसा हुआ तो इससे कुछ भी लाभ न होगा।"

बेथलने कहा कि विश्वास रखो, मै साफ-साफ बाते करूंगा। फिर हम दोनोकी जो बातचीत हुई उसका साराश इस प्रकार है:

मै—हमलोगोंका खयाल है कि कान्फ्रेसके कारण समयकी बरबादी हो रही है। सरकारने इसे अपने खुशामदी टट्टुओसे प्राय भर दिया है और इसके द्वारा कुछ भी काम बनना असंभव है। अगर सचमुच समझौता करना चाहते हो तो पहले मूल बाते निश्चित हो जानी चाहिए—यह मालूम हो जाना चाहिए कि तुम कहातक आगे बढनेको तैयार हो। मूल निश्चित हो जानेपर शाखा और पल्लवसे सबंध रखनेवाली बाते एक विचार-समितिके हवाले कर दी जायंगी।

बेथल—एक दल यहा अवश्य इस बातके पक्षमें था कि समय नष्ट करके सबको योही वापस कर दिया जाय। पर दूसरे दलका—और यह दल प्रभावशाली है—विचार हुआ कि नही, समझौता अवश्य हो जाना चाहिए। मै जो कुछ कहता हू उसकी प्रामाणिकताका तुम पूरा विश्वास कर सकते हो। ऐसे काम में अधीर होना ठीक नही। सालभर भी इस कामके लिए थोड़ा ही समझना चाहिए। मै नाम नही बता सकता, पर मैं जिस दलकी बात करता हूं, उसकी पूरी राय है कि कुछ तय अवश्य हो जाना चाहिए।

मैं—साल भी लगे तो परवा नही, बशर्ते कि सचाई हो—समझौतेकी पूरी ख्वाहिश हो।

बेथल—मै यह मानता हूं, पर जहा तुम्हारी ओरसे कानून

द्वारा हमें बहिष्कृत करनेकी बातें होती हैं, वहां समझौता कैसे हो ?

मैं—इस संबंधमें तो गांधीजी आश्वासन दे ही चुके हैं, मैंने भी जातिगत बहिष्कारके विरुद्ध मत प्रकट किया है।

बेंथल—पर वर्किंग कमेटीकी जो रिपोर्ट निकली है, उसे देखो। उसमें तो भारतवासियोंकी ओरसे जो प्रस्ताव किये गये हैं, उनका उद्देश यही है कि अंगरेजोंको इस क्षेत्रसे निकाल बाहर किया जाय।

मैं—असलमें परिस्थिति और वातावरणको देखना चाहिए। मौजूदा हालतमें हमें यह जरूर कहना पड़ता है, पर हमें पूरा अधिकार मिल जाय तो हमारा रुख बदल जायगा।

बेंथल—गांधीजी इस बातपर जोर देते हैं कि आजतक जो कुछ हो चुका है, उसकी हम पूरी जांच करेंगे। मसलन वह इस बातपर तुले हुए हैं कि जितने पट्टे सरकार द्वारा दिये जा-चुके हैं उनकी जांच हो और यह देखा जाय कि कहां-कहां पक्षपात हुआ है। पर यह कैसे पार पड़ेगा ? न जाने कितने हजार पट्टे होंगे। किस-किसकी जांच होगी ?

मैं—जांच उन्हींकी होगी, जिनके बारेमें लोगोंको शिकायत होगी। पर इस विषयमें तुम गांधीजीका समाधान करा दो। वास्तवमें मेरी उपयोगिता तो तब होगी, जब तुम दोनोंकी बातें हो लेंगी और यह निश्चित हो जायगा कि समझौतेकी संभावना है। तुम अपनी रक्षाकी बात करते हो, पर भारतवासियोंकी रक्षा कैसे हो ? सिंधिया-कंपनी मौतकी राह देख रही है, उसकी रक्षाका क्या उपाय है ? किसी भी तरह हम उसे बचानेका प्रयत्न करते हैं तो तुम्हारी ओरसे यह शिकायत होती है कि हम तुम्हें मारते हैं।

बेंथल—तुम इंचकेपकी संपत्ति ले लो और अपने उद्योग-धंधेकी रक्षा करो। सरकार खास कानून बनाकर ऐसी संपत्ति अपना ले तो हमें कोई आपत्ति न होगी। रक्षा करनेके और भी

उपाय है। इस देशमें विदेशी रंगके बहिष्कारके लिए खास एक्ट बना हुआ है। उसमें लेसंस लेनेका ऐसा विधान है कि विदेशी रगके व्यापारके लिए वह मिल ही नही सकता। तुम भी कुछ ऐसे ही नियम बनाकर अपने उद्योग-धधोकी रक्षा कर सकते हो।

मैं—हमे नामसे नही, कामसे मतलब है। कोई भी अच्छा रास्ता बताओ, हम उसे मान लेगें। यह जरूर है कि हमारे यहां एक दल कानून-बहिष्कारका पक्षपाती है, पर हम उसे मना लेगें।

बेथल—समझौतेकी पहली सीढ़ी है हमारे व्यापार-संबंधी अधिकारोका सुरक्षित हो जाना।

मै—अगरेज व्यापारियोंके प्रतिनिधि तुम हो, कांग्रेसके प्रतिनिधि गांधीजी है। तुम दोनों एकत्र होकर बाते कर लो। अगर समझौता हो जाय तो तुम उनका पूरा साथ दो। न हो सके, कांफ्रेंस निष्फल हो जाय, तो हमलोग अपने-अपने घरकी राह ले।

बेथल—मेरी भी यही राय है।

मै—अब जितने विषय है, उन्हे एक-एक करके लो और प्रत्येकके संबंधमें अपनी राय जाहिर करो।

बेथल—फौजके बारेमे मेरी कोई वकत नही, इसलिए मै कुछ कहना नही चाहता। पर हा, हमारी ओर कोई टस-से-मस होनेको तैयार नही है।

मै—मै तुम्हे यह कह देना चाहता हू कि गांधीजी भी इस विषयमे टस-से-मस होनेको तैयार नहीं हैं। पर तुम उनकी बात तो सुनलो कि वह क्या चाहते है, अधिकारका वह क्या अर्थ करते हैं।

बेथल—मै इतना जरूर कहूंगा कि फौजके लिए हठ करना ठीक न होगा। आखिर किसी राष्ट्रके जीवनमें दस-बीस बरस कितने दिन होते है!

मै—बेशक, मगर यह तो पक्का हो जाय कि इतने दिनों बाद हमारा पूरा अधिकार हो चलेगा।

बेंथल—इसकी बातें होंगी। अब मैं कर्जकी बात लेता हूं। मेरी सलाह है कि भूलकर भी तुम कर्ज चुकानेसे इंकार मत करना।

मैं—इंकार तो करते नही। हमारा तो यह कहना है कि न्यायसे हम जिसके देनदार साबित न हो, वह हम न दें।

बेंथल—जो हो चुका, हो चुका। जो कर्ज है, उसे तुम कबूल कर लो। हां, यह हो सकता है कि झगड़ा मिटानेके लिए इंग्लेंड तुम्हें एक सालाना रकम दे दिया करे।

मैं—मतलब रुपयेसे है, चाहे वह किसी भी रूपमें मिले। इन दोनों बातोंपर हमलोग बहुत-कुछ सहमत जान पड़ते हैं। अब आर्थिक संरक्षणोंकी बात लो। हमारी स्वतंत्रताको नियंत्रित करनेके दो उद्देश्य हो सकते है—या तो हमारा भला चाहते हो या अपने हित या स्वार्थको सुरक्षित रखना चाहते हो। अगर तुम यह साबित कर दो कि तुम जैसा नियंत्रण चाहते हो, वह हमारी भलाईके लिए है तो हम तुम्हारी बात मान लेंगे। पर तुम्ही विचार कर देखो कि वैसी परिस्थितिमें हम अपनी क्या उन्नति कर सकेंगे, अपने गरीब भाइयोंको क्या आराम पहुंचा सकेंगे? भारत-सरकारका सालाना बजट प्राय: १३० करोड़ रुपयेका होता है। रेलवे, फौज, कर्ज और पेंशन इत्यादिमे प्राय: ११० लग जाते है और इनपर तुम अपना अधिकार चाहते हो! फिर हमें जो स्वतंत्रता मिली, वह कुल २० करोड़के लिए। अगर हमने कोई भी टैक्स घटाना चाहा तो वाइसराय झट कूद पड़ा और हमें रोक दिया। ऐसे स्वराजसे क्या लाभ? तुम हिसाब करके देख लो कि क्या हमें देते हो और क्या अपने हाथमें रखते हो?

बेथल—फौजका खर्च बेशक बहुत ज्यादा है। मैं उसके घटाने के पक्षमें हूं।

मैं—शायद तुम यह मंजूर करोगे कि इस फौजके खर्चका कुछ हिस्सा इंग्लैडसे मिलना चाहिए।

बेंथल—मैं मजूर करता हूं।

रेलवे-विभागके संबंधमें उसने कहा कि उसे व्यापारकी तरह चलाया जाय, भारत-सरकारको केवल अतिम निर्णय करनेका अधिकार रहे। रिजर्व बैंकके बारेमें पूछा कि तुम क्या इसे पसंद करते हो कि वह राजनैतिक दलबंदीके प्रभावमें रहे ?

मैंने कहा कि "मै सरकारके लिए पूरी स्वतन्त्रता चाहता हूं। जिस तरह यहांकी सरकारने गोल्ड स्टैंडर्ड जब चाहा छोड़ दिया उसी तरह हमारी सरकारको भी यह अधिकार होना चाहिए कि देशके लिए जो उचित समझे करे।"

बेंथल—ठीक है, पर वाइसरायकी मंजूरीसे करे।

मैं—मेरी राय है कि वाइसरायकी मजूरीका यह अर्थ न हो कि वह बात-बातमें दखल दिया करे। पर इस विषयमें भी गांधीजी ही प्रामाणिक रूपसे कुछ कह सकते हैं।

बेथल—इस मामले मे तीन भागीदार हैं—देशी नरेश, सरकार और ब्रिटिश भारत। अगर तीनोंके प्रतिनिधित्वकी व्यवस्था हो जाय, तो सारा प्रश्न हल हो चले।

मैं—सरकारके प्रतिनिधित्वका क्या अर्थ ?

बेथल—जबतक पूरे अधिकार नही मिल जाते तबतक कुछ ऐसी व्यवस्था आवश्यक है।

मैं—पर कौन कह सकता है कि जो व्यवस्था थोड़े समयके लिए की जायगी वह स्थायी न हो चलेगी ? खैर, इन बातोंपर आगे विचार होनेका क्या रास्ता है ?

बेथल—फुरसत हो तो मंगलवारको गाधीजी, तुम, मै, कार और कैटो मिलकर पहले व्यापार-संबधी अधिकारोंके विषयमें कुछ निर्णय कर लें। उसके बाद आर्थिक सरक्षणोंके विषयमें ब्लैकेट, स्ट्राकोश इत्यादि मिलकर बातें कर लेंगे।

बीस

६ अक्तूबर, '३१
लंदन

आज शामको इंडिया आफिसमें सर हेनरी स्ट्राकोशके साथ 'दंगल' हुआ। सभापतिका आसन पहले तो भारत-सचिव सर सैमुयल होरने ग्रहण किया, पर मन्त्रिमंडलकी मीटिंग थी, इसलिए सर रेजिनाल्ड मैंटको अपना पद देकर वह कुछ ही मिनिट बाद चलता बना। और बहुत-से लोग उपस्थित थे—गांधीजी, सर पुरुषोत्तमदास, मि० जिन्ना, सर मानिकजी, सर फीरोजशाह सेठना, के० टी० शाह, प्रो० जोशी, रंगास्वामी अय्यगर, इत्यादि, इत्यादि। गांधीजी प्राय: ७ बजे कार्यवश उठकर चले गये। ५॥ बजेसे कार्रवाई आरंभ हुई। सरकारकी ओरसे सर हेनरी स्ट्राकोशने वक्ताका काम किया और अपनी ओरसे मैंने। ब्लैकेट भी मौजूद था, पर कुछ बोला नहीं।

स्ट्राकोशने पहले तो संसारकी परिस्थितिका दिग्दर्शन कराया, फिर भारतवर्षकी बातें करने लगा। उसकी सबसे बड़ी दलील यही थी कि अगर एक्सचेंज १-६ स्टर्लिंग पर न बांध दिया गया होता तो न जाने लुढ़कते-लुढ़कते कहां जाकर दम लेता और न जाने सरकारको कहांतक नोट छपाकर अपना काम चलाना पड़ता। मैंने जब पूछा कि आखिर ठहरानेके लिए तुम्हारे पास साधन क्या है, तब उससे कोई उत्तर न बन पड़ा। उसने अधिकांश समय मेरी उन दलीलोंका जवाब देनेमें लगाया जो मैंने आर्थिक सुधार (मॉनीटरी रिफार्म) नामकी पुस्तिकामें पेश की हैं। मैंने कहा कि मैं बात-बातपर बहस करनेको तैयार हूं, पर मैं यह कह देना आवश्यक समझता हूं कि उस पुस्तिकामें मैंने जो मत प्रकट किया है, वह मेरा अपना है, भारतीय व्यापारी-वर्गका नहीं। यहां जो लोग आये हैं, वे भारत-सरकारकी नीतिके विषयमें कुछ कहने-

सुनने आये है, इसलिए उस विषयको छोड़कर मेरी पुस्तिकाकी समालोचनामें समय लगाना इनके साथ अन्याय करना है। फिर भी स्ट्राकोशने अपना विचार न बदला। खैर, अच्छी बहस हुई। मैंने लिखा था कि एक्सचेजकी दर उठानेका वास्तविक उद्देश्य अग्रेज सिविलियन और व्यवसायीको लाभ पहुंचाना था। यह बात इन लोगोको ख़ूब चुभी और स्ट्राकोश कहने लगा कि इसे किस तरह प्रमाणित कर सकते हो? सर पुरुषोत्तमदासने कहा कि यह किस्सा तो लंबा-चौडा है, और इसे सुनने-सुनानेके लिए समय चाहिए।

खाने-पीनेका वक्त हो रहा था, लोगोको अपने-अपने कामसे जाना था, इसलिए चर्चा स्थगित की गई। मुझे ऐसा जान पड़ा कि स्ट्राकोश अपने विषयका पूरा पंडित है, पर बेईमान नही है, इसलिए सभव है, या तो फिर इसकी चर्चा ही न हो या ब्लैकेट जैसे आदमीको सरकारी पक्षके समर्थनका क़ाम सौपा जाय। स्ट्राकोश अच्छी तरह जानता है कि सरकारकी ओरसे पेश करने लायक कोई जोरदार दलील नही है। वह करे तो क्या? बोला कि तुमने बार-बार कहा है कि हमारा सोना उडा दिया। वास्तवमें सरकारने उड़ाया नही, हिदुस्तानकी जो जिम्मेदारी थी उसे पूरा किया। मैंने पूछा, इंग्लैडकी भी तो जिम्मेदारी थी—यहा क्या किया? उसने कहा—मगर इंग्लैड हिंदुस्तान-जैसा दूसरोका देनदार नही है। मैंने उत्तर दिया—मै इसे मानता हू, पर दो बाते है। इंग्लैड वैसे देनदार न हो, पर यहा एक्सपोर्टसे इंपोर्ट ज्यादा है। हमारा देश देनदार है, पर वह इंपोर्टसे एक्सपोर्ट ज्यादा करता है। यह तुम्हे न भूलना चाहिए। साथ ही, यह भी ध्यानमे रखनेकी बात है कि हम अपने उद्योग-धंधोकी उन्नति कर, अपनी उत्पादन-शक्ति बढाकर ही अपना देना चुका सकते है। फिर हमारी नीति कौन-सी होनी चाहिए—उद्योग-धंधोंको वढ़ानेवाली या उनका सत्यानाश करनेवाली? स्ट्राकोश फिर निरुत्तर रह गया।

इक्कीस

७ अक्तूबर, '३१

लंदन

आर० टी० सी० में अबतक क्या हुआ है, ऐसा पूछा जाय तो यही कहना होगा कि कुछ भी नही। अल्पसंख्यक जातियोंका झगड़ा अभी निबटना बाकी है। स्वराज-विधानके संबंधमें एक चावलभर भी प्रगति अबतक नहीं हो पाई है, तो भी यह कहा जा सकता है कि धीरे-धीरे हम आगे बढ़ रहे हैं। गांधीजीकी मैत्री फैलती जा रही है, लोगोंसे बातें होती रहती हैं और हमारे कार्यको कुछ-न-कुछ नया स्वरूप रोज मिलता रहता है। अल्प-संख्यक जातियोके समझौतेकी कहानी दूसरे अध्यायमें मिलेगी।

आज गांधीजी, सर पुरुषोत्तमदास, बेथल, कार और मैं, पांचों बैठे और मशविरा शुरू कर दिया। संख्याके हिसाबसे शकुन ठीक हुआ, क्योंकि पंच पांच ही होते हैं, हम भी पांच थे। तीन बातें लोगोने आपसमें तय कीं—

(१) स्वराजमें अंग्रेजोंके प्रति किसी प्रकारका भेद-भाव न हो।

(२) जातीय भेद-भावका खयाल किये विना स्वराज-सरकार भारतीय उद्योग-धंधोंको संरक्षण दे। ऐसे संरक्षणमें ध्येय अमुक दूकान या व्यवसायको संरक्षित करना ही होगा, न कि काले-गोरेका भेद करना।

(३) आजकी सरकारसे किसी व्यवसायीने बेईमानीसे कोई स्वत्व प्राप्त कर लिये होंगे तो उनकी जांच-पड़तालका हक स्वराज-सरकारको होगा।

वार्तालापके अंतमें तय हुआ है कि यह सिलसिला आगे

चलेगा और इन्हीं लोगों द्वारा ब्लैकेट, स्ट्राकोश इत्यादिसे आर्थिक विधानके संबधमें समझौता होगा जिसे, आशा की जाती है, यहांकी सरकार भी स्वीकार कर लेगी।

बाईस

८ अक्तूबर, '३१

लंदन

आज सुबह गांधीजी सैकी और हर्बर्ट सैमुयलसे मिले। बातों-का साराश इतना ही है कि अभी उन्होने लंबी आशा नहीं दी है। सैकीने कहा कि तुम्हे खाली हाथ न जाने देगे, किंतु सैकी मिठ-बोला भी है। गांधीजी कहने लगे कि होर यदि ऐसी आशा दिलाये तो उसकी ज्यादा कीमत की जानी चाहिए। किंतु उसने ऐसी आशा नही दिलाई है।

मैने गांधीजीसे आज साफ ही पूछा कि आपको क्या आशा है? कहने लगे कि खाली हाथ जाना होगा। मैने कहा, पर संभव है कि इतना मिल जाय, जिससे आपको लड़ना न पड़े। कहने लगे, हां—ऐसा संभव है और उसीका प्रयत्न कर रहा हूं। होरने कहा है कि हमें तो कई दिनों तक आपसे बातोंका सिलसिला रखना होगा। यह स्पष्ट है कि अब आर० टी० सी० का महत्व नहीं है। जो काम होना है वह भीतर-ही-भीतर होगा। इर्विनने लिख दिया है कि मुझसे मिले बिना हर्गिज न तोड़ना। इन्होने भी लिख दिया हे, 'तथास्तु'।

यहांके कोई फौजी अफसर गदरके जमानेमें लूटपाट करके हिंदुस्तानसे कुछ जवाहरात ले आये थे। ज्यादा कीमती नहीं, पर कुछ मूल्यवान् तो था ही। पीढ़ी-दर-पीढी वह चीज उनके वंशमें चली आती थी। अब गांधीजी यहां आये तो उनकी ख्याति सुनकर उस वशके लोगोंको लगा कि गांधीजीके देशका हरामका माल रखनेसे तो हमारा नाश हो सकता है। आज उनके कुटुंबकी

स्त्रियां आईं और वह हार जो पुखराजका था गांधीजीके चरणोंमें रखकर कहने लगीं—हमारे पुरखे लूटकर भारतसे यह लाये थे, बहुत दिन रखा, अब आपके तपका बखान सुना तो रखनेकी हिम्मत नहीं होती। गांधीजीने हारको स्वीकार कर लिया। तपका ही यह चमत्कार है, वर्ना भेड़ियेके मुंहमें गया ग्रास वापस नही आता।

तेईस

९ अक्तूबर '३१

लंदन

अल्पसंख्यक-दल-कमेटीकी कहानी सारी-की-सारी दुःखद है। एक सप्ताह तक यह नाटक चला और अंतमें जहां-के-तहां! वही सीटोंका झगड़ा, वही अविश्वास! अंतमें छठे दिन किसीने प्रस्ताव किया कि कुछ पंच हों, उन्हें मामला सौंप दिया जाय। गांधीजीने पूछा, मुंजे! तुम्हारी क्या राय है? उत्तर मिला, मुसलमानोंसे पूछिए। मुसलमानोंसे पूछा तो कहने लगे कि सलाह करके बतायेंगे। रातको १० बजे फिर सभा बैठी। मुसलमानोंने कहा कि हमें मंजूर है, तो डा० मुंजेने भी कहा कि मंजूर है—किंतु सवाल उठा कि पंच कौन हो? डा० मुंजे बोले कि पंच कोई बाहरका आदमी हो। मुसलमानोंने कहा, नही—मेंबरोमेंसे कोई हो।

इस सारे नाटकको देखकर मुझे तो दुःख होता था। दोनों दलोमें परस्परके अविश्वासके अलावा और भी बात आगई है। नतीजा यह हुआ है कि गांधीजीका बोझ बढ़ता जाता है। दिन-रात काम करते हैं, ३ घंटेसे ज्यादा सोनेको नही मिलता। इनके बलपर ही यहां थोड़ी पूछ है, जिसपर तुर्रा यह कि हर तरहसे हमारे ही लोग इन्हें तंग करते रहते हैं। मुसलमान करें तो हम ला-इलाज हैं, किंतु हिंदू भी करते हैं। जिनसे आशा थी उन्होंने भी सहायता नही की। मैंने गांधीजीसे स्पष्ट कहा कि

आपको करना है सो करे। कहने लगे—"सो तो करूंगा ही, किंतु मुसलमान भी तो कहा मेरा साथ देनेवाले है ! और साथ देनेका जबतक वादा न करे तबतक मै आत्म-समर्पण करके क्या करूं ?" आज आखिर भरी सभामे गाधीजीने कह दिया कि मै तो हार गया, किंतु हारका यह भी कारण है कि यह सम्मेलन असल पंचोंका नही है, इसमे नकली पच है। बस इतना कहा, मानो मधुमक्खियों-के छत्तेको छेड़ दिया। शफी आपेसे बाहर। अबेडकरने तो जहर ही उगल डाला। कहने लगा, "महात्माको तो झूठा दावा करनेकी आदत है। छ करोड़ अछूत तो मुझे ही मानते है, इनको कोई पूछता भी नही।" प्रधान मत्रीने भी गांधीजीको खोटी-खरी सुनाई। मेरे बदनमे तो आग-सी लग गई। गांधीजी कहने लगे, शांत हो, हमारा रास्ता ठीक है; दूसरे क्या कहते है, इसकी क्या चिंता है।

चौबीस

२१ अक्तूबर, '३१
लंदन

इस सप्ताहका हाल तो अत्यत निराशा-जनक है। गत आर० टी० सी० मे कुछ तो आशा थी, पर इस बार तो सबके मुह फीके है। माया-जाल तो अंगरेजोने ही बिछाया था, किंतु उसमे हमारे अच्छे-अच्छे लड़वैये फस गये है। गाधीजी छटपटाते है, किंतु कोई असर नही हो रहा है। शायद गाधीजी कुछ उग्रता करे तो कुछ नया सिलसिला निकल आये। अभी गाधीजी भी **'सब धान बाईस पसेरी'** हो गये है। वही आदर है, वही सत्कार है। किंतु **"देबा लेबा नै तो भाया राम जी को नाम"** स्वराजका जो नकशा खीचा गया था, वह भानमतीका पिटारा था। राजा शामिल हों, अंगरेज भीतर हो, हिंदू-मुसलमान, सिक्ख, ईसाई, पारसी, मजदूर, व्यापारी, ऐंग्लो-इंडियन, अछूत सबको

अलग-अलग हक मिलें, सबकी संमति हो, तब विधान बने। जाति-पांतिकी कई कतर-ब्योंतें की गई और अब हमसे कहते हैं, पहले आपसमें समझौता करो। दुनियामें जो कहीं न हुआ, उसकी हमसे आशा की जाती है!

क्या इंग्लिस्तानमें ऐक्य है? कुछ भी हो, हमारे लिए तो हिंदू-मुस्लिम-ऐक्य जरूरी है। इस समय सारा-का-सारा झगड़ा पंजाबका है। जब कभी कोई समझौतेकी आशा होती है, तब सरकारी दूत दौड़ने लगते हैं। हिंदुस्तानसे खास अंगरेज आकर बैठे हैं, जो हिंदूको समझाते हैं 'तुम लुट रहे हो'; मुसलमानको समझाते हैं 'तुम मरे जा रहे हो, और सिक्खको अलग डराते हैं। मुसलमान कहते हैं, पंजाबमें हमारा बहुमत है, वह हमें मिले हिंदू कहते हैं, कानूनन बहुमतका सिद्धांत अन्यायमूलक है, ऐसे तुम्हारा बहुमत हो तो हम खुशीसे स्वीकार करें। तब एक नई स्कीम निकली। पंजाबमेंसे अंबाला, जिसमें अधिक हिंदू हैं, निकाल लिया जाय। इसका नतीजा यह होता है कि पंजाबमें मुस्लिम-बहुमत ६३ फीसदी बन जाता है और फिर मुसलमान पृथक् निर्वाचन या सुरक्षित सीटोंकी जिद्द नहीं करते। सिद्धांतरूपसे हिंदू विरोध नहीं कर सकते, किंतु जहां इस स्कीमकी चर्चा चली, कुछ नेता कहने लगे, "राम-राम! यह तो और भी बुरा!!"

पंचायतकी बात चली। गांधीजीने खूब जोर लगाया कि "पंडितजी, आप पंचायत मान लें। यद्यपि मुसलमान राजी नहीं हैं तो भी लोगोंपर जो बुरा असर पड़ा है, कम-से-कम वह तो रफा हो जायगा।" पर पंडितजी पंचायतके लिए तैयार नहीं। यहां लोगोंपर बुरा असर पड़ा है। उन्हें कहनेका मौका मिल गया है कि जब तुम्हारा मेल ही नहीं तब हम क्या करें? स्वराज-की लुटिया तो डूब चुकी, ऐसा अभी मालूम होता है। लोग जहाजमें स्थान खरीदने लग गये हैं। जहां जीवन-मरणका प्रश्न है वहां ऐसी लड़ाई अत्यंत घृणास्पद मालूम होती है। पंडितजीका चेहरा भी उतर गया है और उनके क्लेशका कोई ठिकाना नहीं।

इस सप्ताह पडितजी, गांधीजी, जिन्ना और सप्रूके बीच मैंने काफ़ी दौड़-धूप की और अब थक गया हूं । मुसलमानोंको न हमारा विश्वास है, न सीधी बातें है, न तय होनेपर ही पूरा साथ देनेको तैयार है। किंतु उनकी चर्चा फिजूल है। गांधीजी 'आत्म-समर्पण' कर देना चाहते है, बशर्ते कि मुसलमान उनका राष्ट्रीय मांगोंमें साथ दें । पर राष्ट्रीय मांगोमें साथ देनेकी उनकी हिम्मत कहां !

धीरे-धीरे अब राजा भी खिसकने लगे है । भानमतीके पिटारेमें कई सांप बंद थे। वे निकल-निकल भागते है । महाराजा बीकानेर कहते है, हम साथ है, किंतु—बस 'किंतु' पर अड़ जाते है। अछूतों और दूसरे लोगोंको तो अभी चिल्लानेका अवसर ही नही मिला है । हमारी इस सप्ताह में खूब हँसी हुई है,। ऐसी निराशाके भंवरमें गांधीजी प्रसन्न-मुख है। कहने लगे, शर्मिंदा बनके नही जायंगे, चिंता मत करो। गांधीजी भीतर-ही-भीतर मिलते रहते है और एक तरह से मैत्री बढ़ रही है। इस मैत्रीका शीघ्र कोई फल होनेवाला नही है। जवाहरलालजीके बहादुरीके खत आते रहते हैं।

कई चित्रकार, कई शिल्पकार बैठे गांधीजीके चित्र और मूर्तियां बना रहे है । गांधीजी बच्चोंसे खेलते रहते है। वही रंग, वही ढंग। न कभी यहांसे उन्हे आशा थी, न अब निराशा है। जिन्हे आशा थी, उनके ही चेहरे सूखे है।

बेंथलसे आज रातको फिर बातें चलेंगी । सिलसिला जारी है। इंडिया आफिसमे एक्सचेंजका दंगल फिर परसों होगा।

पच्चीस

१६ अक्तूबर, '३१

लंदन

हिंदू-मुसलमान-समस्याका ताजा हाल अब यह है कि मि०

जयकर और डा० मुंजे दोनों ही कुछ ठंडे हो रहे हैं। सिक्ख नही मानते, पंडितजी कुछ दृढ़तापूर्वक नही कहते। कार्बेटकी स्कीम है कि अंबाला डिवीजन पंजाबसे निकाल लिया जाय, जिसका परिणाम होता है कि पंजाबमें हिंदू प्रति सैकड़े प्राय: २२, सिक्ख १४, मुसलमान ६३ रह जाते हैं। मुसलमान शायद इस स्कीमको संयुक्त चुनावके साथ और बिना अलग 'कुर्सी' रखवाये मान ले। पर झगड़ा वैसे-का-वैसा ही है। महात्माजीको यह स्कीम पसंद आई है और शायद इसीका सिलसिला अब चलेगा। आज रातको और दोपहरको भी मुसलमानोसे महात्माजी बातें करेंगे।

नरेशोंका हाल भी बुरा है। संशयसे भरे पड़े है। उनसे भी अलग बातें होंगी।

होरसे फिर महात्माजी कल मिले। जितना ज्यादा मिलते है, उतना ही उससे प्रेम बढता जा रहा है, हालांकि दोनों उत्तर-दक्षिण है। परसों होरने भरी सभामे कह दिया कि फौज हम हर्गिज नही देंगे। उसपर महात्माजीने कहा, 'शाबाश! स्पष्ट-वक्ता हो तो ऐसा हो।' कल होरने पूछा, 'मैने आपको नाराज तो नही किया?' महात्माजीने कहा, 'नाराज नही, तुमने मुझे राजी किया; क्योंकि मुझे पता लग गया कि तुम ईमानदार हो, लल्लो-चप्पो नही करते। किंतु मैं यह कहना चाहता हूं कि मुझे अब यहां क्यों बैठा रखा है? मुझे भेज दो।" होरने कहा है कि "इतनी जल्दी न करे, मै अगले सप्ताहमें स्पष्ट कर दूंगा कि हम कहांतक जानेको तैयार है। आपने तो कोई बात छिपा नही रखी। मै भी कोई बात छिपाके नही रखूंगा।"

महात्माजी कहते थे कि यह आदमी तो सोना है और इसीसे मेरा काम बनेगा। सप्रू वगैरह तो सिर कूटते है कि यह राक्षस कहासे आ गया! उनकी दृष्टिमे वेन अच्छा था, इनके लिए होर अच्छा है। मुझे मालूम होता है, इतनी जल्दी महात्माजीको नही भेजेंगे, किंतु महात्माजी जो चाहते है सो नही मिलेगा।

मेरा तो अभी भी वही खयाल है कि दस आने मिलेंगे, छः आनेके लिए युद्ध होगा।

छब्बीस

२२ अक्तूबर, '३१
लंदन

आर० टी० सी० के कार्यमे तो कोई उन्नति नही हुई है। दिन-दिन स्पष्ट होता जाता है कि कुछ होनेका नही। हिंदू-मुस्लिम-वैमनस्य बना हुआ है और इसको यहा काफी तूल दे दिया गया है। प्राय. यही कहा जाता है कि जब तुम आपसमे ही समझौता नही कर सकते, तो हम क्या करे। महात्माजीको कितने ही लोग उलाहना देते है कि आप समझौता क्यो न कर लें, किंतु महात्माजी न तो मुसलमानोकी नीयत साफ देखते हैं, न हिंदू-सभाका उत्साह पाते है। इसलिए कुछ अवहेलना-सी कर रहे है। मुसलमान इनकी राष्ट्रीय मांगोंको स्वीकार कर ले और अन्य छोटी-छोटी दलबंदियोका साथ न दें तो समझौता कर ले—या तो हिंदू-सभावाले कारवेटकी या अन्य किसी स्वीकार करने लायक स्कीमका समर्थन करें तो समझौता हो।

वेथलसे भी कोई नई बात नही हुई। जो पहले हो चुकी, उसीका पिष्टपेषण जारी है। वह भी समझता है कि हम कमजोर है, इसलिए प्रगति धीमी है।

होरसे महात्माजीकी फिर बाते हुईं, किंतु अबतक कोई नतीजा नही निकला। होरने वादा किया है कि अगले हफ्ते स्पष्ट बतायेगा कि सरकार कहांतक जा सकती है? महात्माजी कुछ अधीर और उतावले-से होने लगे है, क्योकि उनको समयकी बरबादी अखरती है। इर्विनने कहा था कि कोई भी महत्वपूर्ण कदम रखनेसे पहले पूछ लेना। कल इर्विनसे मिलकर महात्माजी ने कहदिया किअब मैयहांसे भागनेवाला हू और एक-दो दिनमे ही

गोली चला दूंगा। इर्विनने कहा, "ऐसा नही हो सकता। अभी तो पावभर 'पूणी' भी नहीं कती।" इसके माने यह भी हो सकते हैं कि कुछ आशा है। चुनावकी धूमके मारे यहां लोग व्यस्त हैं। इनकी क्या स्थिति रहेगी, सो भी इन्हें पता नही। इसलिए २७ को अपना तलपट बांधकर बातें करेंगे। इस समय तो चाल यह है कि कान्फ्रेंस को तो बर्खास्त करें और एक नया कमीशन हिंदुस्तान भेज दें। अकबरने कहा था कि "**खींचो न कमानों को न तलवार निकालो, जब तोप मुकाबिल हो तब अखबार निकालो।**" अंगरेजोंका यह हाल है कि **'गर सामान बगलें झांकनेका है तो कमीशन बैठा दो।'** बस यही चाल है, मगर महात्माजी माननेवाले नही हैं। होरं समझानेकी कोशिश करता है, पर महात्माजी सिर हिलाते हैं।

मेरा ऐसा खयाल है कि यह नही मानेंगे तो वे कुछ आगे बढ़ेंगे, पर अधिक आशा नही है। महात्माजी स्वयं समझौतेके पक्षमें हैं, पर समझौता हो तो किससे ? कल कहते थे कि शायद हिंदुस्तान पहुंचते-पहुंचते लड़ाई छिड़ जाय। मुझे ऐसा मालूम होता है कि ऐन मौकेपर कोई घटना घट जायगी—हालांकि अभी तो कोई अच्छी सूरत नजर नही आती।

साथ ही यह जान लेना चाहिए कि यहां आनेसे हमें काफी लाभ हुआ है। महात्माजीकी मैत्री तो दूबकी तरह फैलती है। शहरके सेठोंसे कल सुना कि लोगोंपर प्रभाव पड़ा है। कहते हैं, गांधी आदमी तो अच्छा है। परसों यहांकी ठाकुरों और सेठोंकी सम्मिलित सभामें गांधीजीको बुलाया था। सारी राणखंमाण मौजूद थी। उनका असर अच्छा हुआ। बीज बोया गया है। और फिर लड़ाई छिड़ी तो यहां के बहुत लोग सहानुभूति जतानेवाले होंगे।

चित्र उतारनेवाले, मूर्ति गढ़नेवाले, हस्ताक्षर करानेवाले और वक्तव्य लेनेवाले गांधीजीके पास उसी रफ्तारसे आ रहे हैं। मुलाकातोंका तांता भी जारी है। वही धूमधाम है। खाली 'स्वराज' नहीं मिला है।

यहां सर्दी ४५ डिगरी तक पहुंची है। अभी तो नवंबर आना बाकी है।

गांधीजीको काम इतना रहता है कि रातको १ बजे सोते हैं—४ बजे उठ जाते हैं। एक दिन कहते थे, पता नही किस दिन बीमार पड़ जाऊं। सोनेको समय मिले तो फिर कोई चिंता नही। कपडे उतने ही चलते हैं। कवल बढानेको कहा तो कहते हैं, निभ जाती है। पंडितजीको तो जाड़ा ज्यादा सता रहा है। कपड़े भी यहा नये खरीदे है। स्वास्थ्य उनका अच्छा नही है। मानसिक पीडा भी तो है। इस समय उनकी यह स्थिति है कि न गांधीजीको छोड़ना चाहते है, न मुजे और नरेंद्रनाथको ही।

सत्ताईस

२३ अक्तूबर, '३१
लंदन

कल कुछ विशिष्ट लोगोंसे बातचीत हुई। कहते थे कि गांधीजीका प्रभाव अच्छा पड़ा है। इनकी सलाह थी कि यहांके सेठोको हम समझा सके तो काम बहुत-कुछ आगे बढ सके। ऐसे कुछ सेठोसे मिलनेका प्रबंध कर रहा हू। कल सर पुरुषोत्तमदास-की लेटनसे बातचीत हुई थी। यह 'इकनामिस्ट' (अथशास्त्री) नामक पत्रका सपादक है और 'साइमन कमीशन' का आर्थिक विषयोमें सलाहकार बनकर हिंदुस्तान गया था। उसने कहा कि हिंदू-मुस्लिम-झगड़ेको एक पंचायतके हवाले कर देगे।

अट्ठाईस

२९ अक्तूबर, '३१
लंदन

राजनैतिक परिस्थिति ज्यों-की-त्यों है। कोई खास बात नही हुई है। पर हम लोग बिल्कुल निराश नहीं हुए है। इसमे

संदेह नही कि कंजर्वेटिव पार्टीको चुनावमें आशातीत सफलता प्राप्त हुई है—इस तूफाने-बदतमीजीमें मजदूर-दल तो उड़ गया— यह समझना चाहिए। पर सरकार भी सुखकी नीद नही सो सकती। इस समय पार्लमेंटमें उसका विरोध नाममात्रको रह गया है। यह उसके लिए उतनी खुशीकी बात नही है। विरोधी साथ भले ही न दें, पर उनसे उपकार तो होता ही है। समालोचना सीधी राहपर रखनेका एक साधन है। सरकारके जबर्दस्त विरोधी हों तो वह भयंकर भूलोसे वहुत-कुछ बच सकती है। इस समय यह वात नही है, इससे सरकारको भी चिंता होने लगी है।

कुछ लोगोंका खयाल है कि यह ज्यादा समयतक न टिक सकेगी। मेरी अपनी राय दूसरी है। इतना मै निश्चयपूर्वक कह सकता हूं कि थोड़े ही समयमे यह सरकार अपनी लोकप्रियता से हाथ धो बैठेगी। परिस्थिति इतनी खराब है कि उसे सुधारना कोई आसान काम नही। यह भी याद रखनेकी बात है कि मजदूर-दलवाले हार जानेपर भी एक तिहाई—करीब ७,०००,०००—वोट पा चुके है। इसका अर्थ यह हुआ कि मजदूर-दलके साम्य-वादका समर्थन करनेवाले इस मुल्कमे ७० लाख आदमी मौजूद है। ये लोग चुप रहनेके नही। रोटी-दालवालोंको इसकी गहरी चिंता है और मेरा खयाल है कि सरकार हर काममे फूंक-फूंककर कदम रखेगी और जहांतक संभव होगा सबको संतुष्ट करनेकी चेष्टा करेगी।

हिंदुस्तानके वारेमे उनकी यह नीयत जरूर है कि जहांतक हो सके, कम दिया जाय—पर कान्फ्रेंस टूट जाय, यह उनकी इच्छा नही जान पड़ती। फौजको अपनी मुट्ठीमे रखना चाहते हैं। आर्थिक मामलोमे भी कुछ अधिकार चाहते है। गांधीजी यह चेष्टा कर रहे है कि हम लोगोकी एक राय हो जाय। हिंदू-मुसल-मानोंके बीच समझौता करानेके प्रयत्नमें वह निरंतर हैं ही, सप्रू और दूसरोके बीच राजनैतिक एकता करानेकी भी कोशिश कर

गाधीजी सर आगाखाँ के साथ

गाधीजी दर्शको के वीच

रहे हैं। समझौतेके लिए वह कांग्रेसकी मागसे कम लेनेको भी तैयार है—बशर्तेकि काग्रेस की कार्यकारिणीको यह मंजूर हो। उन्हें सफलता होगी या नही, यह मै नही कह सकता। इतनी सफलता उन्हें जरूर हुई है कि सब लोग उन्हे समझदार मानने लगे है।

बेंथलसे जो बातचीत चली थी, वह बीचमे रुक गई थी। शायद उन लोगोंने हमारी कठिनाइयोंको देखकर उनसे फायदा उठाना चाहा था। पर उसका सिलसिला फिर शुरू होनेवाला है। कल रातको बेथलसे मेरी बातचीत हुई। उसने कहा कि हम लोग सचमुच समझौता कर लेना चाहते है। बस इस तरह कुछ-न-कुछ काम रोज हो रहा है। इडिया आफिसवालोंको और यहाके सेठोंको समझाने-बुझानेकी कोशिशमे हम लोग लगे हुए है। कामको आपसमे बाट लिया है। सर पुरुषोत्तमदासके साथ मै तो आर्थिक विषयोंकी विवेचनामे लगा हुआ हूं। बेथल मुझसे कह रहा था कि जबतक हम लोगोंका किशके साथ कुछ समझौता नही हो जाता तबतक कुछ होने-जानेका नही। किश इंडिया आफिसमे अर्थ-विभागका मत्री है। बेथलकी बातचीतसे तो जान पड़ा कि वह हम लोगोंके सहयोगका बड़ा इच्छुक है। बात दरअसल यह है कि इन लोगोको भय है कि बिना हम लोगोके सहयोगके एक्सचेज और करेसीके पाव मजबूतीसे जम नही सकते। मैने उससे कहा कि सहयोग देनेके लिए मै हर घड़ी तैयार हूं। अगले सप्ताहमें यहांके अर्थशास्त्रियो और इंडिया आफिसवालोंसे बहुत-कुछ बातचीत होनेका रंग दीखता है।

अगर कान्फ्रेंस टूटी नही तो नवंबरके अंततक काम रहेगा। बाहरसे तो यही जान पडता है कि हम लोग आगे नही बढ़े है; पर भीतर-ही-भीतर कुछ-न-कुछ प्रगति होती जा रही है और काम—धीरे-धीरे ही सही—बनता जा रहा है। अगर कान्फ्रेंस टूट भी गई तो इतना तो लाभ जरूर होगा कि इस बार हम लोग जो मंजिल तय कर लेंगे, उसे फिर तय करना न पडेगा।

गांधीजी आजकल २४ में ३ घंटेसे ज्यादा नहीं सोते। काम-पर-काम आता ही जाता है। कहते थे कि मैं रोज कम-से-कम ८ घंटे सोना चाहता हूं, पर तीनसे ज्यादा नही मिलता। आर० टी० सी० की कमेटीकी मीटिंगमें बैठे-बैठे झपकी लेते हैं। सप्ताहके अंतमे लंदनसे कहीं बाहर चले जाते हैं। कभी किसी पादरीके यहा, कभी किसी भावुक या ईश्वर-भक्तके यहां ठहर जाते हैं। चित्र लेनेवालों और मूर्ति बनानेवालोंकी संख्या घट चली है, क्योंकि बहुतोंकी तृप्ति हो चुकी। अभीतक गांधीजीने कपड़ा-लत्ता उतना ही रखा है। फिर भी वह यहांकी सर्दी बर्दाश्त कर लेते है, यह आश्चर्यकी बात है।

उनतीस

३० अक्तूबर, '३१
लंदन

कल इंडिया आफिसमे एक्सचेंजके संबंधमें फिर कांफ्रेंस बैठी। ब्लैकेट और स्ट्राकोश दोनो ही मौजूद थे। अपनी ओरसे सर पुरुषोत्तमदास, गांधीजी, अध्यापक शाह, जोशी और मैं था। छोटी सभा होनेके कारण इसे विशेष सफलता प्राप्त हुई। लोगोंने दिल खोलकर बातें की। स्ट्राकोशने वही पुराना राग अलापना शुरू किया, पर ब्लैकेटने बड़ी खूबीसे उसे निरुत्तर-सा कर दिया। हम लोगोंको इसपर आश्चर्य हुआ और संतोष भी। ब्लैकेटने कहा कि हिंदुस्तानके लिए इस समय चीजोंका दाम बढ़ना बहुत हितकर है और मैं चाहता हूं कि वहां दाम फीसदी ४० तक बढ चले। हां, वह यह न बता सका कि दाम कैसे बढ़ाया जाय। मैंने कहा कि रुपयेको फिलहाल अपनी राह जाने दो और जब रिजर्वमें काफी सोना इकट्ठा हो जाय, तब १ शिलिंगपर इसे बांध दो। वह इससे सहमत न हो सका।

मैंने गांधीजीसे कहा कि आप अब इनसे एकांतमे बातें करें।

मैंने स्ट्राकोशको भोजनके लिए अगले मंगलवार (३ नवंबर) को निमंत्रित किया है। क्लैकेटको भी बुलानेवाला हूं। क्लैकेट 'बैंक आव् इंग्लैंड' का डाइरेक्टर है और वह चाहता है कि इंग्लैंडमें दाम फीसदी ३४ बढ़ जायं। कल बेंथलसे फिर बातें हुईं। उसने कहा कि अर्थ-विभागकी देख-रेखके लिए एक कौंसिल बना दी जाय। हम लोग सहमत नहीं हुए। पर इससे जान पड़ता है कि वह अभीतक सीधी राहपर नहीं आया है।

इंडिया आफिसका शास्त्रार्थ समाप्त होगया। गांधीजीने अपना निर्णय हमारे पक्षमें दे दिया। गांधीजी इस मसलेको छोड़ना नहीं चाहते हैं। होरसे कहनेवाले हैं कि तुम मुझे नहीं समझा सके। या तो मेरा संतोष करो, नहीं तो मैं अपनी राय तुम्हारे खिलाफ दूंगा।

तीस

३ नवंबर, '३१

लंदन

होर विधान-निर्माण-परिषदके काममें ज्यादा दिलचस्पी लेने लगा है। एक सप्ताहमें परिस्थिति बहुत-कुछ स्पष्ट हो जायगी।

गांधीजी इन लोगोंकी अवहेलना कर मुसलमानोंसे समझौता कर लेते, पर उनकी तीन शर्तें हैं.

(१) समझौता कांग्रेसको मंजूर हो।

(२) राष्ट्रवादी मुसलमान और सिक्ख भी इसे मंजूर करें।

(३) मुसलमान उनकी प्रत्येक राष्ट्रीय मांगका समर्थन करनेको तैयार हों।

गांधीजीका यह भी कहना है कि अछूत, यूरोपियन, ऐंग्लो-इंडियन और देशी ईसाई—इनको पृथक् निर्वाचनका अधिकार

न दिया जाय। मुसलमान न तो इसका समर्थन करते हैं, न उनकी दूसरी राष्ट्रीय मांगोंका। इसलिए गांधीजी इस प्रश्नकी ओर विशेष ध्यान नही दे रहे है। वह जानते है कि उनकी ताकत क्या है। उन्हें अच्छी तरह मालूम है कि मुसलमानोंको उनसे जितना मिल सकता है, उतना सरकार या पंचायतसे नहीं। उनका विश्वास है कि आज या कल मुसलमानोंको उनके पास जाना ही होगा। सरकारसे तो उन्होंने कह दिया है कि तुम जजोंसे इसका फैसला करा लो—पर मुसलमानोंको यह मंजूर नही है। मालूम नही, सरकार क्या करेगी।

अपने कुछ हिंदू नेताओंसे मेरी शिकयात यह है कि उन्होंने गांधीजी के हाथोंमे इस मामलेको न छोड़कर इस आक्षेपके लिए गुंजाइश कर दी कि न तो मुलसमान उनका नेतृत्व स्वीकार करते हैं, न हिंदू; फिर महात्माजी प्रतिनिधि है तो किनके? मगर हम लोगोंने एकमत हो यह कह दिया होता कि 'गांधीजी जो कुछ करेंगे, हमें स्वीकार होगा तो हिंदू-मुस्लिम-समस्या हल होती या नही, यह दूसरी बात है, पर इसमे संदेह नही कि इससे हमारी ताकत कही बढ़ जाती और हम आज दुनियाकी निगाहमें कही ऊंचे होते। इन लोगोकी दलीलकी तहमें जो भयंकर कमजोरी है, उसे ये देखनेमे असमर्थ हैं।

गांधीजी प्रधान मंत्रीसे मिले। कोई खास नतीजा न निकला। परिस्थिति न तो आशाजनक है, न निराशाजनक।

इकतीस

५ नवंबर, '३१
'लंदन'

इस सप्ताहमें महात्माजीने मैकडानल्ड, होर और बाल्डविन-से बातें कीं। बातोंका नतीजा यह निकला है कि आगामी मंगल और बुधको मंत्रिमंडल भारतके विधानके संबंधमें विचार करके

अपने निर्णयपर पहुचेगा। बुध या बृहस्पतिको अल्पसख्यक-दल परिषद् या विधान-निर्माण-परिषद्का आह्वान करेगा और प्रधान मत्री अपनी राय खुल्लमखुल्ला जाहिर कर देगा। उसके बाद उसे हम चाहे स्वीकार करे या अस्वीकार करें या उसपर बहस करे। हो सकता है कि बहसके बाद उसमे कुछ रद्दोबदल भी हो। पर यह कठिन मालूम होता है। हिंदू-मुस्लिम-समस्या भी किस तरहसे हल हो, इसका निर्णय प्रधान मंत्री दे देगा। इसलिए यह कहा जा सकता है कि आगामी सप्ताहमे हमारा भविष्य नक्की हो जायगा। शायद २०-२५ नवबर तक हम यहासे कूच कर जाय। क्या होगा, यह कहना तो आसान नही है, किंतु गत कांफ्रेससे ज्यादा आगे न बढेगे, यह स्पष्ट मालूम होता है। यह भी चाल है कि प्रांतोको अभीसे स्वातत्र्य दे दे और केंद्रके विधानको खटाईमे डाल दे। किंतु हम लोगोने एकमतसे निर्णय कर लिया है कि इसे कभी स्वीकार नही करना। यह चाल मुसलमान और अग्रेज मिल-कर कर रहे है, जिससे भविष्यमे पजाब बराबर चिल्लाता रहे कि हमे केंद्रीय स्वराज नही चाहिए और इस तरह विलंब होता रहे।

महात्माजी साप्ताहिक विश्रामके लिए दो दिन (शनि और रवि) बाहर जाते है। अबकी बार पर्य्यटन आक्सफोर्डकी ओर होगा। साथमे प्रधान मत्रीका लडका, लार्ड लोथियन, अध्यापक गिलबर्ट मरे आदि प्रतिष्ठित व्यक्ति रहेगे और दो दिन आपसमे बाते होती रहेगी।

कल महात्माजीने कुछ स्वयभू नेताओ से कहा कि "मैने तो प्रधान मत्रीसे कह दिया है कि ये लोग तो तुम्हारे मेहमान है। यदि ये प्रतिनिधि बननेका दावा करे, तो इन्हे चुनावसे आने दो। देखो, इन्हे कितने वोट मिलते है और मुझे कितने वोट मिलते है।"

महात्माजीकी इस तरह बाते करनेकी आदत नही है। यह घटना प्रकट करती है कि इन लोगोंने उन्हे कैसी ठेस पहुंचाई है। कल मैंने कहा कि यह स्थिति अत्यत भयंकर है कि साम्प्रदायिक

संस्थाएं कांग्रेसकी देवराणी-जेठाणी बननेकी कोशिश करें। स्वराज के लिए लडाई तो लड़े कांग्रेस, और यहां आनेपर ऐसे लोग कूद-कूदके कहें कि हिंदुओके प्रतिनिधि हम है, महात्माजी नही। फिर तो सहज ही प्रश्न उठता है कि आखिर महात्माजी किसके प्रतिनिधि है ? इन लोगोंने संग्राममें तो कोई स्वार्थत्याग किया नही, अब टांग अड़ानेको और महत्माजीकी तौहीन करनेको यहां भी पहुंच गये। महात्माजीने कहा कि "मेरी दवा तो हिंदूसमाजको प्रिय नही, वह समझता भी नही कि मेरी दवा क्या है। गुंडेपनकी दवा गुडापन है, ऐसा ही वह मानता है। ऐसी हालतमें जबतक हिंदू मेरी दवाका मर्म न समझे, हिदूसभाको अपने कब्जेमें करना मै मुनासिब नहीं समझता।" मै तो यह कहूंगा कि हिंदूसभा को चाहिए कि वह हिदुओको मजबूत बनाये, रीतिरस्म, अछूतपनमें सुधार करे, शिक्षा-दीक्षाका प्रबंध करे, किंतु राजनीतिमें कांग्रेस-की प्रतिस्पर्धा करना भयंकर मालूम होता है। आखिर कांग्रेसने लुटा क्या दिया ? महात्माजीके 'आत्मसमर्पणका' भी तो नतीजा देख लेना चाहिए।

बाल्डविनने तो महात्माजीसे साफ ही कह दिया कि आप जो चाहते हैं सो आपको नहीं मिलेगा। मैंने महात्माजीसे कहा कि यदि आठ आने भी मिलेंगे तो आपके बलपर—इसलिए आप यहां-से हर्गिज न भागे। महात्माजीने कहा—"मै जानता हूं। भागूंगा नही।" उनकी चाल यह है कि कम मिले तो स्वीकार नही करना। जितना खैच सके, उतना खैचकर कह देना कि जो कुछ तुम दे रहे हो, वह मुझे तो स्वीकार नही है।

काश्मीरके संबंधमें यहा बड़े जोरोसे मुसलमानोंका पक्ष है। यह ध्यान रहे कि देना इन्हें न हिदुओंको है, न मुसलमानोंको— किंतु पीठ उनकी ठोंकते है और हमसे लड़ाते हैं।

रातको एक भोजमें मुझे निमंत्रण था। एक पुलिस अफसर, जो कभी हिंदुस्तानमे था, बगलमें बैठा था। एक ओर पोलिटिकल

महकमेका एक उच्च सरकारी अफसर बैठा था। दोनो ही अंगरेज थे। पुलिसवालेने कहा कि "हिंदू-मुस्लिम-झगड़ा तो फैलाया हुआ है, मैंने खुद देखा है कि आज भी गांवोमे यह समस्या नही है।" उसने मुझे एक किस्सा सुनाया। सरहदसे तीन दिनके रास्तेपर एक किलेमे इनकी फौज थी। एक बनिया रसद देता था। उसके मर जानेपर इनकी फौजके मुसलमान सिपाहियोने कहा कि इसे हिंदुस्तान जलानेको भेजना चाहिए। अफसरने कहा कि— तीन दिनका रास्ता है, कहां भेजेंगे ? यही गाड दो। किंतु मुसलमानोंको यह पसंद न आया। आखिर उन्होंने अपने खर्चसे लकड़ी जुटाई, उसकी अर्थी सजाई और बैंड बजाते स्मशानमे ले गये। अफसर मुझसे कहता था कि कई सिपाही तो रोते थे। उसने मुझसे पूछा—बताओ, हिंदू-मुस्लिम-समस्या कहा है ? मैंने कहा कि क्या बताऊ, तुमने ही तो फैलाई है। बगलके पोलिटिकल महकमेवाले अफसरने एक मुस्लिम नेताकी ओर, जो भोजमें शरीक था, इशारा करके कहा कि काश्मीर की आधी आधी इस शख्सने उठाई है। बात यह है कि यहां भी करतूत सरकारकी ही है। अफसर जानते हैं, सब लोग जानते हैं—फिर भी हमारे आदमी अंधे हैं।

अछूतोंकी मागका महात्माजी विरोध करते है। कहते है कि मैं इनको कैसे अलग कर दू ?

बत्तीस

६ नवंबर, '३१

लंदन

कल गांधीजी और हम सब लोग सम्राट्के मेहमान थे। सब करीब ४०० थे। कितने लोग तो देशी पोशाकमे थे। मैं तो देशी पोशाक ले ही नही आया था, इसलिए "चिमनी" हैट ओढ़कर ही गया था। महलमे बिजलीकी चकाचौंध—और काली

पोशाकवालोंके बीच गांधीजी नंगे पांव और चद्दर ओढ़े ऐसे मालूम होते थे जैसे अमावस्यामे चद्रमा । सम्राट् और सम्राज्ञी सिहासन-भवनमें एक तरफ खड़े हो गये और हम लोग अभिवादन करते हुए सामनेसे निकल गये । सब लोग अभिवादन कर चुके, तब सम्राट् और सम्राज्ञीने चुने हुए लोगोंको बुला-बुलाके बातें करना शुरू किया । पहले हैदराबादके मंत्री, फिर मैसूर, फिर बड़ौदेका मंत्री । इसके बाद गाधीजी बुलाये गये । खड़े-खड़े करीब सात मिनिट बातें हुई ।

बातचीतमें प्रधान भाग सम्राट्का ही था । गांधीजी हँसते गये, बोले बहुत कम । सारांश सुननेमे यह आया ।

सम्राट्ने कहा कि "मै आपको अच्छी तरह जानता हूं । जब मै युवराजकी हैसियतसे दक्षिण अफ्रीका गया था, तब आपने भारतीय प्रजाकी ओरसे मुझे सम्मानपत्र प्रदान किया था । जुलू-संग्राममे भी आपने सहायता पहुंचाई । उसके बाद महासमरमें आपने और आपकी धर्मपत्नीने बड़ी सहायता की । अफसोसकी बात है कि उसके बाद आपका रुख बदल गया और आपने सत्याग्रह इख्तियार किया । आप जानते है कि सरकारके लिए अपनी हुकूमत कायम रखना जरूरी है—शासन तो आखिर करना ही पड़ता है ।"

गांधीजीने कहा कि, श्रीमान्के पास इतना समय नही और मै प्रत्युत्तर देना भी नही चाहता । सम्राट्ने कहा, ठीक है, किंतु शासन तो करना ही पड़ता है । फिर उन्होंने बंगालकी बमबाजीका जिक्र किया और कहा कि यह बहुत बुरी चीज है, इससे कोई लाभ नही हो सकता ।

गांधीजीने कहा कि मै उसे रोकनेकी भरपूर चेष्टा करता रहता हू ।

फिर सम्राट्ने पूछा—मैंने सुना है कि आप बच्चोंको खूब प्यार करते है, यह सच है ?

गाधीजीने कहा कि मै बच्चोंके बीच ही रहता हूं ।

गाधीजीका सम्राट्से मिलना राष्ट्रीयताकी विजय है। यह पहला मौका है कि इस तरह एक अर्द्धनग्न मनुष्य और साथमें महादेवभाई गांधी टोपी पहने सम्राट्से मिले। साथ ही, इससे अंगरेज-जातिकी भी एक खूबीका पता चलता है। अगरेज बनिये है, स्वभावसे ही सग्रामप्रिय नही। प्रिस ऑव् वेल्सकी गांधीजीने 'अवज्ञा' की, तो भी सम्राट् उनसे सौजन्य-पूर्वक मिले। राजपूतोंके इतिहासमे और ही प्रकारके उदाहरण मिलेंगे। महाराणा उदयपुर ने अलवर-नरेशको कभी "महाराज" कहके संबोधित नही किया। "अलवर ठाकुरसाहब" ही कहते रहे। अगरेज सरकारने तोपो की सलामी दी—हिज हाइनेस तक कहा—मरते समय महाराज जयपुरने ढिलाई कर दी—मगर राणा अकड़े ही रहे।

'नानक' नन्हे ह्वै रहो जैसे नन्हीं दूब।
घास-पात जल जायंगे—दूब खूब की खूब ॥

तेतीस

१२ नवंबर, '३१
लंदन

हिंदू-मुस्लिम-समस्यामे कोई फेर नही पड़ा है। गाधीजी तो इस सबधमे बाते करनेसे भी इकार कर देते है। कोई बाते करने आता ह, तो कह देते है कि मेरे समय की बरबादी न कीजिए। मुसलमानोंने चाहा भी कि फिर बात छेड़े, किंतु गांधीजीने कोई प्रोत्साहन नही दिया। बात यह है कि मुसलमान और सिक्खोको छोड़कर बाकी अंगरेज, ईसाई, अधगोरे, अछूत,जमीदार, व्यापारी और मजदूर इनमे किसीको भी अलग 'कुर्सी' नही देना चाहते। मुसलमान दिखानेको तो अछूतोका पक्ष करते है, किंतु असलमे अंगरेजोंको 'कुर्सी' न मिले, यह कहनेकी किसीकी भी हिम्मत नही है। कोई अछूतोंकी सिफारिश करने आता है, तो महात्माजी गरम

हो जाते है। और कह देते है कि तुमको अछूतोंकी क्या खबर! अछूतोंका मुखिया तो मै हूं।

मुसलमान ५१ के बजाय ५० भी लेनेको तैयार हैं, ऐसी हवा आती है। महात्माजी कहते हैं कि "५१ ही लो, किंतु और किसीको कुछ नही मिलेगा। मैं भारतवर्षका बटवारा करने नही आया हूं। मुसलमानों और सिक्खोंको किसी तरह मैने बरदाश्त कर लिया। अब और ज्यादा गुजाइश नही है।" मजा यह है कि पांच हिंदू एक स्वरसे अछूतोंको सीट दिलानेके पक्षमें है और अलग मताधिकार भी। गोया हिंदू-जातिका बंटवारा हो रहा हो।

गत रविवारको आक्सफोर्डमे महात्माजी, लार्ड लोथियन, मैकडानल्डका बेटा और इर्विनके प्रतिनिधि इकट्ठे हुए। महात्मा-जी ने यह स्कीम दी कि सच्चा प्रांतीय स्वराज तो शीघ्र ही स्थापित कर दिया जाय। केंद्रीय स्वराजका विधान चाहे तैयार न हो; किंतु रूप-रेखा अभीसे घोषित कर दी जाय। प्रांतीय परिषदोंका नया चुनाव हो और उन चुनिंदा लोगोंमेसे प्रांतीय परिषदें अपने प्रतिनिधि नई गोलमेज-परिषद्के लिए मनोनीत करें और वह नई गोलमेज-परिषद् केंद्रीय स्वराजके लिए घोषित रूप-रेखाके अनुसार नया विधान तैयार करे। सप्रू वगैरह इससे बड़ी घबराहटमे पड़े है। वह इसलिए कि सरकार नामधारी स्वराज देकर केद्रीय स्वराजको ढीलमें डाल सकती है। उनकी यह आशंका सही भी है; क्योकि सरकारकी नीति भी कुछ ऐसी ही है। और अब उन्हें गांधीजीका सहारा मिल गया। किंतु गांधीजी कहते हैं कि "यदि वे आगे न चले तो मुझे क्या डर है! मै उनसे अच्छी तरह लड़ लूगा। तुम लोगोमें आत्मविश्वास नहीं है, इसलिए तुम लोग ऐसी बाते करते हो।"

गांधीजी इस गोलमेज-परिषद्से उकता गये है। यह परिषद् एक तरहसे बावन भेषकी टोली बन गई है। लोग अपना अलग-अलग स्वर निकालते रहते है। हिंदुस्तानकी तो किसीको भी नहीं

सूझती। आर० टी० सी० का मजमा ऐसा बन गया है, जैसे बीस बाजोमें, अलग-अलग स्वरमे, एक ही साथ भिन्न-भिन्न राग गाये जायं। गांधीजीकी चालमे एक तरहसे दूरदर्शिता है सही; किंतु इसका फल तभी हो सकता है जबकि हम लोग अपनी ताकत बनाये रखें।

इस सप्ताहमे होरसे वार्तालाप होनेवाला था, पर वह बीमार पड़ गया। आज महात्माजी और होरके बीच वार्तालाप होगा। पंडितजी और प्रधान मन्त्रीके बीच कल बाते हुई थी। उससे यह आभास मिला कि केंद्रीय स्वराजका तो केवल वादा कर देंगे और प्रातीय स्वराजकी अभीसे घोषणा करके आगामी अगस्त तक कानून पास करा देंगे। प्रधान मंत्रीने कहा कि आप लोग जब अपना झगड़ा तय नही कर सकते, तब हमसे क्या आशा कर सकते है! इर्विनने भी पुरुषोत्तमदाससे कहा कि तुम्हारे झगड़ेने तुम्हारा काम बरबाद कर दिया। यह सही है, किंतु यह भी है कि कुछ लोग जो सरकारसे खा गये है, अपना-अपना पक्ष जोरसे खैंचकर समझौता नहीं होने देते और ऐसे-ऐसे खानेवाले लोग आज नेता बन बैठे है।

अभी एक योजना और गढी जा रही है। मुसलमान, अछूत, अगरेज, अधगोरे, ईसाई—आपसमे एक संधिपत्र तैयार कर रहे है। किंतु इसमे भी अगरेज अपनी शक्ति कायम रखना चाहते है, सो उनके बीच भी अभी तक कोई समझौता नही हुआ है। मुझे तो कोई समझौता होनेकी आशा भी नही है। हमारे प्रधान जमाल-मोहम्मद साहब बेचारे खूब दौड़-धूप करते है और अपना सौजन्य भी साबित कर दिया है। वह कहते है कि जिन्ना राष्ट्रवादी है, तुम्हारे पीछे मुसलमानोंसे खूब लडता है। यह यहांकी हालत है।

आज यहां आये करीब दो महीने हो गये और हम लोग एक तिल भी आगे नही बढ़े है। क्या होगा यह भी पता नही है। गोल-मेज परिषद्का यह दो महीनेका इतिहास बड़ा दर्दनाक है। हम लोग कितने निकम्मे है, यह लोगोने यहां साबित कर दिया। ऐक्य

तो है ही नही। सब लोग अपना-अपना मान बढ़ानेकी फिक्रमे है। इस मर्जसे शायद ही कोई बचा हो। गांधीजी हमारे कप्तान हैं और उन्हें सहायता पहुंचानी चाहिए, इसकी किसीको भी चिता नही। इसका कारण यही है कि ये सब-के-सब सरकार द्वारा मनोनीत किये गये है। यदि प्रजा द्वारा मनोनीत किये गये होते तो यह नौबत न आती। इर्विन-गांधी-समझौतेके समय जो दृश्य था, वह यहां देखनेमे नही आता। वल्लभभाई, जवाहरलाल इत्यादि किसीने वाइसरायके घरकी तरफ भी जाकर नही ताका, और सारा भार गांधीजीपर छोड दिया। यहां यह हालत है कि गांधीजी प्रधानसे मिलते हैं तो उसके बाद ही मुसलमानोंके नेता आगाखांसे मुलाकात होती है। फिर अछूत नेता अंबेडकर—सिक्ख नेता उज्जलसिह आदिसे मुलाकात होती है और नरमदलके नेता डाक्टर सप्रूसे। और इन मुलाकातोमे सब लोग अपना अलग-अलग वक्तव्य देकर आते है। हमारी अनेकता ऐसी साबित हुई, जैसी पहले कभी नही हुई। ब्रिटिश कूटनीतिकी सोलहो आने विजय हुई है। सब बातें लिखनेसे तो अत्यत दुःख होता है, क्योंकि हमारे बड़े नेताओंने भी यहां अपने सम्मानके मोह-जालमे फंसकर एकताको कैसे नष्ट कर दिया है, उसका दुःखदायी प्रदर्शन मिलता है। भविष्यमें जब कभी समझौतेकी बात उठें तो पहली शर्त यह हो कि जो लोग मनोनीत हों, वे प्रजाद्वारा निर्वाचित हों—जिससे, कम-से-कम, कांग्रेसका बहुमत आ जावे और निर्वाचित लोग एक डोरमें बंधे हुए हों। यहां तो यह हालत हैं कि

नाइयोंकी बारातमे सभी ठाकुर।

आर्थिक प्रश्नोंके सबंधमे बेथल और हम लोगोंके बीच टूटी-फूटी बातें चली आ रही है। अभी तक बैंक आव् इग्लैंडके परिचालकोंसे कोई वार्तालाप नही हुआ, किंतु बेंथल और कैटोने सूचना दी है कि यहांके सेठ लोग हमारे आर्थिक क्षेत्रपर कोई अधिकार नहीं चाहते, बशर्ते कि हम उनसे रुपया उधार मांगनेको न आयें।

चौतीस

१३ नवंबर, '३१
लंदन

कल होरसे गांधीजी मिले। परिस्थिति बिल्कुल स्पष्ट होगई। प्रांतीय स्वराजको छोड़ और कुछ मिलनेवाला नहीं है। होरने कहा कि बाकी बातोंकी जांच-पड़ताल की जायगी, फिर निश्चय किया जायगा कि क्या करना चाहिए। गांधीजीने कहा—इसका यह भी अर्थ हो सकता है कि जांच-पड़तालमें २-३ साल लग जाय। उसने कहा—हां, हो सकता है। गांधीजी बोले—और संभव है, अंतमें यह निश्चय हो कि कुछ भी न दिया जाय। उसने यह संभावना भी स्वीकार की। सो इस आर० टी० सी० का नतीजा यह निकला! गांधीजीने कहा—"बहुत खूब! हम एक-दूसरेसे मित्रता रखते हुए ही अलग हों—यही मेरी आंतरिक इच्छा है।" गांधीजी बहुत शीघ्र यहांसे प्रस्थान करनेवाले हैं—कहा जाता है, एक सप्ताहके भीतर ही। तैयारी शुरू कर दी है।

आज अल्पसंख्यक-दल-परिषद्की बैठक थी। प्रधान मंत्रीने कहा कि अगर इस प्रश्नका निर्णय मुझपर छोड़ना है, तो बाकायदा अपनी-अपनी स्वीकृति मुझे दे दो। उसने यह भी कहा कि विधान-निर्माण-परिषद्की बैठक अगले सप्ताह होगी। यह किसलिए? जब केंद्रीय स्वराजकी संभावना ही नहीं, तब इस परिषद्का काम ही क्या है? कुछ लोगोंको इससे आशा होती है कि होरने जो कुछ कहा वह अंतिम शब्द नहीं है—या कम-से-कम परिस्थिति उतनी निराशाजनक नहीं है। पर वास्तव में आशाके लिए गुंजाइश बहुत कम—शायद नहींके बराबर—रह गई है। गत मई महीने में विलिंगडनने सप्रू और जयकरसे कुछ ऐसी ही बातें की थीं। कहा था कि फिलहाल प्रांतीय स्वराज मिल जाय तो क्या बुरा है? जो बात इतने दिनोंसे दिलमें थी, वह अब निकलने लगी है।

अब इर्विन भी कह रहा है कि बात मेरे बसकी नहीं---लोग यह कह रहे है कि जब बायकाट बंद नही हुआ, तब तुम्हारे और गांधीके बीचके समझौतेका मूल्य क्या समझा जाय ?

अल्पसंख्यक दलोंके बीच जिस समझौतेकी चर्चा थी उसका मसविदा निकल गया। इसमें सिक्ख शामिल नही है। हिदुस्तानी ईसाइयोंके यहां जो दो प्रतिनिधि है उनमे डा० दत्तने न तो इस बातचीतमे ही कोई भाग लिया है न इसमे शरीक ही हुए है। इस समझौतेमें ऐसी बाते जरूर हैं, जिनपर आपत्ति की जा सकती है। पर यह कैसे मान लिया जाय कि इसमें काट-छांटकी गुंजाइश नही है ? भिन्न-भिन्न दलोंके जो नेता बनकर यहां आये है उनके लिए यह कलंककी बात रहेगी कि ऐसे महत्वपूर्ण अवसरपर भी वह अपनी संकीर्णताकी तंग गलियोंको छोड़कर राष्ट्रीयताकी---एकताकी---चौड़ी सड़कपर न आ सके। अफसोस !

अगर विचारपूर्वक देखा जाय तो अल्पसंख्यक दलोंकी यह संयुक्त मांग भी इतनी भयंकर नही है कि आपसमें समझौता होनेकी आशा ही त्याग दी जाय। यूरोपियन जितनी कुर्सियां मांगते हैं उतनी उन्हें नही मिल सकती। पर वह भी जानते है कि वह इससे कमके हकदार है और कुछ कम कर देनेपर भी वह संतुष्ट हो जायंगे। अछूतोसे यह समझौता होना असंभव नही दीखता कि तुम्हें इतनी कुर्सियां दे दी जायंगी, पर तुम्हे संयुक्त निर्वाचन स्वीकार करना होगा। ईसाई, ऐंग्लो-इंडियनको भी कुछ-न-कुछ देना ही होगा। सवाल पंजाब और बंगालका रह जाता हैं। अगर घड़ीभरके लिए मान लिया जाय कि मुसलमानोंको ५१ फीसदी मिल गया तो आखिर इससे क्या हो जायगा ? प्रलय उपस्थित हो जायगा ? ५०-५० पर समझौता हो सकता है। अगर यह कहा जाय कि मुसलमान और अंगरेज मिलकर हर हालतमे हिंदू-सिक्खसे अधिक रहेंगे तो इसके खिलाफ यह दलील भी है कि मुसलमानोंके सारे वोट एक ही ओर पड़ेंगे, "यह

मान लेनेकी कोई वजह नही है। राजनीतिज्ञता, दूरदर्शिता—इन गुणोंको अपने शासकोंमे देखनेकी हमारे नेता प्रायः इच्छा प्रकट किया करते हैं। कम-से-कम इस मौकेपर इन्हे भी तो इन गुणोंका परिचय देना चाहिए था। भारतवर्ष-जैसे देशका भविष्य गढ़ने चले है, पर अपना-अपना हठ, दुराग्रह, तअस्सुब, तंगदिली घड़ीभरके लिए भी छोड़नेको तैयार नही हैं।

ब्रिटिश कूटनीतिके लिए हमारे इन नेताओंनेसारा मार्ग बहुत ही सुगम और परिष्कृत कर दिया। अगर हमारी एकता होती तो उसकी ऐसी पूरी विजय कभी न होती। जिन महत्वपूर्ण प्रश्नोंपर ब्रिटिश सरकारसे, ब्रिटिश पूजीपतियोंसे, दरअसल बातचीत करने के लिए यहां गांधीजीकी जरूरत थी, उनकी तो उनसे चर्चा ही नही की गई। अपने शत्रुओको यह जीत बहुत ही सस्ते दामों मिली।

पैंतीस

१६ नवंबर, '३१

लदन

आशाकी लता मुरझाकर फिर कुछ हरी हो चली है। अंगरेज व्यापारी दौड़-धूप करने लगे है, अधिकारियोंकी ओरसे भी चेष्टा हो रही है कि बातचीतका सिलसिला जारी रहे। कान्फ्रेंस तोड़ देना आसान काम है—पर सभी समझते हैं कि इसका नतीजा क्या होगा। जो बातचीत चल रही है, उसमे हमारे शत्रुओंकी ओर कितनी सचाई है, कहना कठिन है। कान्फ्रेंस टूटनेकी संभावना से वे कुछ लज्जित हुए हैं—कुछ भयभीत भी। शीघ्र ही स्पष्ट हो जायगा कि बातचीत आगे बढ़ानेमें उसका वास्तविक उद्देश क्या था।

वेथल कल आप-ही-आप मुझसे मिलने आया। कुछ चिंतित-सा था। कहा कि फसादकी जड़ होर है, वही विरोध कर रहा

है, पर हमने अपने दलकी ओरसे उसे लिखा है कि अगर कान्फ्रेंस टूट गई—उसका उद्देश सिद्ध न हुआ—तो इसका परिणाम भयंकर होगा और हम लोग भी उसके लिए तैयार नहीं है। बेंथल-का कहना है कि मंत्रिमंडलमें होर प्रभावशाली जरूर है, पर उसकी चलेगी नहीं। मैंने कहा कि तुम लोगोंने मुसलमानों और अछूतोंके प्रतिनिधियोंसे इकरारनामा करके समस्या और भी जटिल कर दी है। उसने कहा कि हम लोगोने कोई इकरारनामा नही किया है। हमने तो एक तरहसे दर्ख्वास्त की है कि हमारा यह हक है—हमें शासन-विधानमे यह अधिकार मिलना चाहिए। जब मैंने कहा कि तुम लोगोंको प्रतिनिधित्वका अधिकार दूसरे ढंगसे भी मिल सकता है तब उसने कहा कि मुझे इसका रास्ता बताओ, हम लोग उसपर विचार करेंगे। मैंने कहा कि तुम पहले मुसलमानो-को इस बातके लिए राजी करो कि हिंदू-मुस्लिम-सिक्ख-प्रश्न-को वह प्रधान मंत्रीपर छोड़ दें। उसने कहा कि मुसलमान औरों-को छोड़कर निपटारा करानेको कभी तैयार न होंगे। अंतमें यह तय हुआ कि बेंथल और कार मेरे यहां महात्माजीसे मिलें।

रातको ९॥ बजे सब मिले। महात्माजीने अंग्रेजोंको कुर्सियां देनेसे साफ इंकार किया। मैंने बहुत समझाया-बुझाया, पर वह टस-स-मस न हुए। मेरी राय है कि अगर समझौता हो सकता है तो इनको कुर्सियां देकर भी कर लेना चाहिए, जिससे इनके द्वारा अपनेको सहायता मिल सके। पर महात्माजीका मत और है। वह आपसमें समझौता करके यह तय कर देना चाहते हैं कि अमुक प्रांतमें अंगरेजोंको—संयुक्त निर्वाचनसे—इतनी कुर्सियां मिला करें—कानूनन ऐसा होने देना उन्हें मंजूर नही। वह कहते हैं कि कांग्रेस लिखकर दे देगी और अंगरेजोंको उसके कौल-करार-पर ही रहना होगा। बेंथलने कहा कि बंगालमें जो लोग हमारे खून-के प्यासे हो रहे हैं, वे हमारे साथ ऐसी सहानुभूति कब दिखायेंगे, हमारे साथ ऐसा न्याय कब करेंगे ? पर महात्माजी अंततक यही कहते रहे कि हम अंगरेजोके साथ न्याय करना जरूर चाहते
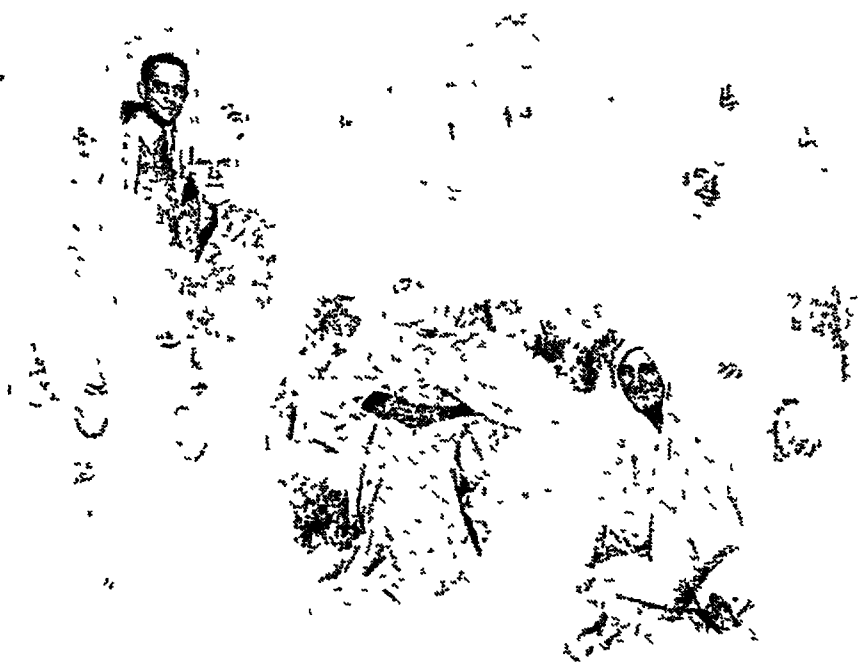
लंदन मे गाधीजी अपनी पार्टीके साथ
(मित्र-मडली के बीच)

सरोजनी नायडू : लेखक . गाधीजी : सर प्रभाशकर पट्टणी
(कान्फरेन्स मे जाते हुए)

है, पर हमारे बीच जो कुछ समझौता होगा, वह कानूनके घेरेके बाहर। महात्माजीका मौन-दिवस था, इसलिए वह अपनी राय कागजपर लिखकर ही जाहिर करते रहे। आज रातको फिर बातें होंगी। मुझे आशा नही होती कि अगरेजोंको महात्माजीकी बात कभी मंजूर होगी।

कैटो भी दौड-धूप कर रहा है। उसका लार्ड रीडिंगपर काफी प्रभाव है और उसने इनसे कहा कि यह क्या वाहियात काम हो रहा है! बात यह है कि सत्याग्रहकी सभावनाने सबको गहरी चिंतामें डाल दिया है। व्यापारियोको अपने व्यापारकी फिक्र है और वह जानते है कि अगर भारतवर्षने फिर उस राहपर कदम रखा, तो उनका व्यापार चौपट हो जायगा। उनकी बातोंका यहा के अधिकारियोंपर भी प्रभाव पड़ा है। कल होरने महात्माजी को बुलाकर उन्हे समझाना चाहा कि उसकी स्कीमको उन्होने पूरा नही समझा है—अर्थात् वह प्रांतीय स्वराजतक ही परिमित नही है। आज विधानपरिषद्में भी कुछ आशाजनक भाषण हुए। प्रधान मंत्रीने तो सप्रूको लिखा है कि मै कभी विश्वासघात न करूंगा, और अगर मेरी न चली, तो मै इस्तीफा दे दूगा।

इधर जनरल स्मट्स भी इस मामलेमे दिलचस्पी लेने लगा है। उसका महत्माजीका पुराना परिचय है। परिचय ही नहीं, दोनोंका दक्षिण अफ्रीकामे काफी सबंध रहा है। स्मट्सकी अंतर्राष्ट्रीय संसारमे अच्छी ख्याति है। आयरलैंडके साथ जो संधि हुई थी, उसमे इसने खासा भाग लिया था। जब वातों-वात महात्माजीने उससे कहा कि मै खाली हाथ लौटनेवाला हूं, तब वह वोला कि "इसपर कौन यकीन कर सकता है कि तुम्हे ये लोग खाली हाथ लौटने देगे? तुम भारतके हृदय-सम्राट् हो—इन्हें यह तो मालूम होना चाहिए कि तुम्हारे खाली हाथ लौटनेका वहां क्या नतीजा होगा।" फिर उसने हिंदू-मुस्लिम-प्रश्नकी

चर्चा की। महात्माजीने कहा कि फिलहाल और कुछ नहीं तो लखनऊका समझौता तो है। उन्होंने इस प्रश्नको हल करनेका रास्ता भी बताया। स्मट्स उनका प्रस्ताव लकर प्रधान मंत्रीके पास गया और दूसरे समय महात्माजीसे रिज होटेलमे, जहां वह मुसलमानोंसे बातें करने गये थे, मिला। उसने कहा कि मैकडोनल्ड पर इसका अच्छा प्रभाव पड़ा है और वह कहता था कि गांधी एक अद्‌भुत व्यक्ति है—उसका अभिप्राय समझना कठिन-से-कठिन काम है। स्मट्सने कहा कि ये लोग आपको नही जानते, इसीसे ऐसी बाते करते ह।

मेरी अपनी सहानुभूति प्रधान मत्रीके साथ है—मैंने महात्मा जीसे कहा भी कि आपकी भाषा सरल-से-सरल और साथ ही गूढ-से-गूढ होती है। शायद ही कोई दावा कर सकता हो कि उसने आपका यथार्थ भाव समझ लिया। खैर!

स्मट्सने सहायता पहुचानेका वचन दिया और उससे जो कुछ हो सकता है, वह कर रहा है। हमारे सम्राट् यहांसे प्रायः सौ मील-पर सेंड्रिघममे विराजमान है। स्मट्स वहां जा पहुंचा है और वहांसे मि० एंड्रूजके नाम परवाना आया है कि आप आकर मिले।

छत्तीस

१७ नवंबर, '३१

लंदन

कल रात बेंथल और कार फिर महात्माजीसे मिले। घंटेभर तक महात्माजी उन्हें फटकारते रहे। उन लोगोंने अपनी सफाई-में बार-बार यह कहा कि हमारा मुसलमानोंसे कोई समझौता—कोई इकरारनामा—नही है, हमने तो एक अर्जी-सी पेश की है कि हमें इतना मिलना चाहिए। पर महात्माजीको इससे कुछ भी संतोष नही हुआ। उन्होंने जो कुछ कहा, उसका

साराश यह है :

"तुम लोगोंपर मेरा जो विश्वास था, वह उठ गया। मुसलमानोसे, अछूतोसे तुम लोगोने जो समझौता कर लिया उससे मेरे दिलको ऐसा घाव लगा है, जो जल्दी भरनेका नही। तुम कहते हो कि तुम्हारी यह हरकत मुझे बुरी लगी है। पर इन शब्दों-से मेरा भाव पूरी तरह व्यक्त नही हो सकता। बुरा लगना तो एक साधारण-सी बात है—तुम्हारी करतूत तो वह दगा है, जिसमें तुमने मुझे अपने खंजरका शिकार बनाना चाहा है। तुम्हारे पास तो सभी साधन है, अगर तुम्हे अपने हक न मिलते तो हमसे खुल्लमखुल्ला लड लेते। मै बरावर यही कहता आया कि अगरेजों-का विश्वास करो, अब मै किस मुह तुम्हारी भलमनसाहतका इजहार कर सकता हूं? तुमने तो यह साबित कर दिया कि तुम्हारे आदर्श अभी बदले नही है—तुम ईस्ट इडिया कपनीकी ही राहपर चलनेवाले हो। कपनीने अपना प्रभुत्व जमानेके लिए कभी इसका साथ दिया, कभी उसका—कभी इसको उससे लड़ाया, कभी उसको इससे—और अंतमें सबको तग-तबाह करके अपना साम्राज्य कायम कर लिया। तुम भी ऐसी ही भेद-नीतिसे काम लेना चाहते हो। आज भारतवर्षमे जो जातियां जीवन-संग्राममे पिछड़ी हुई है, जिनके पास न दौलत है न दिमाग है, उनको अपने चगुलमें फंसाकर तुम सारे देशपर अपनी सत्ता कायम रखना चाहते हो। गनीमत है कि तुम अंगरेज-समाजके भी प्रतिनिधि नही हो। मै दावा करता हूं कि उनका सच्चा प्रतिनिधि मै हूं। बबईके नौजवान अगरेज तुम्हारी तरह नही है। यहां भी मुझे एक अंगरेज ऐसा नही मिला, जिसने तुम्हारी तारीफ की हो। अगर तुम इस समझौतेसे आप-ही-आप नही निकल जाते, तो या तो मै इसे चूर-चूर कर दूंगा या उसके लिए लड़ता हुआ मर मिटूंगा।"

अंगरेजोंने कहा कि हम तो निकल गये है, हमारा अब

उससे कोई लेना-देना नहीं है—क्योंकि हमने सबकुछ प्रधान मंत्रीपर छोड़ दिया है। पर गांधीजीको इन बातोसे संतोष न हो सका।

मुसलमानोने यह जाहिर कर रखा था कि हम लोग विधान-परिषद्की कार्यवाहीमे भाग न लेंगे, पर होरके समझानेपर राजी हो गये और परिषद्का काम फिर जारी है। पंडितजी सेनाके संबंधमे प्राय: एक घंटा बोले। पर संतोष न हुआ। कहते थे कि दो-तीन घंटे और बोलूंगा।

जमाल मोहम्मद साहबकी मुसलमानोंने बड़ी फजीहत की है। बेचारे डर गये हैं। उस दिन गांधीजीकी उपस्थितिमे मुसलमानोने उन्हे अपमानित किया। कहा कि तुम जासूस हो, इधरकी बाते उधर पहुंचाते हो। इकबाल बोला कि तुम्हारे पास पैसे हो गये, तो तुम अपने-आपको बहुत बड़ा आदमी समझने लगे। जमालसाहबकी जबान कब बंद रहनेवाली थी? जवाब दिया कि तुम्हे काफिया मिलाना आ गया तो तुम अपनेको कौमका सिरताज समझने लगे? जमालसाहब किसीसे दबनेवाले नहीं हैं। कोई हो तुर्की-बतुर्की जवाब दे देगे। उनमे यह दोष है कि मर्यादाका उल्लंघन कर जाते है और वाक्चातुरी न होनेके कारण लोगोंको अकारण ही चिढा देते हैं। कुछ लोग—उनके मित्रोंमें ही—उन्हें मगजचट कहने लगे है। मुसलमानोकी आंखों-में तो वह कांटेके समान चुभते है।

सैंतीस

२० नवंबर, '३१

लंदन

इस सप्ताह महात्माजी लायड जार्जसे उसके घरपर मिले। लायड जार्जने कहा कि आपको सत्याग्रह करना ही पड़ेगा—बिना लड़ाईके आपको स्वराज मिलनेवाला नही है। उसने मैकडानल्डको

कमजोर बताया। कहा कि टोरी दलके १५०-मेंबर भी मैकडानल्ड का साथ देनेवाले हो, तो वह अपनी स्कीम पास करा सकता है।

मैकडानल्डकी कमजोरीकी शिकायत और लोगोसे भी सुननेमे आई है। इस सप्ताह लेबर-पार्टीके प्रधान मेंबर स्मिथ और लारेंस मेरे यहां खाना खाने आये थे। अगले सप्ताह वेजउड बेन और दूसरे लोग भी आनेवाले है। स्मिथ पिछली लेबर-मिनिस्टरीमे रह चुका है, और लारेंस अर्थ-विभागका पार्लमेंटरी मंत्री था। स्मिथसे बड़ी देरतक बाते होती रही, वह बराबर नोट लेता गया। मैंने उसे सारी परिस्थिति समझाई और बताया कि अगर झगड़ा चला तो खजानेमे टोटा बना ही रहेगा और इग्लैडको यहांसे पैसे भेजकर भारतवर्षका शासन करना पड़ेगा। उसको यह बात मार्केकी जंची और उसने इस संबंधमे कई प्रश्न किये। अतमे कहा कि "पारसाल गांधीजीने यहां न आकर गलती की। इस साल टोरी दलवाले गलती कर रहे है। मैकडानल्ड कमजोर आदमी है, वह इस प्रश्नके लिए अपना सिर देनेको तैयार नही है।" फिर उसनेपूछा— पर अगर वह इतनी हिम्मत करे तो क्या गांधीजी अपना सिर देनेको तैयार होगे? मैंने कहा कि इस प्रश्नका उत्तर तो यह देखकर ही दिया जा सकता है कि हमें मिलता क्या है। पर अगर इतना भी हो जाय कि गांधीजी विरोध न करे तो बहुत है—और यह संभव है कि सोलह आनेके बजाय बारह आने मिलनेसे गाधीजी विरोध न करेगे। स्मिथने कहा कि "इस मन्त्रिमडलसे जो कुछ मिल जाय, ले लो—शीघ्र ही इसका पतन होगा और हम लोगोंका फिर बोलबाला होगा। तब तुम्हें बहुत-कुछ मिलनेकी उम्मीद रहेगी।"

अड़तीस

२७ नवंबर, '३१
लंदन

आज विधान-परिषद्की अंतिम बैठक है। विधान बननेमें तो न जाने अभी कितनी देर है, पर इसके नामपर जो नाटक चल

रहा था, वह अब पूरा हो चला। साथ ही बर्मा-गोलमेज-कान्फ्रेंस नामका दूसरा तमाशा शुरू हो रहा है।

इस सप्ताह महात्माजी प्रधान मन्त्रीसे फिर मिले। उन्होंने कहा कि प्रांतीय स्वराज मैं लेनेको तैयार हूं—बशर्ते कि वह मेरे मनकी चीज हो। पर मेरे प्रांतीय स्वराजमें न तो बंगालके राजनैतिक कैदी जेलखानोंमें पड़े सड़ते रहेंगे, न वहां फौजकी ही कोई जरूरत रह जायगी। महात्माजी तो मैकडानल्डको मूर्ख और होरको समझदार बताते है। विधान-परिषद्के अध्यक्ष लार्ड सैंकीका उनपर बहुत अच्छा प्रभाव नही पडा है।

स्मिथ और लारेंससे बातचीत हुई। कहते थे कि "मामला बिगड़ गया। हिंदू-मुस्लिम-समझौता न होनेका अनुचित लाभ उठाया जा रहा है। साथ ही स्वीकार करना होगा कि इसकी गुंजाइश भी है।" मैंने बेनसे कहा कि अगर सरकार पूरी तस्वीर हमारे सामने रख दे कि अगर तुम एक हो जाओ तो तुम्हे इतना मिल सकता है, तो समझौता आसानीसे हो जाय। बेन बोला कि "इस कान्फ्रेंसको किसी तरह जिंदा रखना चाहिए। चाहे यह यहां काम करे चाहे वहां, मगर इसका काम जारी रहना चाहिए।"

रात लारेंस और बेन मेरे साथ भोजन करने आये थे। देर तक बातें होती रहीं। बेन दिलका साफ आदमी है। उसने कहा कि "इंपीरियल प्रिफरेंस दिलानेके लिए मै जिम्मेदार नही हूं। मैंने इस मामलेमे कुछ नहीं किया।" एक्सचेंजके बारेमें उससे मालूम हुआ कि शुष्टर जब यहां आया था तब उसने सिफारिश की थी कि १-६ छोड़ दिया जाय। पर बेन ऐसे आर्थिक प्रश्नोंके संबंधमे कम—बहुत कम—जानकारी रखता है, इसलिए उसने इस मामलेमे शुष्टरसे खुद बाते न कर सर हेनरी स्ट्राकोश और किशके सुपुर्द कर दिया। मै उसको आर्थिक परिस्थिति समझाता रहा। उसने कहा कि कुछ होता-जाता नजर नही आता। मैंने कहा कि अगर मैकडानल्ड महात्माजीको बुलावे और दोनोंकी

दिल खोलकर बाते हों, तो शायद कोई रास्ता निकल आवे। बेनने कहा कि मैकडानल्ड ४-५ महीनेसे ज्यादा ठहर नही सकता। टोरी दलवाले उसको और बाल्डविन इन दोनोको ही धता बता देगे। उसने पूछा कि जिन लोगोने हिदुस्तानमे रुपया लगा रखा है, उनको कैसे संतुष्ट किया जाय ? मैने कहा कि हम "न्यायसे विमुख होना नही चाहते। पर अगर हमे संतोष नही होता तो क्रांति किसीके रोके रुक नही सकती। उस हालतमे, जिन लोगोने रुपया लगा रखा है, उनके लिए और भी खतरा है। हमारे ऊपर तुम्हारे कर्जका बोझ जरूर है, पर आखिर उसे चुकानेका रास्ता क्या है ? मान लो कि हम एक्सचेज घटाकर अपना एक्सपोर्ट बढाते है, उस हालतमे भी तुम्हारे व्यापारको धक्का लगता है। पर असलियत तो यह है कि ससारके इतिहासमे इस तरहका कर्ज कभी किसी देशने चुकाया नही है। बात असंभव-सी है। तुम्हारी नीति ऐसी होनी चाहिए कि हमसे असल तो नही, पर सूद बराबर अदा होता जाय।" बेनने कहा कि यहांवालोको यह मालूम हो कि असलियत यह है तो वह और भी सख्तीसे पेश आयेगे। मैने कहा, "पर हमने तो स्वतत्र होनेका सकल्प कर लिया है—हम कब चुपचाप बैठनेवाले है !" बेन बोला—तुम्हारा कहना ठीक है, पर व्यापारी बडे जडबुद्धि होते है। मैने कहा कि अगर सत्याग्रह-सग्राम फिर छिडा तो यह नौबत आ जायगी कि शासनके लिए इंग्लैडको यहासे पैसे भेजने होगे। बेन बोला—"ठीक है, पर अगर एक डिस्ट्रिक्ट अफसरके मनोविज्ञानको देखो, तो उससे यह आशा करना व्यर्थ है कि वह इस तर्कका कायल होगा। वह कभी नही सोच सकता कि मेरे कारनामोका यह असर होगा कि सरकारके खजानेमे टोटा रहेगा और यह बात खुद मेरे हकमे बुरी होगी। दुनिया अधी है, लोग बातोपर पूरा विचार नही करते—इसीसे तो इतनी खराबी है।"

तो हालत यह है कि कान्फ्रेससे कुछ भी नतीजा नही निकला। पर यह बिल्कुल टूट गई, यह भी नही कहा जा सकता। बंगालमे

और अन्यत्र भी दमन खूब जोरशोरसे होनेवाला है। साथ ही समझौतेकी बात भी जारी रहेगी। कैलासबाबू कहा करते थे कि अंगरेजका एक हाथ पांवपर और एक हाथ गर्दनपर रहता है। अगर उसने देखा कि आपमे कुछ दम नही तो झट गला दबा देता है, पर अगर उसे मालूम हुआ कि आपके लड़ने-झगड़नेमें उसे लेने-के-देने पड़ेंगे, तो उसे पाव छूते देर नही लगती। उस अवस्थामें वह यही कहता है कि मै तो पहलेसे ही आपके पांव चूमनेको लालायित था। यही दशा कुछ समय तक रहेगी। अगर उपद्रव बढा तो समझौता बहुत शीघ्र हो जायगा, नही तो देने-दिलानेकी बातको खटाईमें डाल देंगे।

इस सप्ताह कुछ भाषण मार्केके हुए—नरम दलवाले भी जोश-खरोश, सरगर्मीसे बोले। महात्माजीने कहा कि गोले-बारूद-से हम डरनेवाले नही हैं; हमारे बच्चे भी उन्हें पटाखे समझने लगे है। सप्रू, जयकर, शास्त्री, मुदलियार—सबने एक स्वरसे प्रातीय स्वराजसे आगे न बढ़नेका विरोध किया। मुसलमानोंकी ओरसे भी कहा गया कि यह पर्याप्त न होगा। मुदलियार मद्रास प्रांतके अब्राह्मण दलका प्रतिनिधि है। बहुत समझदार आदमी जान पड़ता है। लार्ड सैंकी तो कल आपेसे बाहर हो गया। वेनको बच्चे-की तरह डांटकर कहा कि जबान मत खोलो। जब बेन न माना, तव कहने लगा कि यह हालत रही तो मै कुर्सी छोड़ दूंगा। दर-असल बात यह है कि इधर परिस्थितिमें जो कुछ अंतर पड़ा है, उसका श्रेय बेन और लीज स्मिथको ही है। सरकारकी चालको ये बखूबी समझते है और अगर ये न होते तो होर और सैंकीने कान्फ्रेंसको शायद चुपचाप दफना दिया होता। सैंकीका बेनसे चिढ़ना स्वाभाविक है।

भाईजीका एक तार महात्माजीके नाम आया है कि आप मुसलमानोंके साथ जैसा मुनासिब समझे, समझौता कर ले। गांधीजी मुझसे कहते थे कि इसका समय तो जाता रहा। मैंने

कहा कि इस समय भी आपको अगर हम १५ हिंदू लिखकर दे दें, तो आप क्यों न समझौता कर लें? महात्माजी बोले कि "जबतक मालवीयजी और डाक्टर मुजे लिखकर नही दे देते, तबतक मै नही कर सकता। यहां उनके दस्तखतके बिना मै कुछ नही कर सकता।"

उन्तालीस

४ दिसंबर, '३१
लंदन

कान्फ्रेंसके नाटकका आखिरी पर्दा गिर चुका। लोग एक-एक कर लंदन छोड़ रहे है। महात्माजी कल प्रस्थान करते है। पंडितजीका प्रोग्राम अनिश्चित है। अमेरिका जानेका कुछ विचार था, मगर उन्होंने तय किया है कि एक सप्ताह यहां और बिताकर इटली होते हुए हिंदुस्तान जायगे।

पूरी कान्फ्रेंस शनिवार, सोमवार, मंगलवार तीन दिन बैठी। पहले दिनकी कान्फ्रेसमें एक भी उल्लेखनीय बात नही हुई। दोस्त-दुश्मन सभी एक ही भाषण सुननेको उत्सुक थे और वह भाषण सोमवारको—मौन टूटनेपर—होनेवाला था। दोनो दिन अधिवेशन साढ़े दस बजे दिनको आरभ हुआ, पर सोमवारकी कार्यवाही २॥ बजे रातको पूरी हुई। शास्त्री-जैसे सुवक्ता भी भ्रममे पड़ गये और थोड़ी देरके लिए यह भूल गये कि दूसरा दिन शुरू हो चुका। उनके मुहसे भी 'आज' की जगह 'कल' निकल ही गया। सोमवारको पहले तो १०॥ से ७॥ बजे तक, फिर ९॥ से प्राय. २। बजे तक कान्फ्रेंस बैठी। मन्त्रिमडलको प्रधान मत्री द्वारा होनेवाले वक्तव्यपर विचार करना था, इसलिए मैकडानल्ड और होरको ५ बजे ही उठकर जाना पड़ा। फिर रातकी बैठकमें आये; वल्कि प्रधान मंत्रीकी प्रार्थनासे कान्फ्रेस कुछ देरके लिए स्थगित की गई। बात यह थी कि गांधीजीका भाषण होनेवाला

था और प्रधान मंत्रीके पहुंचनेमें कुछ मिनिटोंकी देर थी, पर वह उसे पूरा-का-पूरा सुनना चाहता था।

गांधीजीका भाषण लाजवाब हुआ। ऐसे मौकोंपर उनकी एक-एक बात मर्मस्पर्शी हुआ करती है। सन्नाटा छा रहा था और सारी सभा चित्रित-सी जान पडती थी। प्राय: ७० मिनिट तक बोलते रहे। उनके बाद पंडितजी उठे। मुझे नींद सताने लगी थी और सिरमें चक्कर आ रहे थे। इसलिए बीच हीमें उठकर चला आया। दूसरे दिन पंडितजी कहते थे कि गांधीजीके वैसे भाषणके बाद कुछ कहना बाकी नहीं रह गया था—कुछ बोलनेकी इच्छा भी नही थी—पर नाम दे चुका था, इसलिए कुछ कहना ही पड़ा। यह भी सुना कि अंतिम भाषण शास्त्रीका था और वह अत्यंत निंदनीय था। लोगोंको बहुत बुरा लगा—मुझे जो कुछ कहना था, आज रातका अधिवेशन आरंभ होनेके कुछ ही समय बाद, कह चुका था। मै समझता हूं कि मैंने ही यह कहनेका साहस या दुस्साहस किया कि कान्फ्रेंसको किसी प्रकारकी सफलता प्राप्त नही हुई—इसमें आगे बढना तो दर-किनार हम और पीछे हट गये। कान्फ्रेंसके पुजारियोंको यह बेसुरा लगा। कुछ तो बेतरह चिढ़े। पर दूसरोंसे—खासकर गांधीजीसे—मुझे बधाइयां मिलीं। दुश्मनके दलमेंसे भी एकाध अंगरेज बधाई दे गये। पर लेबर-पार्टीवाले परिचित होते हुए भी खामोश रहे। मेरा मुख्य विषय यह था कि जबतक हमारा बोझ हलका नही किया जाता—और इसके लिए काफी गुंजाइश है, क्यों-कि इंग्लेंड हमारे साथ बराबर अन्याय करता आया है—तबतक संरक्षणोंका बंधन ढीला या बर्दाश्त करने लायक हो ही नहीं सकता।

दूसरे दिनकी बैठक ११॥ बजे शुरू हुई। अच्छी भीड़ थी, पत्र-प्रतिनिधियोंको भी बैठनेकी इजाजत मिल गई थी। गांधीजी-को प्रधान मन्त्रीको धन्यवाद देनेका काम सौंपा गया। यह उन्हें

बड़ा ही अच्छा मौका मिला, और उन्होंने उसके वक्तव्यके संबंधमे अपना भाव बड़ी खूबीसे प्रकट कर दिया। जिस समय गाधीजी अपना रुख जाहिर कर रहे थे उस समय कुछ मेबरोकी हालत देखते ही बनती थी। सभा-भग होनेपर पडितजीके दफ्तर—११ किग स्ट्रीट—मे बहुत-से लोग इकट्ठे हुए। गाधीजी भी थे। प्रधान मत्रीके भाषणकी समीक्षा-परीक्षा होने लगी। कुछ मेबरों-की राय वही थी, जो बराबरसे है—अर्थात् बहुत-कुछ मिल गया। शास्त्रीने उस रातको भाषण तो निकम्मा दिया, पर उसमे ईमान-दारी है, इसलिए असंतुष्ट-सा ही था। गांधीजीके विचारमे जरा भी परिवर्तन नही हुआ। पंडितजी डांवाडोल थे। मुझे यह स्पष्ट दीख रहा है कि वक्तव्यसे कुछ बनने-बिगड़नेवाला नही है। सब-कुछ इस बातपर निर्भर होगा कि काग्रेसकी लड़नेकी शक्ति कितनी है।

होरसे जब गाधीजी पीछे मिले तब उसने उनसे कहा कि "मै तुम्हारी मित्रता चाहता हूं। बगाल आर्डिनेसके लिए मै जिम्मेदार नही हूं—मै उसे पसंद भी नही करता; पर मुझे लाचार होकर मंजूरी देनी पड़ी। तुम वहां जाकर परिस्थिति संभालनेकी कोशिश करो। नये गवर्नरके संबंधमे जो बाते कही जा रही है, वे निरा-धार है। वह बहुत अच्छा आदमी है।" सबसे बडी बात होरने यह कही कि सरक्षणोके विषयमे यहा जो कुछ तय हुआ है वह आखिरी फैसला नही है—सारा प्रश्न विचारके लिए खुला हुआ है। यह सतोषजनक है। होरने महात्माजीसे यह भी कहा कि हिंदू-मुस्लिम-प्रश्नको किसी तरह आपसमे हल कर लो—बहुत कुछ उसीपर निर्भर है।

लार्ड लोथियनने महात्माजीसे कहा कि लड़नेसे तुम्हारा भला जरूर है, पर ऐसी लड़ाई न करना कि हमारा सत्यानाश हो जाय। गांधीजीने कहा, "मै इसका ध्यान रखूगा।" उसने कहा कि "माड-रेटोंके लिए हमारे दिलमे कोई इज्जत नही है। हमे तो तीनसे

'समझौता करना है—तुमसे, मुसलमानोंसे और अ-ब्राह्मणदलके नेता पात्रोसे।" गांधीजीने कहा कि "दोकी बात तो ठीक है—मगर पात्रोसे समझौता करनेकी बात निस्सार है, इसे छोड़ो।"

रोड्स कहता था कि बिड़ला! जब तुम्हें कभी नौकरी करनेकी जरूरत हो तो सर हेनरी स्ट्राकोशके पास जाना, वह बड़ी अच्छी सर्टिफिकेट देगा। मैंने पूछा कि वह मेरे विषयमे क्या कहता था? रोड्स बोला, "मुझसे मत पूछो। तुम अपनी प्रशंसा सुनकर असमंजसमे पड़ जाओगे!"

परिचय

रामेश्वर—श्री रामेश्वरदास बिडला (लेखकके बडे भाई)
ब्रजमोहन—श्री ब्रजमोहन बिडला (लेखकके छोटे भाई)
महादेव—स्व० श्री महादेव देसाई
देवदास—श्री देवदास गाधी (महात्मा गाधीके कनिष्ठ पुत्र)
गोविंदजी—श्री गोविंद मालवीय (पं० मदनमोहन मालवीयके कनिष्ठ पुत्र)
पारसनाथजी—श्री पारसनाथ सिंह (लेखकके सेक्रेटरी)
मिस लेस्टर—कुमारी म्युरिल लेस्टर (लेखिका, समाज-सेविका)
एमर्सन—(सर) एच० डब्ल्यू० एमर्सन (उस समय होम सेक्रटरी थे, बादमे पजावके गवर्नर हुए)
क्लार्क—सर रेजीनाल्ड क्लार्क (कलकत्तेके भूतपूर्व पुलिस कमिश्नर, व्यवसायी)
शुष्टर—सर जार्ज शुष्टर (भारत-सरकारके तत्कालीन अर्थसदस्य)
अटल—पडित अमरनाथ अटल (जयपुर दरबारके अर्थमत्री और प्रतिनिधि)
लोथियन—स्व० लार्ड लोथियन (अमेरिकाके तत्कालीन ब्रिटिश राजदूत भारतीय राजनीतिके अच्छे ज्ञाता)
बेन—श्री वेजवुड बेन (मजदूर-मन्त्रिमंडलमे भारत-मत्री, पार्लमेंटके पुराने सदस्य, सुलेखक तथा सुवक्ता)
स्ट्राकोश—स्व० सर हेनरी स्ट्राकोश (अर्थ-शास्त्री, भारत-मत्रीके सलाहकार, व्यवसायी)
बेंथल—सर एडवर्ड बेथल (कलकत्तेकी बर्ड कपनीके 'बडा साहब', ब्रिटिश व्यापारियोके प्रतिनिधि)
इंचकेप—स्व० लार्ड इंचकेप (किसी जमानेमे कलकत्तेके मि० जेम्स मैके, पी० एण्ड ओ० नामक जगत्प्रसिद्ध जहाजी कंपनीके सर्वेसर्वा)
कार—सर ह्यूबर्ट कार (वेथलके साथ भारतके ब्रिटिश व्यापारियोके प्रतिनिधि)
कैटो—लार्ड कैटो (कलकत्ते की एण्ड्रू यूल कपनीसे सबध रखनेवाले प्रसिद्ध अगरेज व्यवसायी)

के० टी० शाह तथा प्रो० जोशी—बंबईके अर्थशास्त्री

रंगास्वामी अय्यंगार—(अब स्वर्गीय) (मद्रासके 'हिंदू' नामक पत्रके सपादक)

ब्लैकेट—स्व० सर वेसिल ब्लैकेट (शुष्टरसे पहले भारत-सरकारके अर्थ-सदस्य)

हर्बर्ट सैमुयल—सर हर्बर्ट सैमुयल, जिन्हे बादमें लार्डकी उपाधि मिली। (प्रसिद्ध यहूदी विद्वान् और राजनीतिज्ञ)

शफी—स्व० सर मुहम्मद शफी (पंजाबके मुस्लिम नेता जो भारत-सरकारके सदस्य रह चुके थे।)

कार्बेट—सर ज्योफ्रे कार्बेट (सिविलियन जो आर० टी० सी० के सयुक्त मंत्री थे)

नरेंद्रनाथ—राजा नरेंद्रनाथ (भूतपूर्व सरकारी कर्मचारी, पंजाब हिंदू महासभाके नेता)

किश—(इंडिया आफिसके अर्थमंत्री)

डा० दत्त—स्व० डा० एस० के० दत्त (पंजाबके प्रसिद्ध ईसाई अध्यापक और नेता)

इकबाल—स्वर्गीय सर मुहम्मद इकबाल (महाकवि)

स्मिथ—प्रो० लीज स्मिथ (पार्लमेंटके लेबर-मेंबर, अर्थशास्त्री)

लारेंस—मि० पेथिक लारेंस (पार्लमेंटके लेबर-मेबर, अर्थशास्त्री)

कैलासबाबू—स्व० सर कैलासचंद्र बोस (किसी जमानेमे कलकत्तेके सुप्रसिद्ध डाक्टर)

मुदलियार—सर रामस्वामी मुदलियार (इस समय भारत-सरकारके सदस्य, पहले मद्रासकी 'जस्टिस-पार्टी' के एक नेता)

भाईजी—श्री जुगलकिशोर विड़ला (लेखकके सबसे बड़े भाई)

पात्रो—सर परशुराम पात्रो (मद्रासमें कांग्रेस-विरोधी दलके एक नेता)

रोड्स—सर कैंपबेल रोड्स (किसी जमानेमें कलकत्तेके एक 'बडा साहब', डायरी-लेखकके साथ इंडियन फिस्कल कमीशनके सदस्य)

'मंडल' का गांधीजी-संबंधी संस्मरण-साहित्य

१. राष्ट्रपिता (जवाहरलाल नेहरू) २.००

नेहरूजी द्वारा लिखी जीवनी और सिद्धात व्याख्या।

२. गांधीजी को श्रद्धांजलि (विनोबा) ०.३७

गाधीजी के निधन के बाद तेरह दिन के प्रवचन। उत्तम श्रद्धाजलि।

३. इंगलैण्ड में गांधीजी (महादेव देसाई) २.००

गाधीजी की लदन-यात्रा का रोचक, शिक्षाप्रद एव प्रामाणिक वर्णन।

४. गांधी की कहानी (लुई फिशर) सजिल्द ४.००

यह गाधीजी की सम्पूर्ण जीवनी है। इसे 'आत्म-कथा' की पूरक कह सकते हैं।

५. गांधी-अभिनन्दन-ग्रंथ (सम्पा० सर्वपल्ली राधाकृष्णन) सजिल्द ४.००

गाधीजी के व्यक्तित्व तथा सिद्धान्तो पर विभिन्न विद्वानो एवं चिन्तको के विचार।

६. गांधी-श्रद्धांजलि-ग्रंथ (सम्पा० सर्वपल्ली राधाकृष्णन्) ३.००

देश-विदेश के विद्वानो और लोक-नेताओ द्वारा राष्ट्रपिता को उनके वलिदान पर अर्पित की गई श्रद्धाजलिया।

७. गांधीजी की छत्रछाया में (बिड़ला) १.५० सजिल्द २.५०

बिडलाजी के गाधीजी-सम्बन्धी सस्मरण और अनेक विषयो पर गाधीजी के लिखे पत्र जो स्वतन्त्रता सग्राम और समाजसेवा के अनेक पहलुओ पर प्रकाश डालते है।

८. जीवन-प्रभात (प्रभुदास गांधी) सजिल्द ५.००

गाधी-परिवार तथा दक्षिण अफ्रीका में गाधीजी के प्रयोगो की मौलिक रोचक तथा शिक्षाप्रद कहानी।

९. डायरी के पन्ने (घनश्यामदास बिड़ला) १.००

दूसरी गोलमेज परिषद् (लन्दन) के अवसर पर महात्माजी के साथ के रोचक व तथ्यपूर्ण संस्मरण।

१०. बा, बापू और भाई (देवदास गांधी) ०.५०

पूज्य कस्तूरबा, गाधीजी व हरिलालभाई के हृदयस्पर्शी संस्मरण।

११. बापू (घनश्यामदास बिड़ला) २.००

बापू के सम्पर्क के अनेक मधुर संस्मरण।

१२. बापू की कारावास कहानी (सुशीला नैयर) सजिल्द १०.००

गाधीजी तथा उनके संगी-साथियों के आगाखा महल मे इक्कीस मास के बन्दी-जीवन का हृदयस्पर्शी वृत्तात—शिक्षाप्रद, उपन्यास-सा रोचक।

१३. बापू के आश्रम में (हरिभाऊ उपाध्याय) १.००

गाधीजी के संसर्ग की छोटी-छोटी, पर महान् घटनाओं का वर्णन—ऐसी घटनाएं जो जीवन पर गहरा असर डालती है।

१४. श्रद्धाकण (वियोगी हरि) ०.५०

काव्यभाषा मे राष्ट्रपिता को भावपूर्ण श्रद्धांजलि।

सस्ता साहित्य मंडल,
नई दिल्ली